Vol.22, Issue 12 | Annual Subscription ₹480

@NewsRotary
/RotaryNewsIndia

अक्टूबर 2023

# रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

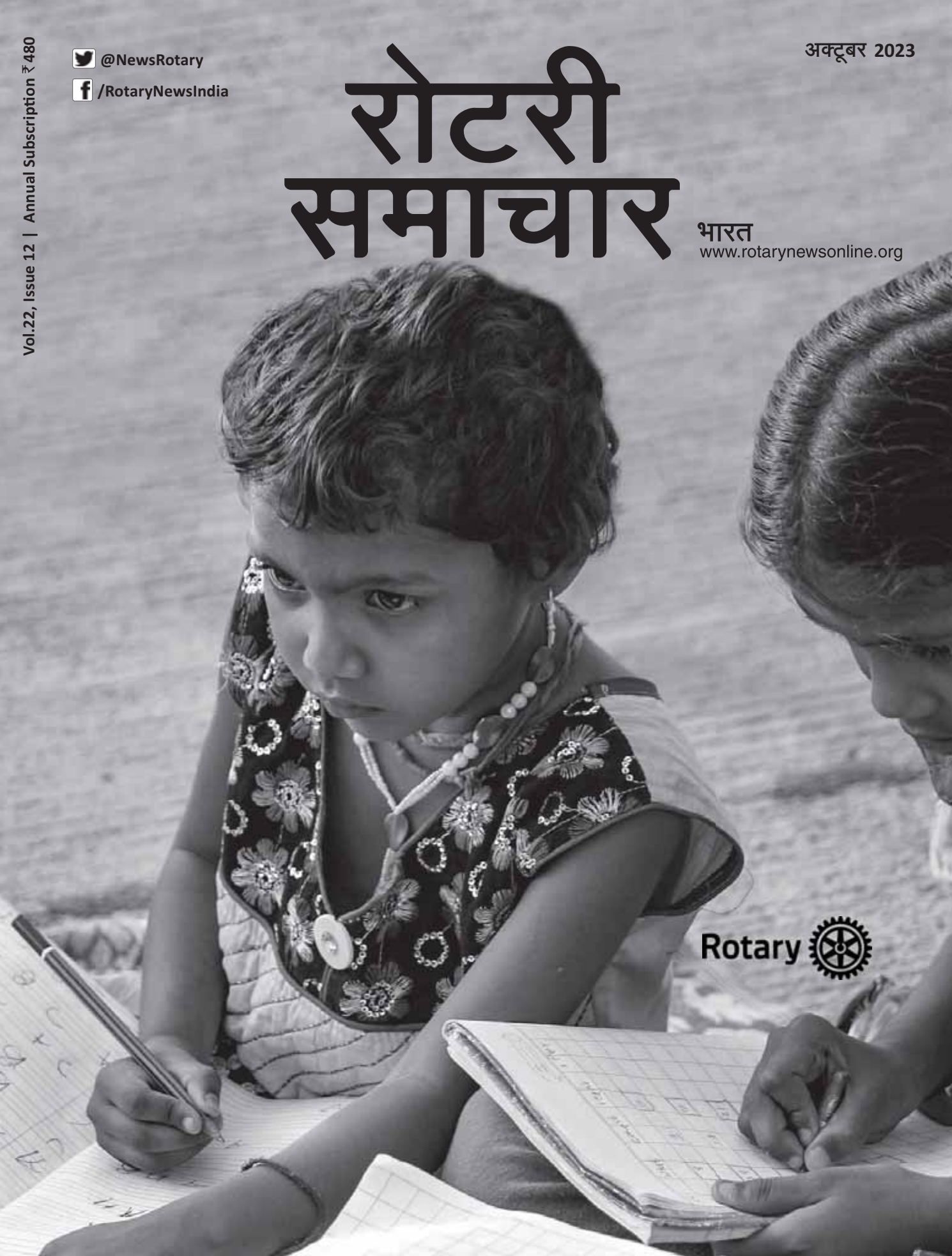

Rotary

ADVT.

A Project by
Rotary Club of Virudhunagar
RI Dist-3212

CREATE HOPE in the WORLD



RYLA
Be an Entrepreneur
Certification in Entrepreneurship

Rotary

## Who Can Participate in RYLA?

Rotaractors | Third & Fourth Year UG Students
First & Second Year PG Students
Graduates & Post Graduates between ages 20 and 28

# A Comprehensive ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT WORKSHOP in 3500 Minutes

To build and groom young Entrepreneurs

Only **32** Participants Per Batch

On Board **876** Through 28 Editions

STOP searching jobs
START producing jobs

- Formula to Choose the Right Business
- Procuring Investments at Ease
- Productive People Management
- Digital & Organic Marketing Strategies
- Profit Making Techniques
- Showstopper Business Plans

**The Top 2 Performers of Each Batch FLY TO SINGAPORE* (Industrial Visit) Free of Cost.**

- No. of Participants, Who have Started their own Enterprises-146
- Fly to Singapore Winners-56

BUSINESS PLAN | POWER SPEAKERS | CONTINUOUS HANDHOLDING | INVESTORS MEET | LOT MORE SURPRISES

**UPCOMING BATCH DATES**

**Batch 30 : 20th, 21st & 22nd OCT, 2023**
Batch 31 : 17th, 18th & 19th NOV, 2023
Batch 32 : 15th, 16th & 17th DEC, 2023

**INVESTMENT** - Rs.2500 Only
(Incl. Accommodation / Food / T-Shirt / Certification / E-Book / CREA Programs)

**VENUE**
Hotel St. Antony's Residency
Sipcot Industrial Growth Center
Gangaikondan, Tamilnadu

**CONTACT FOR REGISTRATION: 94431 66650 / 94433 67248**

PG | IDHAYAM PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS | Srinidhi Building Sustainable Relationship | K.V. Ramaswamy MEMORIAL TRUST

# विषयसूची


12
खुले आस्मान के नीचे शिक्षा के ज़रिये जहां जादू होता है

22
असम में चायपत्ती चुनने वालों की आंखों की जाँच

24
समावेशी विद्यालयों में विशिष्ट बच्चों की सहायता

30
जब रोटरी ने एक शहर को परिवर्तित किया

38
प्रेम, पत्र और प्रतिरोध

42
ग्रामीण किशोरियों की शिक्षा में सहायता

48
इरुला परिवारों के लिए मॉडल टाउनशिप

52
मुंबई रोटरेक्टर्स का महिला तस्करी के विरुद्ध अभियान

60
''स्वस्थ भारत'' के लिए कुट्टनाड से लद्दाख तक

62
कूड़ा- रहित साहसिक सफर

68
लक्ष्मीकांत प्यारेलाल: संगीतकार सपनों के

74
अनोखा बंधन

76
तंदुरुस्ती की तलाश

# आपके पत्र

## असाधारण परियोजना, कवरेज

रोटरी क्लब नीलगिरी की स्कूल और उसके आसपास के क्षेत्रों का कायाकल्प करने की पहल सराहनीय है। ऐसी परियोजनाएं रोटरी क्लबों के लिए प्रेरणास्रोत हैं जो उन्हें इस तरह की परियोजनाएं करने हेतु प्रोत्साहित करती हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि 1967 में जिस भूमि पर स्कूल की स्थापना की गई थी वो एक रोटेरियन द्वारा ही दान की गई थी। हम एयर कमोडोर संजय खन्ना और समर्पित क्लब टीम की इस पहल की सराहना करते हैं।

*कर्नल विजयकुमार*
*रोटरी क्लब अलेप्पी ग्रेटर*
*मंडल 3211*

बेट्टाटी स्कूल में ग्रामीण विद्यार्थियों की मदद करके रोटरी क्लब नीलगिरी ने एक अद्भुत परियोजना की है। लेकिन स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम है और हमारे रोटरी मित्रों

को अधिक छात्रों को नामांकित करने की कोशिश करना चाहिए।

*एस मोहन*
*रोटरी क्लब मदुरै वेस्ट*
*मंडल 3000*

सितंबर अंक के कवर फोटो में अपनी प्रधानाध्यापिका के साथ विद्यार्थियों के प्रसन्न चेहरे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। एक आदर्श स्कूल के निर्माण के लिए रोटरी क्लब नीलगिरी को बधाई। रो ई अध्यक्ष गॉर्डन मैकनली का शांति पर संदेश दिलचस्प था। संपादक का संदेश प्रभावशाली और साक्षरता माह के लिए उपयुक्त है। रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी, टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष बेरी रेसिन और उपाध्यक्ष भरत पांड्या के संदेश शानदार थे।

*रोटरी क्लब बिलासपुर महिला कैदियों के उदास जीवन में खुशहाली लाता हैं, परोपकार की एक यात्रा, रोटरी डाक टिकटों के एक उत्साही संग्रहकर्ता, रोटेरियनों में मानवीय संवेदना होनी चाहिए, मैमोग्राफी बस को हरी झंडी, रोटरी भावना को नमन और मुंबई का एक रोटरेक्ट क्लब बड़े सपने देखता है, मंडल गतिविधियाँ* और स्वास्थ्य संबंधी लेख जैसे अन्य सभी लेख दिलचस्प हैं।

*फिलिप मुलप्पोने एम टी*
*रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सब अर्बन*
*मंडल 3211*

### रोटरी भावना का प्रदर्शन

स्वर्गीय बिनोता बेनर्जी के वापी में अपने घर में रोटरी की कलाकृतियों, पुस्तकों, मूर्तियों आदि को प्रदर्शित करने हेतु एक संग्रहालय के निर्माण के सपने को पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी ने साकार किया। हम पीआरआईपी बेनर्जी से साक्षरता पर एक गैलरी स्थापित करने का अनुरोध करते हैं।

*वी आर टी दोराईराजा*
*रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली - मंडल 3000*

*रोटरी न्यूज* को इतनी सारी सेवा परियोजनाओं से भरा देखना असामान्य है, जैसा कि अगस्त अंक में हुआ जहाँ 80 प्रतिशत पृष्ठ सेवा परियोजनाओं को समर्पित थे। आमतौर पर 50 प्रतिशत पृष्ठों में ही रो ई या रोटरी भारत से जुड़े विशाल कार्यक्रम मौजूद होते हैं। आंगनवाड़ी लेख में रोटेरियनों को ''राजनेताओं से दूर रहने'' की सलाह देने वाले विधायक सही हैं।

*गोपालकृष्णन*
*नटराजन, डीआरएफसी - मंडल 3212*

₹4 करोड़ की लागत से 214 आंगनवाड़ियों के नवीनीकरण के लिए बेंगलुरु क्लब के प्रयास रोटरी के कार्य के उज्ज्वल उदाहरण है जो उनकी प्रतिबद्धता और समर्पित व्यक्तियों के एक समूह द्वारा अपने समुदाय में किए जा सकने वाले प्रभाव को दर्शाता है।

*अजय जैन, रोटरी क्लब अहमदगढ़ - मंडल 3090*

युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए उनसे जुड़ने का पीआरआईपी बेनर्जी का आह्वान केवल एक अमूर्त विचार नहीं बल्कि एक ठोस कदम है। अपनी सामुदायिक परियोजनाओं के माध्यम से रोटरी युवा नेताओं को सशक्त बनाकर उनके भविष्य को आकार दे रहा है।

*डॉ रवि शर्मा*
*रोटरी क्लब अहमदगढ़ - मंडल 3090*

मानसिक स्वास्थ्य पर रो ई अध्यक्ष का संदेश सार्थक है। 200 से अधिक आंगनवाड़ियों के नवीनीकरण के लिए रोटरी क्लब बैंगलोर इंदिरानगर को बधाई। इसके अलावा पीआरआईपी शेखर मेहता द्वारा *एक छोटी मैराथन जीतना* और मस्तिष्क की सफाई जैसे लेख काफी प्रेरणादायक थे।

*जैकब मैथ्यू कवलम,*
*रोटरी क्लब एरुमेली - मंडल 3211*

# आपके पत्र

अगस्त अंक में पीआरआईपी बेनर्जी ने रोटेरियनों से युवाओं के साथ जुड़ने का आग्रह किया और रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश ने कहा कि गवर्नर के रूप में एक सफल कार्यकाल के लिए ''मौन और मुस्कान'' की आवश्यकता होती है। यह सलाह अनेक चुनौतियों का सामना करने वाले क्लब अध्यक्षों पर भी लागू होती है।

*मुनियप्पा डी पी*
*रोटरी क्लब केजीएफ प्राइम - मंडल 3191*

## एक विचारोत्तेजक संपादन

संपादक रशीदा का संदेश (अगस्त) हमारे जोनों में इस वर्ष सात महिला गवर्नरों द्वारा कार्यभार संभाले जाने की सुखद खबर देता है। अमेरिका में महिलाओं को रोटरी में आने के लिए एक कठिन लड़ाई लड़नी पड़ी; केवल 1986 में ही रो ई बोर्ड ने महिलाओं के प्रवेश की अनुमति दी और तब से अनेक क्लबों ने महिला सदस्यों को शामिल करने में गहरी रुचि दिखाई। इन सात महिला गवर्नरों को मेरी शुभकामनाएं।

*आर श्रीनिवासन*
*रोटरी क्लब बैंगलोर जे पी नगर - मंडल 3191*

अगस्त के कवर पेज में एक सुंदर तस्वीर है और संपादक का संदेश आँखें खोल देने वाला है। रोटरी क्लब हैदराबाद स्मार्ट सिटी और रोटरी क्लब जैसलमेर स्वर्ण नगरी द्वारा निचले तबके के विद्यार्थियों के लिए जैसलमेर के एक स्कूल में एक पुस्तकालय प्रदान करना बहुत बढ़िया है। प्लास्टिक को ना कैसे कहें और मस्तिष्क की सफाई जैसे लेख शानदार है। चलिए इन सात महिला गवर्नरों का स्वागत करें और उन्हें शुभकामनाएं दें।

*राज कुमार कपूर*
*रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080*

संपादकीय, अपना स्थान पुनः प्राप्त करें में नदियों और उनके क्षेत्रों के बीच चक्रीय संबंधों की आपकी अभिव्यक्ति रोटरी के सातवें ध्यानाकर्षण क्षेत्र - पर्यावरण संरक्षण - के महत्व को रेखांकित करता है।

सात महिला गवर्नरों की नियुक्ति का स्वागत है। महिलाओं को मदूसरे लिंगफ के रूप में देखने के सिमोन डी बीवर के दृष्टिकोण से आपका संदर्भ गहराई से गूंजता है। मेरा मानना है कि व्यक्तियों को 'पहले' या 'दूसरे' लिंग के रूप में वर्गीकृत करने के बजाय हमें लैंगिक समानता सुनिश्चित करते हुए एकता को बढ़ावा देना चाहिए।

*सुनील कुमार अरोड़ा*
*रोटरी क्लब शिलांग*
*मंडल 3240*

अपने स्थान को पुनः प्राप्त करें शीर्षक वाला संपादकीय शानदार था। वहीं रशीदा का अन्य लेख *उम्मीद की किरण - जयपुर लिंब्स* उत्कृष्ट था। लेख *रोटरी ने तिरुपुर में एक विशाल अस्पताल की स्थापना की* शानदार थी।

*डैनियल चित्तिलापिल्ली*
*रोटरी क्लब कलूर - मंडल 3201*

जगजीतपुर गांव की अनाथ लड़कियों को कपड़े और अन्य सामान दान करने के रोटरी क्लब हरिद्वार सेंट्रल (रोटरी न्यूज प्लस) के नेक काम से मैं प्रभावित हूँ।

*टी डी भाटिया*
*रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार*
*मंडल 3012*

*सुशीला, दक्षिण की कोकिला* लेख के लिए एस आर मधु को सलाम। गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में इस दिग्गज गायिका के प्रवेश के साथ ही उन्हें रोटरी क्लब या रो ई मंडल द्वारा एक लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया जाना चाहिए। यदि किसी को जानकारी है कि ऐसा किया गया है तो कृपया लिखें।

*शंकर मंगडू, रोटरी क्लब मद्रास - मंडल 3232*

पी सुशीला पर लेख दिलचस्प है। संगीत समीक्षक श्रीराम लक्ष्मण कहते है कि गायक की पूरी संगीतमय कृति में 40,000 से अधिक गाने शामिल हैं। और यहाँ तक कि उनके सबसे उत्साही प्रशंसक ने भी उनके 35 प्रतिशत से अधिक गाने नहीं सुने होंगे। बिल्कुल सच है।

*एस मुनिआंदी*
*रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट*
*मंडल 3000*

## आशा जगाना

इस वर्ष के लिए रोटरी की थीम, *विश्व में उम्मीद जगाना*, हमें समुदाय के लिए कुछ सकारात्मक करने के लिए प्रेरित करती है। रोटरी के माध्यम से सेवा करने में आप न केवल गर्व और खुशी महसूस करते हैं, बल्कि इस अनुभव से अपने आसपास के लोगों को भी प्रभावित करते हैं।

*आत्माराम गुप्ता*
*रोटरी क्लब महाराजगंज*
*मंडल 3120*

**कवर पर: रोटरी क्लब इंदौर आदर्श, रो ई मंडल 3040 की अध्यक्ष ललिता शर्मा अनंत द्वारा संचालित 'ओपन-स्काई स्कूल' में पड़ती हुई एक बच्ची।**

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं *rotarynews@rosaonline.org* या *rushbhagat@gmail.com* पर संपादक को मेल कीजिए। *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा *rushbhagat@gmail.com* या *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अधिक रोटरी परियोजनाओं के बारे में पढ़ने के लिए हमारी वेब साइट *www.rotarynewsonline.org* पर Rotary News Plus पर क्लिक करें।

# अध्यक्ष की ज़बानी

## मानसिक स्वास्थ्य और आपका क्लब

WHO ने 10 अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस घोषित किया है और रोटरी के इस वर्ष मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने के साथ, मैं सबसे अधिक बार पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर देना चाहता हूँ: मेरा क्लब कैसे शुरू हो सकता है?

रोटरी सदस्यों के पहले से ही कार्यवाही करने के कुछ अद्भुत उदाहरण मौजूद हैं। फिलीपींस में रोटरी क्लब टियाओंग-हियास ने समुदाय में माताओं के लिए 12 सप्ताह की एक स्वास्थ्य चुनौती आयोजित की ताकि एक स्वस्थ जीवन शैली के लिए कुछ आधारभूत स्वास्थ्य जांच और प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जा सके।

चुनौती के अंत तक माताओं का एक विशेष बंधन जुड़ने के कारण स्वास्थ्य शिक्षा और कल्याण सहायता में अधिक माताओं को शामिल करने के लक्ष्य के साथ इलॉ एनजी ताहनन (घर को रोशन करने वाला) नामक एक रोटरी सामुदायिक कॉर्प्स बनाने का फैसला किया गया - और बाद में युवा सेवाएं, किशोर गर्भावस्था की रोकथाम और अस्वास्थ्यकर पदार्थों के उपयोग से बचने का समर्थन किया गया। लगभग एक साल बाद आरसीसी अपना स्वयं का स्वास्थ्य केंद्र खोलने की तैयारी कर रहा है जहाँ माताएं एक-दूसरे का समर्थन कर सकती हैं।

एक और मजबूत उदाहरण कोलोराडो का है। 2021 के मध्य में, रोटरी क्लब हाइलैंड्स रेंच के शेयर धारकों के एक छोटे समूह ने बाल चिकित्सा मानसिक स्वास्थ्य के लिए रोटरी क्लब कोलोराडो एंडोड फैलोशिप का गठन किया जो बाल मनोचिकित्सा प्रदाताओं को भर्ती और प्रशिक्षित करने के लिए चिल्ड्रेन्स हॉस्पिटल कोलोराडो की क्षमता को बढ़ाता है और अस्पताल तंत्र को अतिरिक्त नियुक्तियां करने की अनुमति देता है। यह बच्चों के लिए मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की पहुंच को बढ़ाता है और प्रदाता की कमी को कम करता है।

तब से परियोजना को नए समर्थक मिले है और अब यह पूरी तरह से 500,000 डॉलर की अक्षय निधि से वित्त पोषित है। इस अक्षय निधि की निवेश आय चिल्ड्रेन्स हॉस्पिटल में एक साथी - एक मनोवैज्ञानिक या मनोचिकित्सक - का समर्थन करेगी। 2024 के वसंत की शुरूआत से हर एक से दो साल में एक नए साथी का नाम दिया जाएगा। समय के साथ यह मानसिक स्वास्थ्य कार्यबल को बढ़ाने वाला समूह बनेगा जो सभी 64 कोलोराडो प्रांतों और पड़ोसी राज्यों के बच्चों का इलाज करेगा।

Rotary Showcase पर अनेक महान मानसिक स्वास्थ्य परियोजना कहानियां हैं साथ ही आप रोटरी जगत में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े अपने किसी भी विचार को mindhealth@rotary.org पर साझा कर सकते है।

10 अक्टूबर को मैं एक फेसबुक लाइव कार्यक्रम की मेजबानी करूंगा जब हम विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस को मान्यता देंगे और यह जानेंगे कि रोटरी सदस्य इस यात्रा को कैसे शुरू कर सकते हैं।

अभी, रोटरी जगत में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे आप जानते हैं - आपके क्लब में, किसी ऐसी परियोजना से संबंधित जिस पर आपने काम किया है, रोटरी फैलोशिप या रोटरी एक्शन ग्रुप में - जो आपके समय और ध्यान का थोड़ा अधिक उपयोग कर सकें। हमें बांधने वाले मानव संबंधों की खोज करें। रोटरी हमेशा से इसी से संबंधित रही है और हम एक-दूसरे को उसके घर में शांति की खोज करने में मदद करके इसे मजबूत बना सकते हैं।

हमें केवल आप कैसे हैं? नहीं बल्कि आप वास्तव में कैसे हैं? यह पूछना चाहिए, ऐसा करके रोटरी *विश्व में उम्मीद जगाना* जारी रख सकती है।

**आर गॉर्डन आर मेकिनली**
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

# खुले आकाश के नीचे...

इस वर्ष की अध्यक्षीय थीम है *विश्व में उम्मीद जगाना,* शुरुआत से ही ये मेरे दिल के करीब है, क्योंकि आशा और सपनों के बिना, जीवन जीने का क्या महत्व है ? और यह रोटरी के सभी फोकस क्षेत्रों पर बिलकुल सटीक बैठता है; चाहे वह स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार हो, शांति का प्रसार, आजीविका में वृद्धि करनी हो, पृथ्वी माँ की रक्षा हो या फिर बच्चों को शिक्षित करना हो।

मुझे विश्वास है कि आप में से हरेक को एक फोकस क्षेत्र अधिक प्रिय होगा; मेरा है साक्षरता और शिक्षा। शिक्षा - सार्थक शिक्षा - में लाखों लोगों को गरीबी से उबारने की जादुई ताकत है। मानव मन की शक्ति असीम है और आत्मा अनंत। लेकिन शिक्षा उसमें चार चाँद लगा देती है। हममें से अधिकांश लोग अपने स्कूल और कॉलेज के दिनों को याद कर सकते हैं... उस प्रिय शिक्षक को, जिन्होंने हमारे भीतर कोई चिंगारी/क्षमता देख, हमें उस क्षेत्र विशेष में आगे बढ़ने और अपना श्रेष्ट देने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसने हमारे भीतर उत्साह, कौतुहल और रुचि की आग को प्रज्वलित कर दिया था। और उस हौली सी थपकी ने हमें वहां पहुंचा दिया जहां हम आज खड़े हैं।

पिछले महीने हमने तमिलनाडु में नीलगिरी जिले के एक अत्यंत साधारण, जर्जर हो रहे पंचायत मिडिल स्कूल को रोटरी क्लब नीलगिरी के जोशीले रोटेरियनों के एक समूह द्वारा एक मॉडल स्कूल में परिवर्तित करते देखा जो कंप्यूटर प्रशिक्षण, आधुनिक विज्ञान प्रयोगशाला और पुस्तकालय से युक्त है। इस बार, हमारी कवर स्टोरी एक अकेली रोटेरियन, ललिता शर्मा अनंत पर केंद्रित है, जिन्हें उनके पति का समर्थन प्राप्त है, वो भी एक रोटेरियन हैं, (दोनों रोटरी क्लब इंदौर आदर्श, मंडल 3040 से), जिनके पास कोई स्कूल या उसका ढांचा नहीं है, इसके बावजूद जो काम वो कर रही हैं उससे सैकड़ों गरीब बच्चों का जीवन सफलतापूर्वक बदल रहा है। अपने घर के सामने वह एक पार्क में खुले आसमान के नीचे कक्षाएं चलाती हैं, यहां किसी भी समय 250 से अधिक वंचित बच्चे पढ़ते हुए मिल जाएंगे और फिर उन्हें मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ती हैं - या तो निजी अथवा सरकारी स्कूल में, और कई मामलों में तो कॉलेज भी भेजती हैं - उनकी फीस भी खुद ही भरती हैं, जहां ज़रुरत पड़े।

अपनी मां के साथ बर्तन साफ करने और घरेलू सहायिका के रूप में काम करने के लिए, जिन किशोरियों को उनके मां बाप ने स्कूल से निकाल लिया था, आज वही किशोरियां नर्स बन गई हैं या वे सिप्ला और फ्लिपकार्ट जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों में कार्यरत हैं। उनके अब तक के सर्वाधिक सफल छात्र मयंक कटारा हैं, जो आईआईटी पलक्कादु से स्नातक हुए हैं और उन्हें **₹18 लाख** के वार्षिक पैकेज पर बेंगलुरु में नौकरी मिली है। यहां से शिक्षा प्राप्त कर चुके ऐसे लगभग 35 सफल छात्र अब *भैया और दीदी* शिक्षकों के रूप में स्वयंसेवा करते हैं, जब भी उन्हें समय मिलता है, वे उनके ओपन स्काई स्कूल में आ कर अन्य बच्चों को पढ़ाते हैं

भले ही रोटरी परियोजना न हो, लेकिन 14 वर्षों से निरंतर चल रही इस परियोजना की सफलता दर्शाती है कि सिर्फ एक व्यक्ति का जुनून और दृढ़ता, आशा का संचार कर... इतने सारे युवाओं का भविष्य किस प्रकार संवार सकती है। इस प्रक्रिया का सबसे कठिन हिस्सा, माता-पिता को अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ाने के लिए राजी करना था। दुर्भाग्यवश, गरीबी से जूझ रहे अधिकाँश माता-पिता को शिक्षा में कोई फायदा नज़र नहीं आता। भूख और गरीबी सपनों को कुचल देते हैं।

अन्यत्र भी, बेहतर शिक्षा के माध्यम से रोटेरियन लोगों में आशा का संचार कर रहे हैं। चेन्नई में, रोटरी क्लब मद्रास साउथ ने मुख्यधारा के स्कूलों में विशेष बच्चों के लिए जगह बनाकर, उनको प्रवेश दिला कर एक अद्भुत परियोजना कर रहे हैं। धर्मशाला में, रोटरी क्लब धर्मशाला के रोटेरियनों ने किशोरियों को उत्तम गुणवत्ता वाले पुन: प्रयोज्य सैनिटरी नैपकिन उपहार में दिए जिससे उनकी शिक्षा में प्रगति हुई है। उन्होंने पाया कि ग्रामीण इलाकों में, अधिकाँश लड़कियां महीने में कुछ दिन स्कूल नहीं आती थीं क्योंकि सैनिटरी नैपकिन की अनुपलब्धता के कारण वे अपने मासिक धर्म का उचित प्रबंधन नहीं कर पाती थीं।

यदि निराश और पददलित लोगों में आशा की किरण जगाई जा सके... तो आकाश की कोई सीमा नहीं है।

रशीदा भगत

# एक तनावमुक्त छुट्टी

**ईवा रेमिजान-टोबा**

सिंगापुर के रोटरी सम्मेलन यात्रा को एक परेशानी मुक्त अवकाश में बदलना आसान है। दोनों सम्मेलन स्थल से आप द्वीप के सबसे पसंदीदा उद्यानों, मनोरंजन, खाने-पीने और दर्शनीय स्थलों तक सीधे पहुँच सकते हैं। और स्थानों के बीच और पास के स्थानों की एमटीआर रेल प्रणाली से यात्रा करना बहुत आसान है।

मरीना बे सैंड्स कॉम्प्लेक्स में ब्रेकआउट सत्रों के बीच, जो अपने आप में एक विशाल अवकाश स्थल है, वहाँ एक पर्यटक होने का आनंद लें। थोड़ी दूर पैदल चलकर आप गार्डन्स बाय द बे पहुँच जाएंगे, जहां विशाल स्टील सुपरट्री कला उद्यान और दुनिया के फूलों का मेगा-ग्रीनहाउस है।

'ट्रिस्टेड-स्टील हेलिक्स ब्रिज' को पार करें और 'सिंगापुर फ्लायर फेरिस व्हील' की ओर 20 मिनट की सैर पर जाएँ, जहां से स्काई लाइन दृश्य दिखाई देता है या पैदल चलकर शहर के हॉकर सेंटर तक जाएँ। आमतौर पर सस्ते और खुली हवा के फूड कोर्ट सांस्कृतिक कसौटी हैं। ङ्गमाकनसुत्र ग्लूटन्स बेफ के स्टॉलों पर स्थानीय पाक व्यंजनों की बिक्री होती है, जिनमें मांस साटे स्केवर्स, लार्ड में तले स्टर फ्राई नूड्ल्स, और तला हुआ गाजर का केक शामिल है, जो कोई मिठाई नहीं है - स्वादिष्ट क्यूब्स डेकोन मूली (सफेद गाजर) और चावल के आटे से बनाए जाते हैं।

नेशनल स्टेडियम में सामान्य सत्र आपको सिंगापुर स्पोर्ट्स हब में ले आते हैं। आप या आपके मेहमान कुछ गतिविधियों के नाम पर एक नकली लहर पर सर्फ कर सकते हैं, कश्ती किराए पर ले सकते हैं, या साइकिल इतिहास प्रदर्शनियों के लिए शिमैनो साइक्लिंग वर्ल्ड का दौरा कर सकते हैं। ये कुछ कार्यों के उदाहरण हैं।

सिंगापुर में मॉल एक बड़ी चीज़ हैं। सम्मेलन मैदान में दो हैं: मरीना बे सैंड्स की लक्ज़री दुकानें और स्पोर्ट्स हब का कल्लांग वेव मॉल, जिसमें स्पोर्टी स्टोर, गोल्फिंग सिमुलेटर, एक वर्चुअल रियलिटी आर्केड और एक रॉक क्लाइंबिंग दीवार शामिल है।

*विश्व में उम्मीद जगाने* के लिए 25-29 मई को हमसे जुड़ें।

***अधिक जानें और***
**convention.rotary.org**
***पर रजिस्टर करें।***




## गवर्नर्स काउंसिल

| | |
|---|---|
| RID 2981 | सेनगुट्टुवन जी |
| RID 2982 | राघवन एस |
| RID 3000 | आनंदता जोती आर |
| RID 3011 | जीतेन्द्र गुप्ता |
| RID 3012 | प्रियतोष गुप्ता |
| RID 3020 | सुब्बाराव रावुरी |
| RID 3030 | आशा वेणुगोपाल |
| RID 3040 | रितु ग्रोवर |
| RID 3053 | पवन खंडेलवाल |
| RID 3055 | मेहुल राठौड़ |
| RID 3056 | निर्मल जैन कुणावत |
| RID 3060 | निहिर दवे |
| RID 3070 | विपन भसीन |
| RID 3080 | अरुण कुमार मोंगिया |
| RID 3090 | घनश्याम कंसल |
| RID 3100 | अशोक कुमार गुप्ता |
| RID 3110 | विवेक गर्ग |
| RID 3120 | सुनील बंसल |
| RID 3131 | मंजू फड़के |
| RID 3132 | स्वाति हर्कल |
| RID 3141 | अरुण भार्गवा |
| RID 3142 | मिलिंद मार्तंड कुलकर्णी |
| RID 3150 | शंकर रेड्डी बुसीरेड्डी |
| RID 3160 | माणिक एस पवार |
| RID 3170 | नासिर एच बोरसाडवाला |
| RID 3181 | केशव एच आर |
| RID 3182 | गीता बी सी |
| RID 3191 | उदयकुमार के भास्करा |
| RID 3192 | श्रीनिवास मूर्ति वी |
| RID 3201 | विजयकुमार टी आर |
| RID 3203 | डॉ सुंदरराजन एस |
| RID 3204 | डॉ सेतु शिव शंकर |
| RID 3211 | डॉ सुमित्रन जी |
| RID 3212 | मुत्तैय्या पिल्लई आर |
| RID 3231 | भरणीधरन पी |
| RID 3232 | रवि रामन |
| RID 3240 | नीलेश कुमार अग्रवाल |
| RID 3250 | बगारिया एस पी |
| RID 3261 | मनजीत सिंह अरोड़ा |
| RID 3262 | जयश्री मोहंती |
| RID 3291 | हीरा लाल यादव |


प्रकाशक एवं मुद्रक **पी टी प्रभाकर**, 15 शिवास्वामी स्ट्रीट, मायलापोर, चेन्नई - 600004, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600014 से मुद्रित एवं रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट, दुगड़ टावरस, 3rd फ्लोर, 34 मार्शलस रोड, एगमोर, चेन्नई - 600008 से प्रकाशित। संपादक: **रशीदा भगत**

प्रकाशित सामग्री में अभिव्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के स्वतंत्र विचार हैं, और आवश्यक नहीं कि वे रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट (आरएनटी) के संपादक या रोटरी इंटरनेशनल के ट्रस्टी के विचारों से मेल खाते हों। संपादकीय या विज्ञापन सामग्री से होने वाली किसी भी क्षति के लिए आरएनटी जिम्मेदार नहीं होगा। लेख और रचनाओं का स्वागत है किन्तु उन्हें संपादित किया जा सकता है। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

## न्यासी मंडल

| | |
|---|---|
| अनिरुधा रॉयचौधरी<br>**रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** | RID 3291 |
| राजु सुब्रमण्यन<br>**रो ई निदेशक** | RID 3141 |
| डॉ भरत पांड्या<br>**टीआरएफ ट्रस्टी उपाध्यक्ष** | RID 3141 |
| राजेंद्र के साबू | RID 3080 |
| कल्याण बेनर्जी | RID 3060 |
| शेखर मेहता | RID 3291 |
| अशोक महाजन | RID 3141 |
| पी टी प्रभाकर | RID 3232 |
| डॉ मनोज डी देसाई | RID 3060 |
| सी भास्कर | RID 3000 |
| कमल संघवी | RID 3250 |
| डॉ महेश कोटबागी | RID 3131 |
| ए एस वेंकटेश | RID 3232 |
| गुलाम ए वाहनवती | RID 3141 |

**कार्यकारी समिति के सदस्य (2023-24)**

| | |
|---|---|
| स्वाति हेर्कल<br>**अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल** | RID 3132 |
| हीरा लाल यादव<br>**सचिव, गवर्नर्स काउंसिल** | RID 3291 |
| मुत्तैय्या पिल्लई आर<br>**कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल** | RID 3212 |
| मिलिंद कुलकर्णी<br>**सलाहकार, गवर्नर्स काउंसिल** | RID 3142 |



**संपादक**
रशीदा भगत

**उप संपादक**
जयश्री पद्मनाभन

**प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक**
विश्वनाथन के

**रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
*rotarynews@rosaonline.org*
*www.rotarynewsonline.org*

Magazine

# रोटरी के माध्यम से सपनों को साकार करें

मेरे प्रिय रोटेरियन,

अक्टूबर के करीब आते ही हमारा ध्यान रोटरी के एक महत्वपूर्ण ध्यानाकर्षण क्षेत्र - आर्थिक और सामुदायिक विकास की ओर जाता हैं। इस यात्रा से ही हमने उन तरीकों की खोज की जिनके माध्यम से हम न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में जीवन परिवर्तित कर सकते हैं।

जीवंत संस्कृतियों और असीम विविधता की भूमि वाला भारत देश सपनों से रंगा हुआ एक कैनवास है। हालांकि इस रंगीन मुखौटे के पीछे छुपी कठोर वास्तविकताएं हमें करुणा और उद्देश्य के साथ प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित करती हैं। हमारे साथी नागरिकों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रति दिन 3 डॉलर से कम में जीवन यापन करता है। फिर भी इन चुनौतियों के अंधकार में उम्मीद की एक किरण दिखाई देती है - हमारे लोगों का लचीलापन। लाखों लोग प्रतिदिन प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हैं, फिर भी उनका हौसला अटूट रहता है। यह अटूट दृढ़ संकल्प हमारे समुदायों की अंतर्निहित शक्ति को बयां करता है, जहाँ रोटरी की सेवा की सच्ची पुकार लगती है।

मानवता के इस विशाल समुद्र का एक और सम्मोहक तथ्य सामने है - हमारी आधी आबादी, 600 मिलियन व्यक्ति 25 वर्ष से कम आयु के हैं। वे हमारे देश के भावी पथप्रदर्शक हैं और उन सपनों के संरक्षक हैं जिनका सामने आना अभी बाकी हैं। रोटेरियनों के रूप में हम इन सपनों को आकार देने की क्षमता रखते हैं और न केवल आर्थिक विकास के लिए बल्कि प्रत्येक युवा दिल के भीतर मौजूद मानव क्षमता को पोषित करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

भारत के व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों ने युवाओं को इलेक्ट्रॉनिक्स, सिलाई, बढ़ईगिरी और अन्य कौशलों से सुसज्जित किया है, जिससे वे रोजगार प्राप्त करने या अपना व्यवसाय शुरू करने और आर्थिक विकास में योगदान देने में सशक्त होंगे। घाना में स्वच्छ जल और स्वच्छता परियोजनाओं ने न केवल स्वास्थ्य में सुधार किया है बल्कि आर्थिक विकास को भी बढ़ावा दिया है। ग्वाटेमाला में माइक्रोफाइनेंस साझेदारी ऋण उपलब्ध करवाकर उद्यमशीलता को बढ़ावा देती है। ग्रामीण केन्या में चिकित्सा क्लीनिक स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ाते हुए अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं। नेपाल में शिक्षा में निवेश लोगों को बेहतर आर्थिक अवसरों को तलाशने हेतु सशक्त बनाता है।

रोटरी की प्रतिबद्धता से प्रेरित ये सफलताएं, परिवर्तन की कहानियां हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि हमारे कार्य जो हालांकि सुर्खियों में नहीं हैं मगर हमारे द्वारा स्पर्श किए गए जीवन पर अमिट छाप छोड़ते हैं। करुणा और कार्यवाही के चौराहे पर खड़े होकर चलिए हम रोटरी की भावना को आगे बढ़ाएं और हमारे द्वारा सेवा किए जाने वाले अद्भुत समुदायों की तरह ही अद्वितीय तरीकों से परिवर्तन को पोषित करें।

इस अक्टूबर को चलिए हम अपने वैश्विक समुदाय के लचीलेपन का जश्न मनाते हुए यह स्वीकार करें कि हर चुनौती के भीतर परिवर्तन का अवसर निहित है। जब हम सेवा करने के लिए बाहर निकलते हैं, तो हमें अपना दिल बड़ा और हाथ खुले रखने चाहिए क्योंकि ऐसा करके ही हम *विश्व में उम्मीद जगा* सकते हैं।

**राजु सुब्रमण्यन**
रो ई निदेशक, 2023-25

# हम पोलियो को खत्म कर सकते हैं

24 अक्टूबर को, हम विश्व पोलियो दिवस पर अपने विशाल मानवीय लक्ष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हैं।

इस वर्ष, आइए पाकिस्तान की एक युवा स्वास्थ्य कार्यकर्ता को याद करें जिन्हें बीबी मार्जना के नाम से जाना जाता है। वह पहाड़ों में बर्फ और ठंड का सामना करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में 84 बच्चों का टीकाकरण करती है, अक्सर मीलों दूर स्थित प्रत्येक घर का दौरा करती है।

मार्जाना अफगानिस्तान, पाकिस्तान और पोलियो प्रकोप वाले क्षेत्रों में हजारों सीमावर्ती कार्यकर्ताओं में से एक है, जिसे मैं पोलियो खत्म करने के अंतिम प्रयास का नायक मानता हूं।

रोटरी की साझेदारी के साथ, "वैश्विक पोलियो उन्मूलन" पहल कड़ी मेहनत से अपनी 2022-26 रणनीति द्वारा दो प्रमुख लक्ष्यों को पाने की कोशिश कर रही है। सबसे पहले, हमारा लक्ष्य वाइल्ड पोलियोवायरस टाइप 1 संचरण को रोकना है। इस वर्ष, इस लेख के लिखे जाने तक केवल छह मामले दर्ज किये गये हैं। क्या यह वह वर्ष हो सकता है जब हम पोलियो वायरस के आखिरी मामले देखेंगे?

दूसरा, हमारा लक्ष्य पोलियो प्रकोप वाले देशों में वैक्सीन-उत्पन्न पोलियोवायरस टाइप 2, या सीवीडीपीवी2 के प्रसार के अंतिम मामले की रिपोर्ट करना है। पिछले वर्ष सीवीडीपीवी2 के लगभग 80 प्रतिशत मामले डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो, नाइजीरिया और यमन के उपराष्ट्रीय क्षेत्रों में हुए थे।

अन्य चुनौतियाँ बरकरार हैं, जैसे कि राजनीतिक तनाव, सुरक्षा जोखिम और पहुंच संबन्धित समस्याएँ, और अफगानिस्तान और पाकिस्तान में महामारी का स्थायी प्रभाव शामिल है। इन चुनौतियों के बावजूद हम प्रगति कर रहे हैं। हमने जो नया टीका पेश किया है, वह परिसंचारी टीका- उत्पन्न वायरस टाइप 2 की घटनाओं को कम करता है।

रोटरी वह संगठन है जिसने हर जगह बच्चों को विकलांगता या यहाँ तक कि पोलियो के कारण होने वाली मृत्यु से बचाने के लिए वैश्विक प्रयास करने का साहस किया। इसे अंतिम रेखा तक देखने के लिए हमारे अंदर दृढ़ता होनी चाहिए।

अपने क्लब या जिले में "पोलियोप्लस सोसाइटी" से जुड़ें या शुरू करें और सभी सदस्यों को इस ऐतिहासिक क्षण में शामिल करें। और यह मत भूलिए कि बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन हर डॉलर के लिए 2-टू-1 मैच के साथ पोलियो उन्मूलन के लिए रोटरी के दान को बढ़ाना जारी रखता है।

**बेरी रेसिन**
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

---

**क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है? या यह आपके जंक फोल्डर में जा रही है?**

हर महीने हम आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन *रोटरी न्यूज़ प्लस* निकालते हैं। यह महीने के मध्य तक प्रत्येक सदस्यता लेने वाले सदस्य को भेजा जाता है जिनकी ईमेल आईडी हमारे पास है। हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर *रोटरी न्यूज़ प्लस* पढ़ें। हमें शिकायतें मिली हैं कि सभी ग्राहकों को हर महीने *रोटरी न्यूज़ प्लस* का ई-संस्करण नहीं मिल रहा है।

लेकिन, कुल 150,471 ग्राहकों में से हमारे पास केवल 99,439 सदस्यों की ईमेल आईडी हैं।

कृपया अपनी ईमेल आईडी को इस प्रारूप में rotarynews@rosaonline.org पर अपडेट करें: आपका नाम, क्लब, मंडल और ईमेल आईडी।

# Rotarians!

**Visiting Chennai for business?**

**Looking for a compact meeting hall?**

Use our air-conditioned Board Room with a seating capacity of 16 persons at the office of the Rotary News Trust.

**Tariff:**

**₹2,500 for 2 hours**
**₹5,000 for 4 hours**
**₹1,000 for every additional hour**

Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org


## रोटरी संख्या

| | | |
|---|---|---|
| रोटरी क्लब | : | 37,010 |
| रोटरेक्ट क्लब | : | 11,205 |
| इंटरेक्ट क्लब | : | 14,282 |
| आरसीसी | : | 13,117 |
| रोटरी सदस्य | : | 1,181,334 |
| रोटरेक्ट सदस्य | : | 166,236 |
| इंटरेक्ट सदस्य | : | 328,486 |

14 सितंबर, 2023 तक

## सदस्यता सारांश

1 सितंबर 2023 तक

| रो ई मंडल | रोटरी क्लब | रोटेरियनों की संख्या | महिला रोटेरियन (%) | रोटरेक्ट क्लब | रोटरेक्ट सदस्य | इंटरेक्ट क्लब | आरसीसी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2981 | 138 | 6,070 | 6.29 | 73 | 492 | 33 | 254 |
| 2982 | 84 | 3,750 | 6.40 | 35 | 839 | 87 | 149 |
| 3000 | 136 | 5,940 | 11.78 | 104 | 1,601 | 186 | 215 |
| 3011 | 135 | 5,010 | 28.86 | 84 | 2,401 | 128 | 37 |
| 3012 | 152 | 3,784 | 23.15 | 75 | 792 | 91 | 61 |
| 3020 | 86 | 5,038 | 7.60 | 45 | 984 | 117 | 351 |
| 3030 | 101 | 5,672 | 15.74 | 126 | 1,947 | 475 | 384 |
| 3040 | 112 | 2,474 | 14.71 | 63 | 863 | 77 | 213 |
| 3053 | 74 | 2,934 | 16.16 | 36 | 593 | 42 | 129 |
| 3055 | 80 | 2,930 | 11.98 | 67 | 1,095 | 69 | 376 |
| 3056 | 89 | 3,869 | 25.79 | 48 | 535 | 100 | 202 |
| 3060 | 105 | 4,993 | 15.92 | 68 | 2,213 | 57 | 142 |
| 3070 | 125 | 3,338 | 16.21 | 49 | 536 | 51 | 62 |
| 3080 | 108 | 4,180 | 12.49 | 124 | 1,610 | 155 | 122 |
| 3090 | 110 | 2,421 | 5.87 | 48 | 609 | 191 | 164 |
| 3100 | 114 | 2,292 | 12.17 | 15 | 137 | 33 | 151 |
| 3110 | 146 | 3,901 | 11.18 | 17 | 110 | 38 | 106 |
| 3120 | 88 | 3,643 | 16.00 | 42 | 473 | 27 | 55 |
| 3131 | 142 | 5,735 | 26.31 | 145 | 2,599 | 217 | 145 |
| 3132 | 87 | 3,626 | 13.76 | 39 | 552 | 109 | 176 |
| 3141 | 112 | 5,990 | 27.05 | 153 | 5,052 | 164 | 214 |
| 3142 | 107 | 3,979 | 21.44 | 95 | 2,048 | 90 | 91 |
| 3150 | 110 | 4,323 | 12.79 | 154 | 1,815 | 104 | 130 |
| 3160 | 84 | 2,738 | 8.77 | 32 | 228 | 95 | 82 |
| 3170 | 148 | 6,585 | 15.35 | 118 | 1,751 | 169 | 179 |
| 3181 | 87 | 3,586 | 10.65 | 39 | 462 | 81 | 118 |
| 3182 | 87 | 3,612 | 10.27 | 46 | 241 | 104 | 103 |
| 3191 | 90 | 3,510 | 18.40 | 107 | 2,753 | 121 | 35 |
| 3192 | 81 | 3,518 | 20.98 | 119 | 2,450 | 91 | 40 |
| 3201 | 173 | 6,709 | 9.76 | 134 | 2,037 | 91 | 93 |
| 3203 | 95 | 4,988 | 7.60 | 87 | 1,147 | 133 | 39 |
| 3204 | 75 | 2,478 | 7.26 | 24 | 226 | 17 | 13 |
| 3211 | 159 | 5,091 | 7.99 | 10 | 152 | 19 | 133 |
| 3212 | 127 | 4,676 | 11.14 | 90 | 3,604 | 143 | 153 |
| 3231 | 96 | 3,438 | 7.30 | 39 | 436 | 39 | 417 |
| 3232 | 186 | 6,556 | 19.78 | 127 | 7,279 | 144 | 100 |
| 3240 | 105 | 3,574 | 16.62 | 71 | 1,107 | 64 | 227 |
| 3250 | 108 | 4,142 | 21.49 | 68 | 956 | 64 | 191 |
| 3261 | 105 | 3,505 | 22.62 | 23 | 242 | 21 | 45 |
| 3262 | 113 | 3,798 | 15.88 | 76 | 716 | 642 | 284 |
| 3291 | 143 | 3,793 | 25.65 | | | 60 | 729 |
| **India Total** | **4,603** | **172,189** | | **2,915** | **55,683** | **4,739** | **6,910** |
| 3220 | 70 | 2,013 | 16.44 | 98 | 4,417 | 84 | 77 |
| 3271 | 177 | 3,083 | 17.97 | 192 | 3,340 | 332 | 28 |
| 3272 | 161 | 2,277 | 14.67 | 90 | 1,273 | 25 | 49 |
| 3281 | 328 | 8,162 | 18.15 | 281 | 1,983 | 144 | 211 |
| 3282 | 182 | 3,614 | 9.85 | 203 | 1,389 | 30 | 47 |
| 3292 | 154 | 5,624 | 18.46 | 181 | 5,236 | 90 | 134 |
| **S Asia Total** | **5,675** | **196,962** | **15.47** | **3,960** | **73,321** | **5,444** | **7,456** |

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

Rotary PEOPLE OF ACTION

# खुले आस्मान के नीचे शिक्षा के ज़रिये जहां जादू होता है

रशीदा भगत

जब एक छोटे मोटे मिस्त्री का बेटा मयंक कटारा अपनी पढ़ाई के लिए कड़ी मेहनत कर रहा था, तो उसे एक अनुभवी प्रोफेसर, रोटरी क्लब इंदौर आदर्श (रो ई मंडल 3040) की अध्यक्ष ललिता शर्मा अनंत के पास भेजा गया, जो सार्वजनिक प्रशासन और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन (इंटरनेशनल स्टडीज) में डॉक्टरेट हैं और जिन्होंने इंदौर में वंचित और कम विशेषाधिकार प्राप्त बच्चों पढ़ाने के लिए बढ़िया तनख्वाह वाली अच्छी-खासी नौकरी छोड़ दी थी।

''वह लड़का हमारी कक्षाओं में आता तो था, लेकिन नियमित रूप से नहीं। वह अत्यंत कुशाग्र था, मैंने उसके घर के पास एक छोटे निजी स्कूल में दाखिला दिला दिया था। मैं स्कूल के मालिक/प्रिंसिपल को जानती थी और उसकी फीस माफ करवा दी थी,'' ललिता याद करती हैं।

उसने भी पूरे परिश्रम और लगन से पढ़ाई की और आईआईटी, पलक्कड़ में प्रवेश के लिए योग्यता प्राप्त कर ली। एक बार फिर, उसके गुरु ने फीस के लिए उसे बैंक से ऋण लेने की प्रक्रिया समझाई थी। आठ महीने हो गए हैं मयंक को आईआईटी से स्नातक हुए और वो बेंगलुरु में काम कर रहा है, उसे ₹18 लाख का वार्षिक पैकेज मिला है। ''जब जब वह इंदौर में होता है, वह मेरे पास ज़रूर आता है और बच्चों को पढ़ाने में मेरी मदद करता है।''

यह अद्भुत शिक्षाविद्, इंदौर में डीएवीवी एचआरडीसी अहिल्या विश्वविद्यालय और पॉल इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज में कानून के छात्रों को लोक प्रशासन और अंतरराष्ट्रीय संबंध विषय पढ़ाती हैं, सफलता के ऐसे कई किस्से सुना सकती हैं (देखें बॉक्स)। लेकिन आइए इसकी शुरुआत में चलें और देखें कि वो क्या कारण था जिसकी वजह से उन्होंने अध्यापन

की अपनी सुरक्षित नौकरी छोड़ कर वंचित बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया... कई बार यह संख्या 200 से ऊपर चली जाती है!

सन 2008 सिक्किम की ललिता ने साथी रोटेरियन और व्यवसायी हातिम अनंत से विवाह किया, वो बताती हैं कि इसका आरम्भ तब हुआ हुआ जब इंदौर में अपना नया घर बनवा रहे थे। ललिता कहती हैं: ''जब मैं निर्माणाधीन घर में जाती तो वहां बहुत सारे बच्चों और युवाओं को जुआ खेलते और धूम्रपान करते देखती थी। एक शिक्षक के नाते मैं इसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी। वे बच्चे सिर्फ अपना समय ही नहीं बल्कि पूरा जीवन बर्बाद कर रहे थे। एक प्रकार से यह भारत की आत्मा पर लगे अत्यंत गंभीर घाव को संक्रमित होते देखने जैसा था।''

उन्हें लगा कि इसके बारे में कुछ करना चाहिए। अपने पति से सलाह कर उन्होंने एक निश्चय किया। उस मकान में स्थानांतरित होने के बाद, अपने घर के भीतर उन्होंने सिर्फ आठ बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। देखते-देखते सिर्फ एक महीने में यह संख्या 100 को पार कर गई। इसे देख उन्होंने  कक्षाओं को घर के बाहर सड़क पर लगाना शुरू कर दिया।

> **मैं बहुत सारे बच्चों और युवाओं को जुआ खेलते और धूम्रपान करते देखती थी। वे बच्चे सिर्फ अपना समय ही नहीं बल्कि पूरा जीवन बर्बाद कर रहे थे।**
>
> **ललिता शर्मा अनंत**
> अध्यक्ष, रोटरी क्लब इंदौर आदर्श

*रोटरी क्लब इंदौर आदर्श की अध्यक्ष ललिता शर्मा अनंत, पार्क में बच्चों को पढ़ाती हुई।*

वहां पर पुलिस की पाबंदी या अन्य किसी तरह की कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि घर थोड़े  निर्जन क्षेत्र में था। लेकिन जब लगा कि छोटे बच्चों को सड़क पर पढ़ाना सुरक्षित नहीं रहेगा, तो उन्होंने अपने घर के सामने एक विशाल पार्क की पहचान की जो गंदा था और जिसमें जंगल पनप रहा था था और असामाजिक गतिविधियों के लिए इस्तेमाल होता था। उन्होंने अपने पति के साथ मिल कर, जिन्हें वह ''मेरी मजबूत रीढ़ और सबसे बड़ा समर्थक'' कहती हैं, इसे साफ करवाया और कक्षाओं को वहां स्थानांतरित कर दिया। धीरे-धीरे इस खुली कक्षा में पढ़ने के लिए बच्चे और युवा आने लगे इनमें से कई तो स्कूल से बाहर निकाल दिए गए थे,  कुछ बच्चे ऐसे थे, सार्वजनिक उद्यान की बाड़ में लगे हुए लोहे की तार निकाल कर बेच देते थे और उस पैसे से जुआ, धूम्रपान और अन्य मादक द्रव्यों का सेवन करते थे। ऐसे बच्चे भी थे जिन्होंने कभी भीतर से स्कूल के दर्शन ही नहीं किये थे और ज़रा से पैसों के लिए छोटे मोटे काम कर रहे थे।

पड़ोस में सिर्फ आठ बच्चों से शुरू हुआ था, जिन्हें सब्जी विक्रेता और धोबी की मदद से पहचाना गया था, वो तेजी से बढ़ा और अंततः यह संख्या बढ़कर 280 पहुँच गई!

जैसे - जैसे उनकी कक्षाओं में बच्चे बढ़ने लगे, आश्चर्य की बात ये हुई कि 15 वरिष्ठ शिक्षक, सभी महिलाएँ, इन बच्चों को पढ़ाने के

लिए उनके साथ जुट गईं। और तो और, हाई स्कूल पास कर चुके वरिष्ठ छात्र भी, जिन्होंने उनके यहां मुक्ताकाश में संचालित कक्षाओं से अतिरिक्त कोचिंग/पढ़ाई करने के बाद स्नातक हुए, उन्होंने भी छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिए स्वेच्छा से पढ़ाना शुरू कर दिया।

वो धड़ल्ले से सफलता की कई आनन्दायक कहानियाँ सुनाती जा रही हैं, इस बीच मैं उनसे उनकी रोटरी यात्रा (बॉक्स देखें) के बारे में पूछती हूँ, वह अपने शिक्षण के काम के लिए धन कैसे जुटाती हैं और क्या बाकी रोटेरियन या उनके क्लब के सदस्य भी आर्थिक सहायता करते हैं। वह कहती हैं कि पैसा विभिन्न तरीकों से प्राप्त होता है, शुरु में ही बता दिया था कि ''वास्तव में, बहुत अधिक धन की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि हमारे पास कोई आधारभूत ढांचा तो है नहीं, नाही कोई स्थान निर्दिष्ट है, फिर भी ये कक्षाएं 14 वर्षों से अनवरत चल रही हैं!''

ललिता ने बताया कि पैसे के अलावा भी बड़ी चुनौतियाँ हैं। माँ बाप अपने बच्चों, विशेषकर लड़कियों को स्कूल में पढ़ने की अनुमति देने के लिए मना कर देते हैं। माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे कमाई करें और कुछ रूपये घर लाएँ; लड़कियों को अपनी माँ के साथ घरेलू सहायिका और लड़कों को दैनिक मजदूरी करने के लिए कहा जाता है। आमतौर पर, लड़की की शिक्षा को कम महत्व दिया जाता है, वो कहते

**अक्सर, रोटेरियन और अन्य लोग अपने जन्मदिन, वर्षगाँठ आदि के लिए कुछ दान किया करते हैं, और हम उन्हें विशेष छात्रों और संस्थानों को दिलवाते हैं जहाँ वे सीधे छात्र की फीस का भुगतान कर सकते हैं।**

# सफलता की कहानियां

ललिता अनंत दिलचस्प कहानी सुनाती हैं पूजा की, जो उनकी कक्षाओं में आती थी पर कक्षा 9 के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी; ''मुझे पता था कि उसके भीतर एक चिंगारी थी और वह कुछ करना चाहती थी। हम हर बच्चे की प्रगति का ध्यान रखते हैं, इसलिए जब पता चला कि कुछ दिनों से वो अनुपस्थित है तो मैं अपने एक शिक्षक के साथ एक शाम लड़की के घर गई। मुझे मालूम चला कि परिवार गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहा है। माता-पिता की चार बेटियाँ थीं और कमाई के लिए पूजा को अपनी माँ के साथ काम पर जाना पड़ता था जिसमें विभिन्न घरों में बर्तन साफ करना शामिल था। मैंने माँ को सलाह दी और कहा: मतुम्हारा जीवन तो पूरा हो गया है लेकिन अपने बच्चों को तो बेहतर ज़िंदगी दे सकती हैं, यदि वो शिक्षित नहीं हुई तो उसे भी वैसा ही पति मिलेगा और उसके बाद उसका जीवन इतना ही मुश्किल भरा होगा।''

इस रोटेरियन को उसकी माँ से ज्ञात हुआ कि हर महीने लड़की ₹1,200 कमाती है, और उसने माँ से लड़की को मदद के लिए हमारे पास भेजने को कहा जैसा कि कई युवा करते हैं। ''वे कई प्रकार से हमारी सहायता करते हैं और इसके बदले में हम उनकी शिक्षा प्रायोजित कर उनकी मदद करते हैं। और ऐसे स्वयंसेवकों को हर महीने हम कुछ पैसे भी देते हैं क्योंकि उन्हें अपनी पॉकेट मनी की भी आवश्यकता होती है। पूजा ने अपनी 10वीं कक्षा एक निजी स्कूल से पूरी की, जहाँ उसकी फीस का भुगतान मैंने किया था। उसने विज्ञान विषय चुना और 12वीं कक्षा में चली गई।''

इसके बाद उसने एक सरकारी कॉलेज में प्रवेश लिया और बीएससी की पढ़ाई पूरी की। मेधावी और मेहनती लड़की आगे पढ़ना चाहती थी लेकिन उसने कहा कि उसका परिवार इसका विरोध कर रहा है। एक बार फिर उसके घर जाने का समय आ गया था ; ''हमने माता-पिता को समझाया और उसने इंदौर विश्वविद्यालय से फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री में एमएससी में स्वर्ण पदक विजेता बन कर उभरी। इसके बाद वह

हैं कि ''वह तो शादी कर के दूसरे घर चली जाएगी।'' दूसरी समस्या, ''चूंकि कई लड़कियों का घर हमारी कक्षाओं से दूर था, रास्ता काफी लम्बा था, उनके साथ छेड़छाड़ की हरकतें भी होती थीं इसलिए माता-पिता नहीं चाहते थे कि वे पढ़ने आएँ। लेकिन हमने माता-पिता को समझाया, पढ़ाई की कीमत और इसके फायदे बताये। हमने पुलिस स्टेशन में संपर्क किया और छेड़छाड़ सहित कई समस्याओं का निराकरण किया और कुछ योग्य लड़कियों को स्कूल तक लंबी यात्रा के लिए साइकिलें भी दी गईं थी,'' ललिता कहती हैं।

> आमतौर पर, लड़की की शिक्षा को कम महत्व दिया जाता है, लेकिन हमने माता-पिता को समझाया, पढ़ाई की कीमत और इसके फायदे बताये।

निजी स्कूलों में पढ़ने वाले मेधावी छात्रों की फीस के लिए पैसे की व्यवस्था के बारे में, ललिता कहती हैं, ''अक्सर, रोटेरियन और अन्य लोग अपने जन्मदिन, वर्षगाँठ आदि के लिए कुछ दान किया करते हैं, और हम उन्हें विशेष छात्रों और संस्थानों को दिलवाते हैं जहाँ वे सीधे छात्र की फीस का भुगतान कर सकते हैं। इसके अलावा, मैंने 18 वर्षों तक काम किया है, मेरे पास अपनी व्यक्तिगत बचत भी है; पीएफ और एफडी, और मैं अक्सर कुछ छात्रों की फीस का भुगतान करने के लिए अपने या पति के पैसे का उपयोग करती हूं, हम उनके लिए प्रायोजक भी ढूंढते हैं। दूसरी बात यह है कि चूंकि हमारे कई स्वयंसेवक आर्थिक दृष्टि से कमजोर पृष्ठभूमि से आते हैं, इसलिए उन्हें मानदेय देना होता है, ताकि वे अपना और अपनी उच्च शिक्षा का खर्च उठा सकें, क्योंकि उनमें से कई तो कॉलेज में पढ़ रहे हैं। बेशक, आपात्कालीन स्थिति में मदद के लिए हातिम तो है ही,'' वह मुस्कुराती है।

इस ओपन-टू-स्काई स्कूल में विभिन्न तरह के पाठ्यक्रम हैं; ''कक्षा 1 से 12 तक के छात्रों के लिए कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं; स्नातक और पीजी छात्रों के लिए, हमारे

मेरे पास आईं और बोलीं कि अब मुझे नौकरी की जरूरत है।''

ललिता ने फार्मा कंपनियों में आवेदन करने में उसकी मदद की और कई सत्रों के माध्यम से उसे साक्षात्कार और संबंधित विषयवस्तु के बारे में प्रशिक्षित किया। ''मेरे पास कई स्वयंसेवक आते हैं; उन्होंने उसकी मदद की, उसे प्रशिक्षित किया, उसके भाषण कला और वार्तालाप को निखारा और अब उसे फार्मा की प्रमुख कम्पनी सिप्ला में विश्लेषक की नौकरी मिल गई है। आज वह लगभग ₹25,000 प्रति माह कमाती है और कंपनी द्वारा दिए गए कई लाभ और कल्याणकारी सुविधाओं का आनंद उठा रही है।''

अब वह अपनी छोटी बहनों की पढ़ाई का खर्च उठा रही हैं... उसने अपनी शिक्षा पूरी कर ली है और एक बहन बी एड की पढ़ाई कर रही है।

फिर एक उत्साहवर्धक कहानी है साधना यादव की जो पढ़ाई में बहुत कमजोर थी; कक्षा 5 में होने के बाद भी वो एक वाक्य तक नहीं लिख सकती थी। ललिता ने पहले सोचा कि वो डिस्लेक्सिक से ग्रस्त हो सकती है और डॉक्टर से सलाह करने की सोच रही थी। ''फिर हमने सोचा कि क्यों न हम उसके साथ कोशिश करें, और  दौरान पाया कि पांचवीं से छोटी कक्षाओं की बातें और धारणाएं भी उसे समझ

**मैं आपको बताना चाहती हूं कि हमारी कक्षा 4 और 5 के बच्चों को 40 और 45 तक के पहाड़े कंठस्थ हैं!**

नहीं आती थीं और हमने उसे सिखाना शुरू किया। मैं खुद उसके साथ महीनों तक बैठती थी।  आज वह फ्लिपकार्ट में ट्रेनर है और एमबीए की परीक्षा में बैठने जा रही है। वह अपने छोटे भाई और बहन की शिक्षा का खर्च उठा रही हैं। कक्षा 8 से हाई स्कूल तक उसकी फीस का भुगतान मैंने किया था ; फिर हमने उसे एक सरकारी कॉलेज में भेजा था जहाँ फीस देने की ज़रूरत नहीं थी।''

एक और लड़की की कहानी है जो इस साल नर्सिंग में स्नातक हो जाएगी। वो एक सरकारी स्कूल में पढ़ने जाती थी और स्कूल लगभग छोड़ चुकी थी। ललिता ने उसे एक निजी स्कूल में प्रवेश दिलाने की कोशिश की ''लेकिन इस बात का भरोसा नहीं था कि वह इस मानसिक स्थिति में बाकी बच्चों के साथ चल पाएगी या नहीं इसलिए मैंने उसके लिए कुछ सलाहकार ढूंढे।'' उसे अकेले में व्यक्तिगत सलाह दी गई; अंततः उसने खोया हुआ आत्मविश्वास वापस पा लिया और एक बहुत अच्छे नर्सिंग कॉलेज (अरबिंदो इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज) में उसे प्रवेश मिल गया। पिता बेरोजगार थे। ''हम एक डॉक्टर दम्पति को जानते हैं जो एक पैथोलॉजी लैब चलाते है; उन्होंने उसे सुबह 6 से 10 बजे तक पार्ट टाइम काम के लिए रख लिया है। वहां से जो पैसा कमाती है, उससे वह अपनी फीस भरती है और बढ़िया कर रही है।''

एक और लड़की जो फार्मा कोर्स कर रही थी, कोर्स के बीच में ही कैंसर के कारण उसके पिता का देहांत हो गया था। उसकी माँ बोली कि वह आगे नहीं पढ़ सकेगी और वह छोड़ने की कगार पर थी। ''इसलिए मैंने हातिम को अपनी दुकान में एक जगह निकालने के लिए कहा और उसने उसे कुछ प्रविष्टियाँ करने का काम दिया... यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे काम के महत्व को समझें, और इसमें गरिमा भी है। इस पैसे से उसने अपनी फीस चुकाई, अपना फार्मेसी कोर्स पूरा कर लिया है और जल्द ही मास्टर्स कर लेगी,'' मुस्कुराते हुए ललिता कहती है।

संकोचपूर्वक वह आगे कहती है: ''हमारे पास ऐसी बहुत सारी कहानियाँ हैं। मैं आपको बताना चाहती हूं कि हमारी कक्षा 4 और 5 के बच्चों को 40 और 45 तक के पहाड़े कंठस्थ हैं!''

*स्वयंसेवक बच्चों को कंप्यूटर का उपयोग करना सिखाते हुए।*

पास एक मेंटरशिप कार्यक्रम है और छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए सलाहकार बुलाते हैं। ''हमारे पास पढ़ाई बीच में छोड़ कर स्कूल से निकल चुके बच्चों और ऐसे बच्चे जो कभी स्कूल नहीं गए उनके लिए एक ब्रिज शिक्षा कार्यक्रम भी है। हम उन्हें तैयारी करवाते हैं; उदाहरण के लिए, जो बच्चे कभी स्कूल नहीं गए, उन्हें सरकारी स्कूल में कक्षा 5 की परीक्षा में निजी छात्र के रूप में दाखिल किया जाता है। जब वे पास हो जाते हैं - और हम

*स्वयंसेवकों द्वारा संचालित ओपन-टू-स्काई कक्षाएं।*

सुनिश्चित कर लेते हैं कि वे कक्षा 6 के लिए तैयार हैं, तो हम उन्हें नियमित कक्षा में प्रवेश दिला देते हैं।''

और इस प्रकार, बच्चा मुख्यधारा की शिक्षा से जुड़ जाता है और उसके लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने और अपने सपने साकार करने का आधार तैयार हो जाता है। लेकिन कई बार विभिन्न कारणों से युवा लोग आगे पढ़ाई नहीं करना चाहते। ''इसलिए जब वे बड़े हो जाते हैं और सातवीं या आठवीं कक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं, तो हम उन्हें कुछ कौशल विकास कार्यक्रम या व्यावसायिक कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षित करवाते हैं जिसे के बाद उन्हें विभिन्न स्थानों पर समायोजित कर काम दिलाया जाता है,'' वह आगे कहती हैं।

**ललिता के घरेलू विश्वविद्यालय की विशिष्ट और सबसे मार्मिक विशेषता है – 35 दीदी और भैया शिक्षकों का एक समूह, जो कभी छात्र होते थे, लेकिन अब स्वेच्छा से कुछ कक्षाएं लेते हैं।**

ललिता के घरेलू विश्वविद्यालय की विशिष्ट और सबसे मार्मिक विशेषता है -35 दीदी और भैया शिक्षकों का एक समूह है, जो कभी छात्र होते थे, लेकिन अब कानून, व्यवसाय प्रशासन, नर्सिंग आदि में स्नातक हो चुके हैं और स्वेच्छा से कुछ कक्षाएं लेते हैं।

कक्षा का समय मेंटर्स और स्वयंसेवकों की सुविधा के अनुसार तय होता है जो दिन में छह घंटे के लिए आते हैं, दो बैच - दोपहर 1 से 6 बजे और 3 से 7 बजे - आयोजित किए जाते हैं।

तो अध्यापन के लिए शिक्षक कैसे मिले?

कई पुरस्कारों की विजेता के रूप में - जमीनी स्तर पर शिक्षा के लिए उनकी निःस्वार्थ सेवा के लिए 2019 में न्यूयॉर्क में ग्लोबल वूमेन इन्फ्लुएंसर अवार्ड, और समाज में उनकी निस्वार्थ सेवा के लिए भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा भारत की 100 सबसे प्रभावशाली महिलाओं में से

# उनकी रोटरी यात्रा

*ललिता और उनके पति हातिम अनंत।*

ललिता अनंत और उनके पति हातिम छह साल पहले रोटरी जुड़े थे; ''हमारे कुछ मित्र रोटेरियन थे और उन्होंने कहा कि यह एक अच्छा संगठन है। हम बहाई हैं और स्वाभाविक रूप से फिट महसूस करते हैं क्योंकि हमने पाया है कि हमारे मूल्य और सिद्धांत रोटरी के मूल उद्देश्यों से मेल खाते हैं, चाहे वह शांति, समानता और समावेश को बढ़ावा देना हो। हमने देखा कि रोटेरियन लोगों का एक अच्छा समूह है। इसलिए हम एक रोटरी क्लब में शामिल हो गए,'' वह कहती हैं।

लेकिन अफ़सोस, शामिल होने के बाद उन्होंने पाया कि ''ज्यादा कुछ हो नहीं रहा था इसलिए हमने क्लब छोड़ दिया और वो क्लब भी बंद हो गया।'' लेकिन छह महीने के बाद, रोटरी में शामिल होने के लिए एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम हुआ था, ''जिसमें हमने भाग लिया, हम रोटरी में शामिल होना चाहते थे, क्योंकि इसमें अच्छे लोग और उचित प्रकार की विविधता और वही समावेशन है, जिसे हम महत्व देते हैं।'' अब, वह कहती हैं हम अपने क्लब से बहुत खुश है।

तो क्या वह वंचित परिवारों के बच्चों की मदद के लिए अपने क्लब से मदद लेती है, जहां इस वर्ष वह अध्यक्ष हैं ?

ललिता टोकती हैं: ''अभी तो, क्लब को सिर्फ चार साल हुए हैं और सदस्यों से हम फीस की न्यूनतम राशि ही लेते हैं। नहीं, मैंने हमारे क्लब में इस बारे में कोई चर्चा नहीं की है। मेरी एक कमी यह भी है कि मैं मांग नहीं सकती।''

**हम रोटरी में शामिल होना चाहते थे, क्योंकि इसमें अच्छे लोग, उचित प्रकार की, विविधता और वही समावेशन है, जिसे हम महत्व देते हैं।**

हाँ, वो सिर्फ देने के लिए मशहूर हैं, मैं टिप्पणी करती हूं। हंसते हुए वह कहती हैं, ''पैसे मांगना मुझे बहुत मुश्किल काम लगता है लेकिन मेरे क्लब के भीतर और बाहर काफी लोग हमारे काम से परिचित हैं। हम किशोर लड़कियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं। अभी हाल ही में, हमने एमएचएम पर एक सत्र आयोजित किया है और इसके बाद राखी बनाने और अन्य गतिविधियों पर भी एक कार्यशाला की है।''

एक के रूप में सम्मानित किया गया, 2016 में - वह एक बार ज़ी टीवी पर *डॉ सुभाष चंद्रा शो* में जीवन के उद्देश्य पर बोल रही थीं। एक थकी मांदी और उनींदी शिक्षिका इसे देख रही थी, वो अचानक उठ कर बैठ गई, बातों से प्रभावित हुई और अगले दिन ही एक स्वयंसेवी शिक्षिका के रूप में शामिल होने आ गई।

जो बात दिल को छू लेती है, वो है उनकी विनम्रता; 14 वर्षों में, प्रत्येक वर्ष, उन्होंने औसतन हर साल 580 छात्रों के जीवन को प्रभावित किया है। और फिर भी वह उनके द्वारा किये गए प्रयासों को यह कहते हुए नकार कर देती है: ''वास्तव में हम कुछ भी नहीं हैं; हम सिर्फ उस परम शक्ति के निमित्त हैं।''

जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रही है, चुनौतियाँ जारी हैं, जिनमें से एक असली चुनौती मानसून की बारिश है तब कक्षाएं खुले में आयोजित नहीं की जा सकतीं। और ऐसे युवाओं और अभिभावकों की एक फौज है जिनकी नज़रों में शिक्षा का कोई महत्त्व नहीं है, जो शिक्षा का कोई मूल्य नहीं समझते। लेकिन शिक्षा की वास्तविक कीमत के बारे में जागरूक करने में वो निरंतर प्रयासरत हैं।

स्नातक होने वाले छात्रों के जीवन में हुए सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन पर ललिता को गर्व है। ''कई लोगों ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों, प्रतिष्ठित फार्मा कंपनियों, नर्सिंग में प्रवेश ले में कार्य कर रहे हैं और हमारे पास एक आईआईटियन भी है,'' वह गर्व से कहती हैं, ''अंततः, छात्र और शिक्षक दोनों के लिए परिणाम आशा से अधिक और अत्यंत संतोषप्रद रहा है।''

उनका सोचना है कि खुली शिक्षा की इस अवधारणा के विस्तार की संभावनाएं भरपूर हैं, ''सम्पूर्ण देश में लाखों छात्रों को मुख्यधारा की शिक्षा में जोड़ा जा सकता है। 2017 में हमारी ओपन स्काई लर्निंग क्लासेस को आभाकुंज वेलफेयर सोसाइटी के नाम से पंजीकृत किया था।''

*एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा*

## Together, we end polio




# WORLD POLIO DAY
# 24 OCTOBER

**Register your World Polio Day event**

Rotary | END POLIO NOW

Rotary PEOPLE OF ACTION

# असम में चायपत्ती चुनने वालों की आंखों की जाँच

जयश्री

रोटरी क्लब ऑफ गौहाटी साउथ, रो ई मंडल 3240 ने विजनस्प्रिंग, एक सामाजिक उद्यम और बी एंड ए समूह की कंपनियों के साथ मिलकर जोरहाट, गोलाघाट और सिबसागर जिलों के चाय बगानों में काम करने वाले चायपत्ती चुनने वालों के लिए एक नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया। क्लब ने 6,000 मजदूरों की स्क्रीनिंग का लक्ष्य रखा था और जून तक 6,700 लोगों की स्क्रीनिंग कर शिविर को समाप्त किया। क्लब के आईपीपी राजेश भत्रा ने कहा- ''हम इस परियोजना की सफलता को दिवंगत पूर्व अध्यक्ष धीरज काकाती को समर्पित करते हैं, जिन्होंने 2021 में अपने अध्यक्ष पद के दौरान इस पहल की शुरुआत की थी। हमने इसे दो साल तक चलाया।''

चायपत्ती चुनना एक कठिन काम है जो काफी हद तक अच्छी दृष्टि पर निर्भर करता है। इसके लिए हाथों और आँखों का तालमेल, निपुणता और तेज गति की आवश्यकता होती है। भत्रा कहते हैं, ''एक बढ़िया काली या हरी चाय के लिए, चायपत्ती चुनने वालों को चाय की झाड़ी से पहली दो पत्तियों और एक नई कली को सावधानीपूर्वक तोड़ना होता है, हालाँकि, असम में कई चायपत्ती चुनने वालों की दृष्टि खराब होती है। पैसे की तंगी होने के कारण, उनके पास चश्मे नहीं होते, जिससे उनके लिए अपनी क्षमता के अनुसार अपना काम करना मुश्किल हो जाता है।''

चश्मा देखने की क्षमता को बढ़ाकर और आंखों के तनाव को कम करके चायपत्ती चुनने वाले की उत्पादकता में काफी सुधार ला सकता है। क्लब ने खराब दृष्टि वाले चायपत्ती चुनने वालों को चश्मा दिया।

**पैसे की तंगी होने के कारण, उनके पास चश्मे नहीं होते, जिससे उनके लिए अपनी क्षमता के अनुसार अपना काम करना मुश्किल हो जाता है।**

*गुवाहाटी में मीठे पानी की झील दीपोर बील में मछलियां छोड़ी जा रही हैं।*

क्लाब 2014 से दृष्टिबाधित युवाओं को वार्षिक अर्चना और अतुल चंद्र गोस्वामी मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित किया जा रहा है। इस पुरस्कार में ₹10,000 का पुरस्कार और एक प्रशस्ति पत्र शामिल है। पिछले साल यह पुरस्कार गुवाहाती ब्लाइंड है स्कूल के 14 वर्ष नेत्रहीन छत्र शहीद अपमान को संगीत में उनकी दक्षता के झूठ प्रदान किया गया पुरस्कार में 10,000 रुपये और एक प्रशस्ति पत्र शामिल है। पिछले साल यह पुरस्कार गुवाहाटी ब्लाइंड हाई स्कूल के 14 वर्षीय नेत्रहीन छात्र शाहिद अफरीदी को संगीत में उनकी दक्षता के लिए प्रदान किया गया था। भारतीय स्टेट बैंक के पूर्व एजीएम विकास दास, जो दृष्टिबाधित भी हैं, इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे।

### थैलेसीमिया का निवारण

इस साल की शुरुआत में, क्लब ने अपने अध्यक्ष नवाज्योति शर्मा के नेतृत्व में थैलेसीमिया विकार वाले लोगों के इलाज के लिए गुवाहाटी में मारवाड़ी अस्पतालों के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। अस्पताल रक्त आधान की व्यवस्था करेगा और रोगियों को मुफ्त दवाएं प्रदान करेगा, और सेवाओं के लिए क्लब अस्पताल को रियायती मूल्य भुगतान करेगा। एक धन संचयक सांस्कृतिक कार्यक्रम ने टिकटों की बिक्री और एक पेंटिंग की नीलामी के जरिए क्लब को ₹8 लाख, ₹50,000 जुटाने में मदद की। इसमें से ₹4.8 लाख क्लब के ट्रस्ट में परियोजनाओं के लिए रखे गए।

एक अन्य पहल में, रोटेरियन्स ने मछली विविधता को बढ़ावा देने और झील के कमजोर पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण करने के उद्देश्य से गौहाटी के दक्षिण-पश्चिम में स्थित मीठे पानी की झील दीपोर बील में 50,000 मछलियों को छोड़ा। भत्रा कहते हैं, ''यह परियोजना पिछली परियोजना की सफलता पर बनाई गई थी, जहां हमने अपने आरसीसी चक्रदेव की मदद से कलितापारा गांव में मछली पालन को एक स्थायी आजीविका का अवसर दिया था, तब से ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और वे उत्साह के साथ इस व्यवसाय को अपना रहे हैं।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

# समावेशी विद्यालयों में विशिष्ट बच्चों की सहायता

रशीदा भगत

दो साल पहले जब रोटरी क्लब साउथ मद्रास के अध्यक्ष निर्वाचित घोषित हुए तो जवाहर निचानी भली भाँति जानते थे कि 2022-23 में क्लब लीडर के रूप में उनके क्लब की मुख्य परियोजना क्या होगी - बच्चों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचा कर उन का भविष्य सुधारना।

''हम सभी को ज्ञात है कि हर बच्चे को शिक्षा ग्रहण करने, आविष्कार करने और इस ब्रह्मांड के चमत्कारों की खोज करने का बुनियादी और मौलिक अधिकार है वो भी बिना किसी पक्षपात के। यही वो विद्या जो कल के इन नागरिकों को अपने कार्यस्थल पर प्रतिस्पर्धा करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के समान अवसर उपलब्ध करवाएगी,'' वह कहते हैं।

परन्तु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच करवाते समय, उन बच्चों को भी समान अवसर उपलब्ध करवाना और समावेशीहोना महत्वपूर्ण है जो अलग हैं... ऑटिस्टिक, डिस्लेक्सिक या एडीएचडी (अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर) के साथ-साथ डाउन सिंड्रोम वाले बच्चों को भी।

जब वह इस परियोजना की बुनियादी चीजों पर गौर कर रहे थे, उसमें लगभग ₹30 लाख के वैश्विक अनुदान का आवेदन भी शामिल था, उसी दौरान उनकी मुलाकात एक भाषण चिकित्सक कल्पना कुमार से हुई, जो 10 वर्षों से अधिक समय से समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं। ''वह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपचार केंद्र (थेरेपी सेंटर) चलाती हैं; उन्होंने कहा कि आपके पास विशेष बच्चों की परवरिश के क्षेत्र में काफी अनुभव है और हमारा रोटरी क्लब समावेशी शिक्षा पर एक विस्तृत परियोजना करना चाहता है, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों के लिए, जहां विशेष बच्चों को समान शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए बुनियादी ढांचे के साथ कुशल शिक्षकों की भी कमी है। आप हमारे क्लब में शामिल होकर रोटरी से क्यों नहीं जुड़ते,'' कल्पना ने याद किया।

> मेरे साथ क्लब के सदस्य मुकुंद वेदाबुदी ने इस परियोजना के लिए शहर के केंद्र से बहुत दूर स्थित स्कूलों की पहचान करने के लिए 1,000 किमी से अधिक की यात्रा की है, जिसका नाम हमने 'फ्रीडम थ्रू एजुकेशन' रखा है।
>
> **जवाहर निचानी**
> IPP, रोटरी क्लब मद्रास साउथ

जब उन्हें इस प्रोजेक्ट के बारे में बताया तो उन्होंने तुरंत हामी भर दी और रोटरी क्लब साउथ मद्रास की सदस्य बन गईं। क्लब ने कुछ समावेशी स्कूलों की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया जहां निम्न मध्यम वर्ग और मध्यम वर्ग के बच्चे पढ़ते हैं और जो विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए भी खुले हैं। मेरे साथ क्लब के सदस्य मुकुंद वेदाबुदी ने इस परियोजना के लिए शहर के केंद्र से बहुत दूर स्थित स्कूलों की पहचान करने के लिए 1,000 किमी से अधिक की यात्रा की है, जिसका नाम हमने 'फ्रीडम थ्रू एजुकेशन' रखा है, (शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्रता)

*एक शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को सीढ़ी चढ़ने में मदद करती हुई।*

निचानी कहते हैं, जिनका कार्यकाल क्लब अध्यक्ष के रूप में हाल ही में समाप्त हुआ है।

इस परियोजना से लाभान्वित होने वाले आठ स्कूलों की पहचान करने के लिए कई मापदंड रखे गए थे। इनमें बेहतर स्कूल प्रबंधन और संकाय, स्वच्छ परिवेश और स्कूल की सुविधाओं में सुधार के लिए हितधारकों का उत्साह और सहमति ज़रूरी थी। अंत में, स्कूलों का चयन किया गया, इन आठ स्कूलों में छह समावेशी स्कूल थे जो विशेष जरूरतों वाले बच्चों को शिक्षित करने के लिए उन्हें प्रवेश देने और विशेष सुविधाएं प्रदान करने के लिए तैयार थे।ये हैं बाला मंदिर, मदुराम नारायण केंद्र, पद्मा सुब्रमण्यम बाला भवन, सरस्वती विद्यालय, सर और एम वेंकट सुब्बाराव और सर और लेडी वेंकट सुब्बाराव संस्थान हैं।

''स्कूलों की पहचान और अपना शोध पूरा करने के बाद हमने स्कूलों को विशेष बच्चों के लिए आवश्यक विशेष उपकरणों और सेवाओं से सुसज्जित करने का काम शुरू किया।'' ऐसे बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी और व्यावसायिक थेरेपी बहुत महत्वपूर्ण हैं और बच्चे में भी किसी तरह के विकार का पता चलने पर तुरंत इलाज शुरू करना होता है जो उसकी सीखने की क्षमताओं पर प्रभाव डालता है, कल्पना कहती हैं।

निचानी ने बताया कि उन्होंने इससे पहले भी स्कूल के कई प्रोजेक्ट किए हैं ''तब मैं राउंड टेबल में था और मेरा यकीन है कि गरीबी ख़त्म करने के लिए शिक्षित होना अति आवश्यक है । इस प्रमुख परियोजना को करने के लिए, हमारी टीम में अचानक कल्पना जैसी अनुभवी विशेषज्ञ का पदार्पण एक वरदान था। वह इस क्षेत्र में सिद्धहस्त हैं, उन्होंने सिंगापुर,ऑस्ट्रेलिया आदि के विशेषज्ञों के साथ काम किया है और कई विकलांग बच्चों की सहायता की है। वह लगभग 130 बच्चों के साथ काम करती है और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का साक्षात्कार कर उनके आईक्यू स्तर का मूल्यांकन करती है, उनका मस्तिष्क किस सीमा तक ग्रहण कर सकता है आदि । उनके ही प्रयासों का परिणाम है कि अन्य कई लोगों को इस क्षेत्र के बारे में जानकारी हुई है और समावेशी होना आज की ज़रुरत है; अब कई स्कूल इन बच्चों के लिए अधिक सीट उपलब्ध करवाने के लिए आगे आ रहे हैं,'' उनका कहना है।

ऐसे स्कूलों और बच्चों को सहायता की आवश्यकता बहुत अधिक पड़ती है, इस बात पर ज़ोर देते हुए उन्होंने कहा, ''कभी-कभी

**अक्सर कोई बच्चा ठीक से खड़ा भी नहीं हो सकता और आसानी से कोई भी नई चीज स्वीकार नहीं करता है। लेकिन हमारा उद्देश्य उन्हें स्वतंत्र बनाना है... ताकि वे दरवाजे का ताला और दरवाजे खोलने जैसे सरल कार्य कर सकें।**

एक ही बच्चे को तीन शिक्षकों की आवश्यकता पड़ती है। मैं स्वयं इन स्कूलों में गया हूं और ऐसे बच्चों को भी देखा है जिन्हें विशेष मदद की जरूरत होती है... अक्सर कोई बच्चा ठीक से खड़ा भी नहीं हो सकता और आसानी से कोई भी नई चीज स्वीकार नहीं करता है। लेकिन हमारा उद्देश्य उन्हें स्वतंत्र बनाना है... ताकि वे दरवाजे का ताला और दरवाजे खोलने जैसे सरल कार्य कर सकें। पर हमने उससे भी अधिक किया है। टच स्क्रीन और स्मार्ट टीवी के उपयोग के माध्यम से हमने बच्चों को उनकी कल्पना और विचारों को अभिव्यक्त करने में मदद की है। इस प्रक्रिया में बच्चा सीखता है।''

कल्पना जी के अनुभव और विशिष्टता की सहायता से स्कूलों

*ऊपर: आईपीपी जवाहर निचानी और उनकी पत्नी अक्षया एक विशेष बच्चे को पुरस्कार देते हुए।*

*नीचे: एक स्कूल में रोटरी क्लब मद्रास साउथ द्वारा स्थापित विशेष कक्षा में बच्चे विभिन्न गतिविधियाँ सीखते हुए।*

के लिए विशेष शिक्षकों का चयन किया गया। अगला महत्वपूर्ण कदम बहु-विकलांगता वाले बच्चों की मदद के लिए स्कूलों में सही साधन और उपकरण मुहैया करना था। इनमें बच्चों की वेस्टिबुलर गतिविधियों में सुधार के लिए टी स्विंग, शूटर और बैलेंस बोर्ड, बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमताओं में सुधार के लिए एक डिजिटल बोर्ड, पहेलियाँ और अन्य सहयोगी शिक्षण सामग्री शामिल हैं। ''सही लोगों को नियुक्त करने के साथ मैंने स्कूल को ऐसे उपकरणों से सुसज्जित करने में सहायता की है जिनकी ज़रुरत बहु-विकलांगता वाले बच्चों को पड़ती है।''

''इन सब चीजों में धन की आवश्यकता पड़ती है और ये सरकारी स्कूल सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम शुल्क के अन्यत्र कोई शुल्क नहीं ले सकते। वास्तव में, जिस तरह के उपकरण हमने इन स्कूलों को दिए हैं, वे तो महंगे और संभ्रांत स्कूलों में भी उपलब्ध नहीं हैं,'' वह आगे बताती हैं। क्लब के अध्यक्ष निचानी और उनकी टीम धन संग्रहण में जुट गई। पूर्व में उन्होंने करीब ₹30 लाख के वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन किया था, ''लेकिन उस समय अनुदान नहीं मिल सका था,'' उन्होंने बहुत सारे सवाल पूछे थे और बहुत सारे संशय व्यक्त किए थे, ''लेकिन मैं इस परियोजना को अपने कार्यकाल में पूरा करना चाहता था, इसलिए हमने स्वयं ही धन एकत्रित करने का निर्णय किया।''

कुल मिलाकर 8 स्कूलों पर लगभग ₹85 लाख खर्च किये गये; ''हमने नए और विशिष्ट शिक्षकों की नियुक्ति और शैक्षणिक प्रशिक्षण पर लगभग ₹14 लाख खर्च किए हैं, विशेष जरूरत वाले बच्चों के लिए कंप्यूटर, टच स्क्रीन टीवी और अन्य उपकरण खरीदने पर ₹20 लाख खर्च किए गए। केमफैब अल्कलिस ने अपने सीएसआर फंड से ₹2 लाख दिए, उनके ट्रस्ट चलाने वाले दो सदस्यों में से एक ने ₹60 लाख दिए, क्लब के अन्य सदस्यों ने ₹13 लाख का दान दिया। वह कहते हैं कि शहर से थोड़ी दूर के स्कूलों को इसलिए चुना गया क्योंकि ''इन जगहों पर विकलांग बच्चों वाले माता-पिता के लिए अपने बच्चों के लिए उचित प्रकार की शैक्षणिक सहायता ढूंढना बहुत मुश्किल होता है।''

**इन लाभार्थी स्कूलों में बच्चों के माता-पिता बहुत खुश हैं, क्योंकि अंततः वो अपने बच्चों को मुख्यधारा की स्कूली शिक्षा दिलवा रहे हैं। सच कहूँ तो वे अभिभूत हैं क्योंकि विकलांग बच्चों के लिए ऐसी विशेष सेवाएँ प्राप्त करने में बहुत पैसा खर्च होता है।**

इन लाभार्थी स्कूलों में बच्चों के माता-पिता बहुत खुश हैं, क्योंकि अंततः वो अपने बच्चों को मुख्यधारा की स्कूली शिक्षा दिलवा रहे हैं। ''सच कहूँ तो वे अभिभूत हैं क्योंकि विकलांग बच्चों के लिए ऐसी विशेष सेवाएँ प्राप्त करने में बहुत पैसा खर्च होता है। मेरा मानना है कि रोटरी द्वारा किया गया यह एक अनोखा प्रोजेक्ट है और बहुत महत्वपूर्ण है यह याद रखना कि ऐसे विशेष बच्चों के लिए, शैक्षणिक और चिकित्सा पुनर्वास साथ-साथ चलते हैं, इसीलिए व्यवसाय चिकित्सा बहुत महत्वपूर्ण है,'' कल्पना कहती हैं।

निचानी ने कहा कि शोध के दौरान और इस परियोजना के कार्यान्वयन के बाद छात्रों और अभिभावकों के विचारों को भी ध्यान में रखा गया था ताकि यह आकलन किया जा सके कि क्या वे खुश थे या उन्हें कोई परेशानी थी। कुल मिलाकर रोटेरियनों ने दो स्कूलों में छह शिक्षकों को नियुक्त किया है; ''ऐसे बच्चों को छाया शिक्षकों या पैरा-शिक्षकों की आवश्यकता होती है जो निरंतर बच्चे की प्रगति की निगरानी करते हैं और सहायता करते हैं, भाषण में कठिनाई या बाधा वाले बच्चों की मदद करने के लिए भाषण चिकित्सक, बच्चे के व्यवहार और आदतों को प्रशिक्षित करने और संशोधित करने में मदद करने के लिए व्यवहार चिकित्सक, मार्गदर्शन के लिए और सिखाने के लिए व्यावसायिक चिकित्सक की आवश्यकता होती है वैज्ञानिक आधार के माध्यम से, एक समग्र परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हुए, विशेष शिक्षक और एक मनोवैज्ञानिक जो व्यक्तिगत शैक्षिक योजना शुरू करते हैं।''

इस परियोजना का उत्साहपूर्वक समर्थन करने के लिए वह अपने क्लब के सदस्यों के आभारी हैं।

*एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा*

# जब रोटरी ने एक शहर को परिवर्तित किया

**विद्योत्तमा शर्मा**

रोटरी न केवल लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठाती है बल्कि अपने परोपकारी कार्यों से पूरे शहर की तस्वीर भी बदल सकती है, अपने परोपकारी कार्यों से। यह कहानी है वापी के हरिया एल जी रोटरी अस्पताल की, जो शहर का पहला अस्पताल है, जिसने गुजरात के सर्वाधिक प्रसिद्ध औद्योगिक शहर का डीएनए ही बदल दिया है। आइये एक नज़र डालते हैं, दुनिया की सबसे दीर्घकालिक टिकाऊ रोटरी परियोजनाओं में से एक पर।

1960 और 1970 के दशक में जब कारखानों ने वापी में पैर पसारने शुरू किए और इस शहर-की नगर पालिका ने औद्योगीकरण की

दुनिया में झिझकते हुए कदम रखा, तो वापी का रहने योग्य सूचकांक कम था। बहुत कम। एक अच्छे अस्पताल की तो बात रहने ही दीजिए, वहां एक ढंग का क्लीनिक भी नहीं था जहां आपात स्थिति में किसी मरीज को ले जा सकें।

''पूरे शहर में केवल एक डॉक्टर, जहां कुत्ते और सांप हर जगह स्वतंत्र रूप से घूमते दिख जाते थे।'' याद करते हैं कल्याण बेनर्जी, रोटरी इंटरनेशनल के पूर्व अध्यक्ष और वापी में एक

**पूरे शहर में केवल एक डॉक्टर सेवा करते थे, जहां कुत्ते और सांप हर जगह स्वतंत्र रूप से घूमते थे।**

**कल्याण बेनर्जी**
PRIP और चेयरमैन रोटरी चैरिटेबल ट्रस्ट

मशहूर और चिर परिचित नाम, अपने सामाजिक कार्यों के कारण रोटरी और यूपीएल के माध्यम से, जिस कंपनी से वे पिछले पांच दशकों से जुड़े हुए हैं। ''शहर में मच्छरों की गंभीर समस्या थी और मूसलाधार बारिश का सामना करना पड़ता था। लोग अपनी सभी महत्वपूर्ण जरूरतों के लिए प्रमुख शहरों पर निर्भर थे।'' बेनर्जी 60 के दशक के अंत में कंपनी के मालिक और अध्यक्ष रजनीकांत श्रॉफ (रज्जू श्रॉफ के नाम से लोकप्रिय)

*अस्पताल परिसर में निर्माणाधीन कैंसर सेंटर।*

के साथ यूनाइटेड फॉस्फोरस की स्थापना में मदद करने के लिए वापी आए थे।

''दिल का दौरा पड़ने से एक दिन हमारे एक मित्र का देहांत हो गया। डॉक्टर चिकित्सीय समस्या का निदान ही नहीं कर पाए इसलिए, सही समय रहते उन्हें तुरंत इलाज नहीं मिला,'' बेनर्जी याद करते हैं। ''हम कुछ नहीं कर सके थे। इस घटना ने हमें बुरी तरह झकझोर दिया था। हमने सोचा कि अगर हमें इस शहर में रहना है, तो एक अस्पताल होना तो ज़रूरी है, यहाँ की सख्त ज़रुरत है।''

दिल का दौरा पड़ने से एक दिन हमारे एक मित्र का देहांत हो गया। हम कुछ नहीं कर सके। हमने सोचा कि अगर हमें इस शहर में रहना है, तो एक अस्पताल होना ज़रूरी है।

## एक छोटा क्लिनिक

इसलिए, जब यूनाइटेड फॉस्फोरस शुरू किया जा रहा था तो बेनर्जी और चेयरमैन की पत्नी सैंड्रा श्रॉफ ने भी समानांतर स्तर पर बुनियादी ढांचे का निर्माण शुरू कर दिया, जिसकी शहर को बेहद जरूरत थी। श्रॉफ ने ज्ञान धाम स्कूल पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया और बेनर्जी ने शहर की चिकित्सकीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक क्लिनिक के निर्माण में अपनी ऊर्जा का व्यय किया। क्लिनिक खोलने का विचार रोटरी क्लब वापी से आया, जिसके वह सदस्य हैं। उनके शामिल जब वो इसमें शामिल थे तो, यूनाइटेड फॉस्फोरस (तब यह यूपीएल नहीं बना था) ज्यादा देर पीछे नहीं रह सकता था। अपने प्रारंभिक वर्षों में भी कंपनी अपनी आस्तीन पर सीएसआर का तमगा धारण करती थी जब कि सीएसआर शब्द को लोग ठीक से जानते भी नहीं थे।

पर यह उतना आसान नहीं था। किसी भी नई कंपनी के लिए समय, ऊर्जा के साथ बड़े पैमाने पर प्रयासों की आवश्यकता होती है। एक नये क्लिनिक की भी वही ज़रुरत थी। दोनों की एक ही समय में। ''प्रारम्भ में हमें नहीं पता था कि शुरुआत कहां से करें। हमने छोटे से शुरुआत की,'' बेनर्जी कहते हैं। यह 1978 की बात है, जब रोटरी क्लब वापी के कुछ रोटेरियन, यूनाइटेड फॉस्फोरस के कुछ कर्मचारी और इंजीनियर्स एसोसिएशन के कुछ सदस्य 10-बेड वाले ओपी क्लिनिक बनाने के लिए सम्मिलित हुए थे। ''हमने एक एक्स-रे मशीन लगाईं और इसके साथ हृदय परीक्षण शुरू किया - मुख्यतः दिल के दौरे की प्राथमिक देखभाल। हमने एम्बुलेंस सेवा भी शुरू की। लेकिन अभी भी देखभाल के लिए हमारे यहां उन्नत चिकित्सा सुविधाएं नहीं थीं। लेकिन कम से कम एक शुरुआत तो हुई,'' वह याद करते हैं। साझेदारी और दान आमंत्रित करने के लिए, क्लब ने एक ट्रस्ट का गठन किया, रोटरी चैरिटेबल ट्रस्ट।

*अस्पताल के नवजात शिशु आईसीयू में एक शिशु का इलाज।*

## एक छोटा अस्पताल

लेकिन वापी बढ़ने लगा और इसका विस्तार द्रुत गति से हुआ। यहाँ अधिक लोग आ कर बसने लगे। बढ़ते शहर की ज़रूरत को एक अकेला क्लिनिक पूरा नहीं कर सकता। वापी में ''दुनिया में पानी की आपूर्ति व्यवस्था तो सबसे अच्छी थी,'' लेकिन बिजली की आपूर्ति कहीं-कहीं थी, जिसकी वजह से कोई कुछ भी बनाना चाहता, उसे बनाने का अवसर था। इस शहर को हर चीज की जरूरत थी। 1982 में दस बिस्तरों से 24 बिस्तर हो गए और फिर रोटरी निरामया अस्पताल का निर्माण हुआ।

रोटेरियनों को अस्पताल के लिए जमीन कैसे मिली, इसकी कहानी भी दिलचस्प है। 1967-68 में वापी में गुजरात औद्योगिक विकास निगम

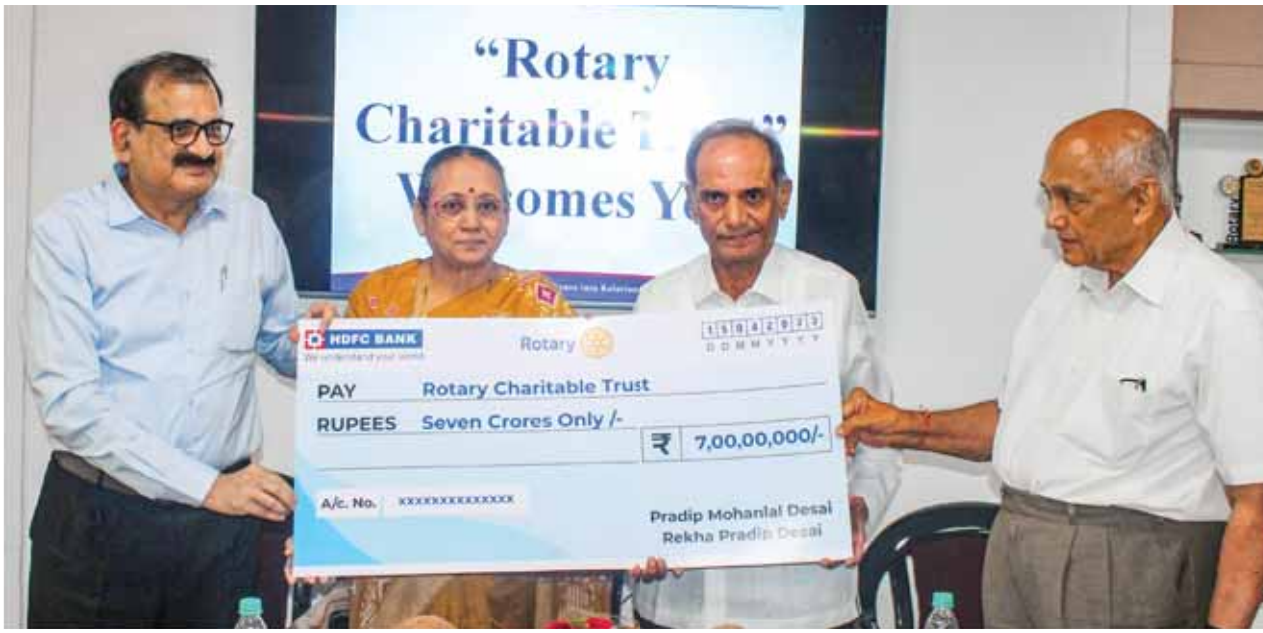


*दानकर्ता दंपत्ति पी एम देसाई और रेखा ने कैंसर केंद्र के निर्माण के लिए पीआरआईपी और रोटरी चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी (दाएं) और हरिया एल जी रोटरी हॉस्पिटल के मुख्य चिकित्सक और निदेशक, मेडिकल सर्विसेज डॉ एस एस सिंह को चेक सौंपा।*

(जीआईडीसी) की स्थापना की गई थी। शुरु में ही रज्जू श्रॉफ इसके बोर्ड सदस्य बन गये। रोटरी और यूपीएल एक अस्पताल का निर्माण कर रहे थे, यह शहर के लिए एक बड़ी खबर थी और जब शिक्षा और चिकित्सा सेवाओं हेतु जमीन के लिए जीआईडीसी से संपर्क किया गया, तो जीआईडीसी ने पहले से स्थापित ज्ञान धाम ट्रस्ट को स्कूल के लिए और इसके माध्यम से रोटरी ट्रस्ट को भी, अस्पताल के लिए मुफ्त जमीन दे दी।

यूनाइटेड फॉस्फोरस के मुख्य अभियंता और रोटेरियन प्रफुल्ल देवानी कहते हैं, ''शुरुआती चरणों में, हमारे पास जरा भी संसाधन नहीं थे - वित्तीय या अन्य।'' इसलिए, अस्पताल हर चीज़ के लिए कॉर्पोरेट सहायता पर निर्भर था। ''उदाहरण के लिए, यदि किसी ट्यूब लाइट या बिजली के बल्ब की मरम्मत करनी हो या उसे बदलना हो तो कंपनी से ही इलेक्ट्रीशियन आकर ठीक करता था। इसी तरह, यदि कोई शौचालय अवरुद्ध हो जाता या बाथरूम में समस्या होती, तो कंपनी समस्या को ठीक अपना प्लंबर भेजती थी । एम्बुलेंस के लिए, रोटेरियनों ने व्यक्तिगत गारंटी दी थी क्योंकि व्यक्तिगत गारंटी के अभाव में ऋण नहीं मिलता।'' वो शुरुआती दौर था लेकिन रोटरी की सेवा भावना की खबरें सम्पूर्ण वापी और उसके बाहर भी फैल गईं।

**रोटरी का ये सपना साकार करने में रोटेरियनों ने अपना समय और ऊर्जा दोनों लगाया। सुबह पहले वे अस्पताल जाते, फिर अपने कार्यालय, ब्रेक मिलता तो फिर अस्पताल जाते और कभी-कभी शाम को भी चले आते थे।**

## मदद रोटेरियनों से

रोटरी का ये सपना साकार करने में रोटेरियनों ने अपना समय और ऊर्जा दोनों बहुत लगाई। सुबह पहले वे अस्पताल जाते थे, फिर अपने कार्यालय जाते थे, ब्रेक मिलता तो फिर अस्पताल जाते और कभी-कभी शाम को भी। वापी में कई दवा कंपनियाँ थीं और कई कंपनियों के मालिक रोटेरियन भी थे। इसलिए, जो कंपनियाँ पैसे से मदद नहीं कर सकती थीं उन्होंने सर्वोत्तम संभव दरों पर दवाएँ देकर मदद की।

अब अस्पताल का विस्तार करना था। रोटरी के अच्छे काम को देखते हुए, हरिया ग्रुप ने रोटरी चैरिटेबल ट्रस्ट के साथ हाथ मिलाया और लखमशी गोविंद हरिया अस्पताल के निर्माण की लागत में सहयोग करने के लिए आगे आए। अस्पताल का नाम अब हरिया एलजी रोटरी हॉस्पिटल रखा गया। हरिया ग्रुप के दो प्रतिनिधि और पांच रोटेरियन ट्रस्टी बने। बेनर्जी उनमें से एक थे। वह अब ट्रस्ट के तीसरे अध्यक्ष हैं। बाद में अस्पताल 32 बिस्तरों की सुविधा वाला हो गया। एक डॉक्टर से, यह अपने स्वयं के आर्थोपेडिक डॉक्टर और फिर एक सर्जन तक पहुंच गया और जैसा कि उर्दू का शेर है, *लोग साथ आते गए और कारवां बढ़ता गया।* रोटरी के सपने को अब ठोस आधार मिल गया था।

250 बिस्तरों वाला यह अस्पताल आज स्वयं के ट्रॉमा सेंटर के साथ एक सुपर स्पेशलिटी अस्पताल बन चुका है। अस्पताल के मुख्य आईसीयू (गहन चिकित्सा इकाई) में ही 54 बिस्तर हैं। विभिन्न खंडों में भी भिन्न भिन्न आईसीयू हैं और सभी आईसीयू में मिलाकर कुल

संख्या लगभग 75 बिस्तर हो गई है, यह एक आईसीयू से शुरू किया गया था तब से काफी प्रगति हुई है।

इस अस्पताल में अब 70 पूर्णकालिक डॉक्टर हैं (चिकित्सा अधिकारियों सहित) और विभिन्न विभागों (रेडियोलॉजी, कार्डियोलॉजी, सर्जरी, स्त्री रोग, आघात देखभाल और आपातकालीन सेवाएं, ऑर्थोपेडिक्स, त्वचाविज्ञान, दंत चिकित्सा, नेत्र विज्ञान और न्यूरोसर्जरी सहित) में लगभग 80 अतिथि डॉक्टर हैं। चार ऑपरेशन थिएटर, एक नेत्र विज्ञान ऑपरेशन थिएटर के साथ यहां एक ब्लड बैंक भी है।

## कैंसर देखभाल

अब एक कैंसर केंद्र विकिरण विंग सहित तैयार हो रहा है। इसके शुरू होने के पश्चात कैंसर मरीजों को इलाज के लिए मुंबई नहीं जाना पड़ेगा। ''सिर्फ यही एक सुविधा हमारे पास नहीं थी।'' मुख्य चिकित्सक और निदेशक, मेडिकल सर्विसेज और रोटेरियन डॉ एसएस सिंह कहते हैं, ''आकार और परिमाण सन्दर्भ में, यह मुंबई के टाटा कैंसर अस्पताल जैसा तो नहीं है, लेकिन हम वो सभी सेवाएं प्रदान करेंगे जो वहां उपलब्ध हैं। हमारे पास ऑन्कोलॉजिस्ट, ऑन्को-सर्जन और रेडियो थेरेपिस्ट की एक टीम है। और हम जल्द ही नवीनतम विकिरण मशीन लाएंगे। हमारा लक्ष्य है कि हर गरीब मरीज जो ईएसआईएस या *आयुष्मान योजना* जैसी सरकारी योजनाओं पर निर्भर है, वो भी हमारे अस्पताल में इलाज करा सके।''

दुनिया में रोटरी की सबसे लंबे अरसे तक चलने वाली कुछ स्थायी परियोजनाओं में से एक, इस अस्पताल के महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 15 रोटरी अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष अपनी भारत यात्रा के दौरान यहां आ चुके हैं।

ट्रस्ट की कुल 30,000 वर्ग मीटर भूमि में से लगभग 1.25 लाख वर्ग फुट क्षेत्र में निर्मित, विकिरण विंग के साथ, अगले साल जून तक कैंसर वार्ड बनने के बाद निर्मित क्षेत्र में 40,000 वर्ग फुट और जुड़ जाएगा। इसमें चार मंजिलें होंगी, प्रत्येक मंजिल 10,000 वर्गफुट तक होगी।

*बाएं: रोटरी अस्पताल का शिलान्यास समारोह।*

*पीआरआईपी फ्रैंक डेवलिन ने 19 फरवरी 2003 को सिल्वर जुबली ब्लॉक की आधारशिला रखी।*

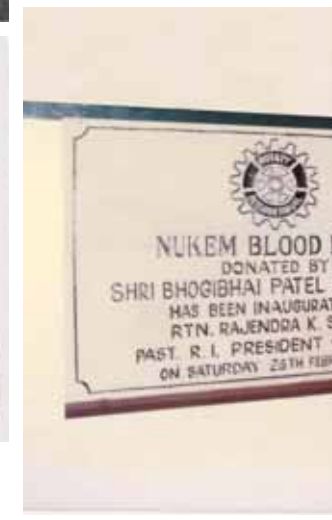

*8 दिसंबर 2004 को सिल्वर जुबली वार्ड के उद्घाटन पर पीआरआईपी ग्लेन एस्टेस।*

*ऊपर: पहले ऑपरेशन थिएटर का उद्घाटन 21 मार्च 1981 को रो ई अध्यक्ष (1982-83) स्टेनली मैककैफ्रे द्वारा किया गया था। बाई ओर पीआरआईपी बेनर्जी नज़र आ रहे हैं।*

*फरवरी 1994 में पीआरआईपी राजेंद्र साबू द्वारा नुकेम ब्लड बैंक का उद्घाटन।*

## नर्सिंग कॉलेज

सैंड्रा श्रॉफ ROFEL (रोटरी फाउंडेशन फॉर एजुकेशन एंड लर्निंग) कॉलेज ऑफ नर्सिंग भी इस अस्पताल से सम्बद्ध है, जिसे लगभग 20 साल पहले शुरू किया गया था। दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय से संबद्ध नर्सिंग कॉलेज, डिप्लोमा, बीएससी और एमएससी पाठ्यक्रमों के साथ प्रति वर्ष 100 से अधिक नर्सों को प्रशिक्षण दे रहा है। डॉ सिंह कहते हैं, ''पिछले साल से, कॉलेज ने एक बहुत अच्छी सिमुलेशन लैब शुरू की है जो नर्सों को हाई फिडेलिटी मैनिकिन पर सब कुछ सिखाती है, इसलिए उन्हें सीधे मरीजों पर सीखना नहीं पड़ता है।''

हालांकि प्रशिक्षण उपरान्त कुछ नर्सें विदेश चली जाती हैं और कुछ अपने शहर लौट जाती हैं और लगभग 20 से 30 प्रतिशत अस्पताल में समायोजित हो जाती हैं, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी सोमेश दयाल ने कहा।

रोटरी अस्पताल सब लोगों के लिए खुला है, किसी के लिए भी प्रवेश वर्जित नहीं है। ''मरीज के अस्पताल में भर्ती होते ही तुरंत इलाज शुरू हो जाता है, हम राशि जमा होने का इंतजार नहीं करते और न ही हमें ये चिंता रहती है कि मरीज के साथ कोई रिश्तेदार है या नहीं,'' डॉ सिंह कहते हैं।

दयाल कहते हैं, ''इस अस्पताल में दुर्घटना पीड़ितों को महाराष्ट्र के कासा या मनोर तक से यहां लाया जाता है, जो अस्पताल से 70 से 80 किलोमीटर दूर हैं। कभी-कभी कुछ मरीज़ उपचार के बाद भुगतान नहीं करते और कभी-कभी,

*अस्पताल में नेत्र चिकित्सा विंग का उद्घाटन करने के बाद पीआरआईपी लुइ विसेंट गिये (बीच में) अपनी पत्नी एलेना क्रूज़, पीआरआईपी बेनर्जी (दाएं) और बिनोटा (बाएं से दूसरी)।*

**मरीज़ के अस्पताल में भर्ती होते ही तुरंत इलाज शुरू हो जाता है, हम राशि जमा होने का इंतजार नहीं करते और न ही हमें ये चिंता रहती है कि मरीज़ के साथ कोई रिश्तेदार है या नहीं।**

**डॉ एस एस सिंह**
निदेशक, चिकित्सा सेवाएँ

यदि उचित उपचार के बावजूद किसी मरीज की अस्पताल में मृत्यु हो जाती है और परिवार भुगतान करने में असमर्थ होता है, तो उसकी लागत ट्रस्ट वहन करता है।''

इस अस्पताल का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष, 2011 से यहां सभी मरीजों के लिए डायलिसिस मुफ्त है। कोई भी मरीज यहां आकर डायलिसिस करवा सकता है। इसके लिए अस्पताल ने एक प्रणाली तैयार की है। एक रोटेरियन या कर्मचारी अपने जन्मदिन या शादी की सालगिरह पर स्वेच्छा से इस मौके पर ₹7,500 का दान कर सकता है। कमी पड़ने की स्थिति में, ट्रस्ट आगे आता है। दयाल कहते हैं, ''चूंकि किडनी के रोगियों को उचित पोषण की भी आवश्यकता होती है, इसलिए अस्पताल प्रत्येक मरीज को हर महीने एक राशन किट देता है जिसमें चावल, दाल, तेल, मल्टी विटामिन और अन्य महत्वपूर्ण आहार संबंधी आवश्यकताएं शामिल होती हैं। थैलेसीमिया के मरीजों का इलाज भी मुफ्त किया जाता है।''

और ऐसे मरीज़ भी हैं जिन्हें कटे होंठ और तालु की सर्जरी की आवश्यकता होती है। ''हमारा स्वास्थ्य कार्यकर्ता आंगनबाड़ियों और दूरदराज के स्थानों पर जाता है और वो मरीज जिन्हें इस सर्जरी की आवश्यकता होती है उन्हें अस्पताल लाता है। उनके परिवहन, उपचार और भोजन का खर्च अस्पताल द्वारा वहन किया जाता है,'' डॉ सिंह कहते हैं। इसके पूर्ण विकसित कार्डियक सर्जरी विभाग में पिछले पांच-छह वर्षों से वयस्कों

*कैथ लैब का एक दृश्य।*

के साथ-साथ बच्चों की भी ओपन हार्ट सर्जरी की जाती है।

550 कर्मचारियों के साथ यह अस्पताल अब आत्मनिर्भर हो चूका है। उन्होंने बताया, ''हमें मालूम है कि अगर कभी ज़रूरत पडी तो यूपीएल और अन्य उद्योग हमारी सहायता के लिए मौजूद रहेंगे, लेकिन हमारे पास अब पर्याप्त संसाधन हैं और हम स्वयं इसकी व्यवस्था कर सकते हैं।'' फिलहाल कैंसर सेंटर के लिए बड़ी राशि की आर्थिक जरूरत है और एक उदार दानकर्ता पी एम देसाई मदद के लिए आगे आए हैं।

**हम डॉक्टरों के वेतन पर कोई समझौता नहीं करते। उन्हें वापी में रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अन्य अस्पतालों के बराबर भुगतान करना आवश्यक है।**

यहां बिहार, यूपी और कर्नाटक तक से मरीज आते हैं। जब यहां के कर्मचारी छुट्टियों पर घर वापस जाते हैं, तो वे बीमार रिश्तेदारों को दूसरी राय लेने और इलाज के लिए लाते हैं, वह कहते हैं।

''समय-समय पर यहां की आवश्यकताओं को पूरा करना मेरी नीति में शुमार रहा है। मुझे नहीं लगता कि हमारे पास अंबानी अस्पताल जैसी गुणवत्ता हो सकती है, लेकिन हमेशा हमारा लक्ष्य यह रहा है कि कम निवेश के साथ हम इसके करीब कितनी सुविधाएं उपलब्ध करवा सकते हैं,'' बेनर्जी कहते हैं। ''रोटेरियन यहां अपने प्रयासों और सेवाओं के लिए एक पैसा भी नहीं लेते हैं। वे एक कप चाय पीने के भी पैसे देते हैं। पर हम डॉक्टरों के वेतन पर कोई समझौता नहीं करते। उन्हें वापी में रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अन्य अस्पतालों के बराबर भुगतान करना आवश्यक है। हमारे यहां सब ठीक है, अच्छा चल रहा है। पर निश्चित रूप से इसे और अच्छा कर सकते हैं।''

क्या अस्पताल में कोई कमी है? ''एक बार हमने स्वयं का प्रत्यारोपण और कैंसर केंद्र विकसित कर लिया तो हमारे यहां सब कुछ होगा। रोटरी के माध्यम से मैंने यहां मेडिकल टूरिज्म जैसा कुछ शुरू करने का विचार रखा है। हम अपने अस्पताल को उसी तरह से प्रचारित कर सकते हैं और बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफ्रीका सहित तीसरी दुनिया के देशों के मरीजों का इलाज बहुत ही रियायती दर पर कर सकते हैं,'' भविष्य की योजनाओं पर डॉ सिंह कहते हैं।

एक शहर जिसकी पूरी आबादी के लिए केवल एक डॉक्टर हुआ करता था, वापी, 45 वर्षों के भीतर, अब विशिष्ट उपचार के लिए पूरे भारत से रोगियों का स्वागत करता है। ■

# BECOME A DOCTOR IN USA

## XAVIER UNIVERSITY ARUBA'S 6 YEAR PROGRAMME TO TRANSFORM YOUR AMERICAN DREAM INTO A REALITY

**REGISTER FOR OPEN HOUSE**

# WEBINAR

**XUSOM.COM/INDIA/**

**Tuesday, October 3 at 7pm IST**
**Thursday, October 5 at 7pm IST**

### DOCTOR OF MEDICINE

**First 2 years**
Start @
KLE, Campus
Karnataka, India

**Next 2 years**
Continue @
Xavier's Campus
Aruba, Caribbean
island - Netherland

**Next 2 years**
Complete @
Xavier's affiliated
Teaching Hospitals
USA / Canada

### DOCTOR OF VETERINARY MEDICINE

**First 2 years**
Start @
KLE, Campus
Karnataka, India

**Next 3 years**
Continue @
Xavier's Campus
Aruba, Caribbean
island- Netherland

**Final year**
Complete @
Xavier's affiliated
Teaching Hospitals
USA / Canada

**Limited Seats**

**The session starts in January 2024**

To apply, Visit: **application.xusom.com**

Contact: Uday @+91 91 0083 0083 +91 98 8528 2712

email: infoindia@xusom.com

**XAVIER STUDENTS ARE ELIGIBLE FOR H1/J1 Visa PROGRAMME**

ADVT.

# प्रेम, पत्र और प्रतिरोध

किरण ज़ेहरा

*रीना और गिल्बर्ट रविचंद्रन का विवाह समारोह।*

अनाथालय में लड़कियों की आनंदित हंसी ने रीना रविचंद्रन के लिए अस्पताल के गलियारों की खामोश और घुटन भरी यादों को पीछे छोड़ना आसान बना दिया जहां वह इंतजार कर रही थी और अपने पति को एक दुखद दुर्घटना के बाद जानलेवा जख्मों से लड़ते हुए देख रही थी। वह कहती हैं, ''अस्पताल के शांत कमरों में, मेरी रातों की नींदें हराम हुई, इस चिंता और डर से कि आगे क्या होने वाला है। लेकिन अनाथालय में, इन परित्यक्त बच्चों की संगति में, भावनात्मक कशमकश जो मेरे जीवन को एक बार निगलने वाली थी अब उद्देश्य और उपचार की भावना से बदल गई है।''

1984 में, कलकत्ता में, एक बंगाली युवती रीना की मुलाकात अपने प्यार गिल्बर्ट रविचंद्रन से हुई जो चेन्नई के एक तमिल ईसाई थे। रविचंद्रन के परिवार के शुरुआती प्रतिरोध के बावजूद उन्होंने 1988 में शादी की। एक महीने के भीतर, उसने उनका दिल जीत लिया और 1990 में उनके बेटे के जन्म के साथ, उनका संबंध और मजबूत हो गया।

2003 में, रविचंद्रन भुवनेश्वर में एक जानलेवा मोटरबाइक हादसे का शिकार हुए जिसने उनका जीवन बदलकर रख दिया। हालांकि उनकी शारीरिक चोटों का उपचार हो गया, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से उनके मस्तिष्क में खून के थक्के जम गए। एक साल बाद, रीना ने उन्हें बिस्तर पर लकवाग्रस्त पाया, वह तुरंत ही उन्हें अस्पताल ले गई जहां मेडिकल टीम ने तीन थक्कों में से एक को सफलतापूर्वक निकाल दिया।

ठीक होने के तीन महीने बाद, वह काम पर लौट आए और उन्हें चेन्नई स्थानांतरित कर दिया गया। रविचंद्रन को काम के दौरान मिर्गी का एक गंभीर दौरा पड़ा, और उनके सहयोगियों ने उन्हें निकटतम अस्पताल पहुंचाया। रीना विमान से चेन्नई के लिए निकली, डॉक्टरों से उन्हें भर्ती करने के लिए विनती करते हुए, और परिणाम की पूरी जिम्मेदारी लेते हुए, क्योंकि उनके बचने की केवल पांच प्रतिशत ही संभावना थी। जब तक वह चेन्नई पहुंची, वह कोमा में चले गए थे। दोस्तों और परिवार जनों से अपने जीवन की नई

शुरुआत करने की सलाह के बावजूद, वह उनके साथ खड़ी रही, और उनकी ठीक होने में मदद करती रही।

दो महीने बाद, वे एक ट्रेन से घर लौट रहे थे, तब भुवनेश्वर से सिर्फ एक स्टेशन पहले, उन्हें एक और दौरा पड़ा। डर से कांपती रीना ने तेजी से काम किया, उसके दांतों के बीच एक चम्मच फंसाया ताकि वह अपनी जीभ न काट सके। उसे एक महत्वपूर्ण इंजेक्शन देना था, लेकिन उसके कांपते हाथ उसका साथ नहीं दे रहे थे। ''मैं अपने पति को पकड़कर घुटनों के बल गिर गई, और प्रार्थना करने लगी। चमत्कारिक रूप से, दौरा कम पड़ गया, लेकिन भावनाओं के उठते बवंडर का सामना करने का बिल्कुल समय नहीं था। मैंने अपने आँसू पोंछे, चम्मच उनके मुंह से हटाया, और उन्हें दिलासा दिया। जब वह होश में आये, तो उन्हें याद ही नहीं था कि उन्हें दौरा पड़ा था।''

इसके तुरंत बाद ही सर्जरियों और अस्पताल में भर्ती होने का एक दौर शुरू हो गया। 2013 में उनकी 25वीं वर्षगांठ पर, जब रीना ने रविचंद्रन को सालगिराह की शुभकामना दी तो वह उसे पहचान नहीं सके ''उन्होंने सोचा कि मैं मजाक कर रही थी और मुझे चिंता थी कि वह मेरे व्यवहार से गुस्सा हो जायेंगे। वह अपनी याददाश्त खो चुके थे,'' वह कहती है। प्राथमिक देखभालकर्ता की अपनी भूमिका में, उसने अपने पति द्वारा सहन की गई पीड़ा और अपार दर्द को प्रत्यक्ष रूप से देखा, ''जिसने मुझे गहरा भावनात्मक आघात पहुँचाया और मुझे तोड़कर रख दिया।'' दिल टूटने के बावजूद, वह उनकी सेहत के प्रति समर्पित रही और हर दिन ''एक दोस्त के रूप में'' उनसे मिलने गई, उसने टूटे हुए स्वर में कहा।

रीना ने उन्हें दिल को छू जाने वाली बातचीत में व्यस्त रखा, उनके अतीत, उनके पसंदीदा भोजन, उनके कार्यस्थल की कहानियों को साझा किया... उन्होंने रीना के काम करने की जगह को पहचान लिया और कहा कि 'उनकी पत्नी' भी वहां काम करती थी और उन्होंने रीना से पूछा कि क्या वह उसकी पत्नी को एक पत्र दे सकती है। वह सहमत हो गई।

वह कहती हैं, ''ऐसा लगा जैसे हम 1984 में वापस पहुँच गए थे, हमारे शुरुआती रोमांस के दिनों में जब हम एक-दूसरे को प्रेम पत्र भेजा करते थे।'' हालांकि अपने बेटे की देखभाल, काम, और रात में अस्पताल जाने के बीच जीवन मुश्किल हो गया था, लेकिन

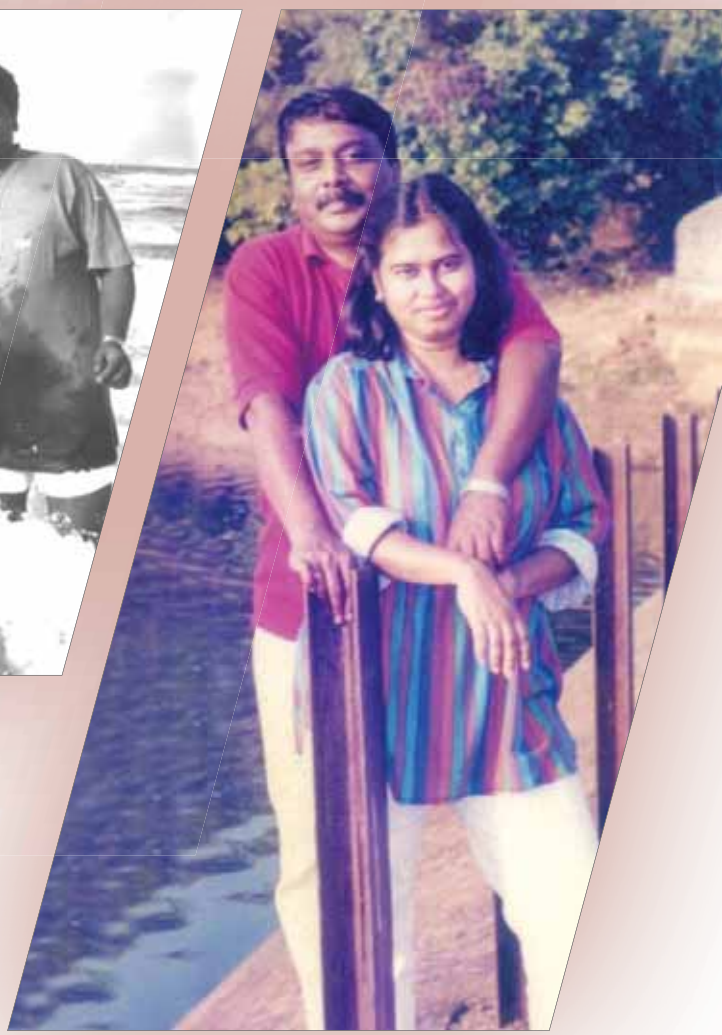

*खुशी के पल।*

**ऐसा लगा जैसे हम 1984 में वापस पहुँच गए थे, हमारे शुरुआती रोमांस के दिनों में जब हम एक-दूसरे को प्रेम पत्र भेजा करते थे।**

**रीना रविचंद्रन**

उसके पास उम्मीद के लिए ये पत्र थे। वह कहती हैं, ''मेरे परिवार की भलाई की निरंतर चिंता, तनाव और डर के बीच, ये पत्र याद दिलाते थे कि मैं उन्हें याद थी और वह मुझसे प्यार करते थे और उम्मीद की किरण अभी बाकी है।''

कुल मिलाकर, उन्होंने आश्चर्यजनक रूप से 400 पत्रों का आदान-प्रदान किया, जिनमें से प्रत्येक में वे अंतरंग बातें और उनके जीवन के रोजमर्रा के विवरण लिखते थे। इनमें से कुछ पत्रों में, उन्होंने दिली अनुरोध किए, जैसे कि यह सुनिश्चित करना कि उनकी कंपनी द्वारा वंचितों के लिए एकत्रित किया गया धन बिना किसी अड़चन के लोगों तक पहुंचे। बाकि पत्रों में, उन्होंने बस उसे लिखते रहने के लिए पेन और एक नोटबुक की मांग की।

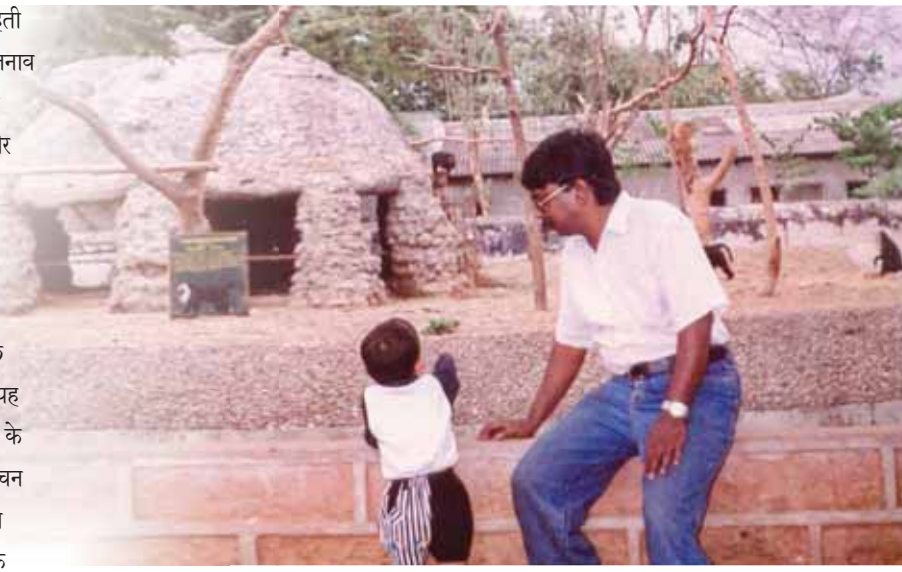

*रविचंद्रन अपने बेटे के साथ।*

फरवरी 2014 में, आशा की एक किरण निकली जब उन्होंने रीना को पहचाना और उससे बात की और कहा कि उसे इतना दुःख पहुँचाने के लिए वह माफ़ी मंगाते है। लेकिन अगले ही महीने, रविचंद्रन का अस्पताल में निधन हो गया। जब रीना अस्पताल की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद घर लौटी, तो उसने टूटे दिल के साथ महसूस किया कि, ''अब मुझे उन्हें कोई इंजेक्शन या कोई गोली नहीं देनी थी। मुझे उन्हें बार-बार देखने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मेरे पास करने के लिए अब कुछ नहीं था! यह पहली बार था जब मैंने इस बात को स्वीकार किया कि वह अब कभी घर नहीं आयेंगे,'' वह भारी आवाज़ में कहती है।

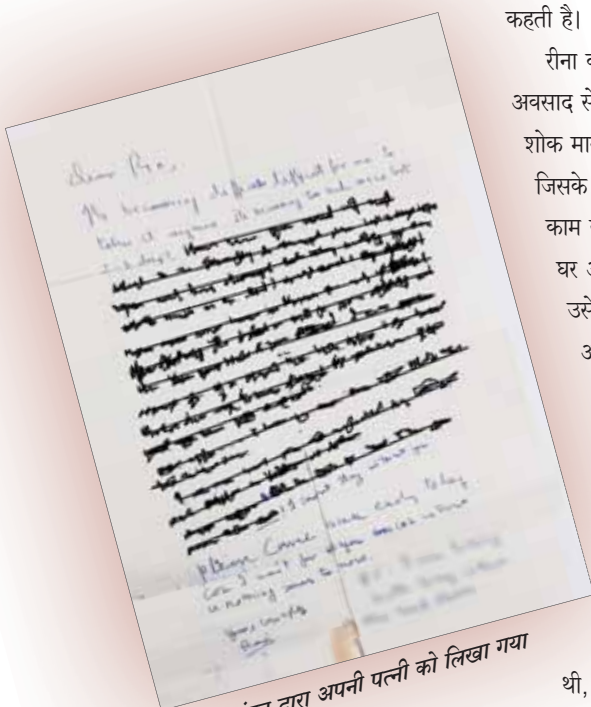

*रविचंद्रन द्वारा अपनी पत्नी को लिखा गया एक पत्र।*

रीना कई महीनों तक दुख में डूबी रही और अवसाद से जूझते हुए, ''उस व्यक्ति के जाने का शोक मानती रही जिसे मैं प्यार करती थी और जिसके साथ मैंने एक ज़िन्दगी जी थी।'' वह काम से लगभग 15 किमी पैदल चलकर घर आती थी, इस उम्मीद में कि थकावट उसे सोने में मदद करेगी। उनकी खाने की आदतें बदल गई थीं और वह ''दुखी और असहाय महसूस करती थी और कभी-कभी, निराशा और क्रोध की वजह से एकांत में रहना पसंद करती थी,'' वह आगे खाती है। उसकी पीड़ा को देखते हुए, उसके 18 वर्षीय बेटे ने अनाथ होने का डर व्यक्त किया। यह रीना के लिए एक चेतावनी थी, ''मेरे अवसाद से निपटने के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा...''

मेरे डॉक्टर मित्रों की सहायता से, रीना ने ठीक होने की यात्रा शुरू की। सकारात्मकता पर किताबें उसकी साथी बन गईं, और भुवनेश्वर के एक अनाथालय में समय बिताने से उसे एक नया दृष्टिकोण मिला। उसने अपनी दर्दनाक यादों को खुशहाल यादों में बदल दिया, उस प्यार और खुशी को याद करते हुए जो उसने और रविचंद्रन ने साझा की थी। वह कहती है, ''मदद मांगने में कोई शर्म नहीं होनी चाहिए। जीवन अपने उतार-चढ़ाव के साथ एक सुंदर यात्रा है। मैं अपने पति को कभी नहीं भूल सकती, और उनके जीवन और मुझे दिए गए उनके प्यार को सम्मानित करने के लिए, मैं एक स्वस्थ, खुशहाल जीवन जीऊंगी जब तक कि हम दूसरी तरफ फिर से नहीं मिल जाते।''

रोटरी क्लब भुवनेश्वर फ्रेंड्स के साथ अपनी सदस्यता के माध्यम से, वह उपचार की अपनी यात्रा जारी रखती है और खुद को समाज सेवा के लिए समर्पित करती है। एक क्लब परियोजना जो विशेष रूप से उनके दिल के करीब है वह है *असो गोपीबा* जिसका ओडिया अर्थ है आओ, बातें करें। रविवार की सुबह शहर के चुनिंदा पार्कों में टेबल और कुर्सियां लगाई जाती हैं। रीना और अन्य सदस्य लोगों को बातचीत करने के आमंत्रित करते है, वरिष्ठ नागरिकों तक पहुंचते है, मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता पैदा करते है, और रोटरी के काम पर चर्चा करते हैं।■

## अगस्त 2023 तक मंडल टीआरएफ योगदान

(अमेरिकी डॉलर में)

| मंडल संख्या | एनुअल फण्ड | पोलियो प्लस फंड | एंडोमेंट फण्ड | अन्य निधि | कुल योगदान |
|---|---|---|---|---|---|
| **India** | | | | | |
| 2981 | 10,601 | 405 | 0 | 0 | 11,006 |
| 2982 | 10,431 | 0 | 7,085 | 4,488 | 22,005 |
| 3000 | 39,236 | 0 | 0 | 1,339 | 40,575 |
| 3011 | 53,414 | 5,745 | 18,000 | 98,195 | 175,354 |
| 3012 | 1,574 | 0 | 0 | 1,720 | 3,294 |
| 3020 | 16,439 | 699 | 0 | 20,000 | 37,138 |
| 3030 | 7,618 | 86 | 0 | 138,163 | 145,866 |
| 3040 | 1,034 | 49 | 0 | 0 | 1,083 |
| 3053 | 4,698 | 0 | 0 | 12,439 | 17,137 |
| 3055 | 9,808 | 33 | 0 | 0 | 9,841 |
| 3056 | 2,793 | 0 | 0 | 0 | 2,793 |
| 3060 | 41,701 | 9,276 | 0 | 75,268 | 126,246 |
| 3070 | 111 | 0 | 0 | 0 | 111 |
| 3080 | 13,057 | 3,943 | 0 | 1,500 | 18,500 |
| 3090 | 21,064 | 713 | 0 | 5,121 | 26,898 |
| 3100 | 23,033 | 0 | 0 | 0 | 23,033 |
| 3110 | 24 | 0 | 0 | 0 | 24 |
| 3120 | 3,632 | 34 | 0 | 0 | 3,666 |
| 3131 | 139,111 | 151 | 6,098 | 17,224 | 162,583 |
| 3132 | 35,942 | 2,183 | 0 | 293 | 38,418 |
| 3141 | 125,148 | 1,654 | 32,000 | 204,998 | 363,800 |
| 3142 | 196,139 | 2,137 | 5,500 | 0 | 203,776 |
| 3150 | 7,985 | 296 | 50 | 45,976 | 54,307 |
| 3160 | 6,174 | 0 | 0 | 0 | 6,174 |
| 3170 | 19,076 | 18,089 | 0 | 47,288 | 84,453 |
| 3181 | 10,840 | 152 | 0 | 24 | 11,017 |
| 3182 | 1,620 | 0 | 0 | 0 | 1,620 |
| 3191 | 17,988 | 2,561 | 60,976 | 0 | 81,524 |
| 3192 | 13,062 | 1,312 | 0 | 2,100 | 16,475 |
| 3201 | 12,536 | 21,756 | 3,940 | 18,348 | 56,580 |
| 3203 | 1,925 | 321 | 1,220 | 7,470 | 10,936 |
| 3204 | 2,535 | 500 | 0 | 2,962 | 5,997 |
| 3211 | 1,795 | 1,000 | 0 | 40,222 | 43,017 |
| 3212 | 14,204 | 1,826 | 0 | 1,050 | 17,080 |
| 3231 | 1,417 | 386 | 0 | 0 | 1,803 |
| 3232 | 16,359 | 2,138 | 8,300 | 203,738 | 230,535 |
| 3240 | 17,728 | 3,414 | 0 | 30 | 21,172 |
| 3250 | 5,261 | 1,148 | 26 | 2,974 | 9,410 |
| 3261 | 9,037 | 0 | 0 | 0 | 9,037 |
| 3262 | 3,750 | 49 | 0 | 0 | 3,799 |
| 3291 | 31,014 | 0 | 24,390 | 0 | 55,404 |
| 3220 Sri Lanka | 16,717 | 630 | 0 | 0 | 17,347 |
| 3271 Pakistan | 5 | 0 | 0 | 6,825 | 6,830 |
| 3272 Pakistan | 0 | 60 | 0 | 25 | 85 |
| 3281 Bangladesh | 5,476 | 1,728 | 2,000 | 14,423 | 23,626 |
| 3282 Bangladesh | 15,213 | 100 | 0 | 0 | 15,313 |
| 3292 Nepal | 8,293 | 805 | 0 | 34,710 | 43,808 |

वार्षिक कोष (AF) में SHARE, फोकस के क्षेत्र, विश्व कोष और आपदा प्रतिक्रिया शामिल हैं।

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

Rotary PEOPLE OF ACTION

# ग्रामीण किशोरियों की शिक्षा में सहायता

रशीदा भगत

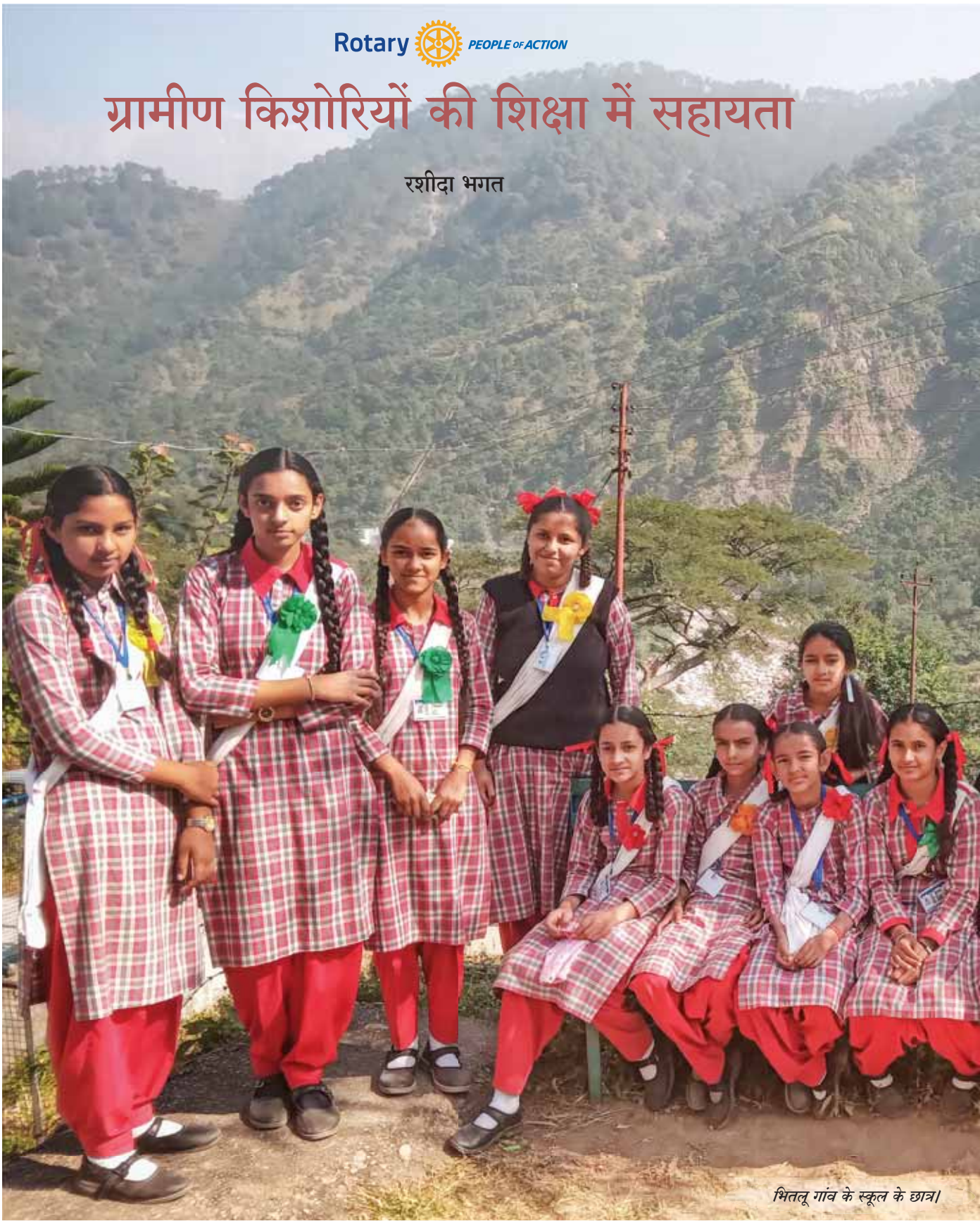

*भितलू गांव के स्कूल के छात्र।*

रोटरी क्लब धर्मशाला (रो ई मंडल 3070) ने इस पहाड़ी शहर के आसपास के गांवों में सौ किशोरियों के स्कूल जाने के तरीके को बदला है। और यह सब उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले धोने योग्य और पुन: प्रयोज्य सैनिटरी नैपकिन देने जैसे सरल कार्य के माध्यम से संभव हुआ।

''हमारे गांवों में एक बड़ी समस्या यह है कि अनेक किशोरियां कई दिनों तक अपनी कक्षाएं छोड़ देती हैं क्योंकि वे सैनिटरी नैपकिन की अनुपलब्धता के कारण अपने पीरियड्स का प्रबंधन नहीं कर पाती है। इसलिए 2020-21 में क्लब अध्यक्ष के रूप में मेरे कार्यकाल के दौरान, रोटरी क्लब लॉस एल्टोस कैलिफोर्निया (रो ई मंडल 5170) की WCS (विश्व सामुदायिक सेवा) समिति के सदस्य क्रिस ओल्सन ने धर्मशाला के आसपास के कुछ गांवों में ''सेव-ए-गर्ल'' नामक एक परियोजना चलाने का अवसर देने के लिए मुझसे संपर्क किया, मैं बहुत खुश था और मैंने उत्सुकता के साथ इसे स्वीकार किया,'' मिलाप नेहरिया, पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब धर्मशाला कहते है।

आखिरकार यह किशोरियों को हमेशा के लिए स्कूल छोड़ने या हर महीने लगभग एक सप्ताह तक स्कूल ना आने से रोकने का एक उपयुक्त अवसर था।

उनका सबसे पहला काम था धर्मशाला के दूरदराज के इलाकों में कुछ ग्रामीण स्कूलों की पहचान करना। इस बात से मदद मिली कि इनमें से कुछ गांवों में ग्राम प्रधान एक महिला थी, इसलिए उन्हें अपने गांव की लड़कियों के लिए इस महत्वपूर्ण परियोजना का समर्थन करने के लिए राज़ी करना आसान था। कुछ गांवों का चयन किया गया, और सूची ओल्सन, अमेरिकी रोटेरियन, को दी गई। फिर उन्होंने इस परियोजना के लिए अपने क्लब के सदस्यों से मंजूरी प्राप्त करने के बाद 3000 डॉलर की आवश्यक धन राशि जुटाने का कार्य शुरू किया।

रोटरी क्लब लॉस एल्टॉस की यह पहल अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को बे एरिया में स्थित रो ई मंडल 5170 के रोटरी क्लबों की द ग्लोबल अपलिफ्ट प्रोजेक्ट (TGUP) के साथ मौजूदा साझेदारी से जुड़ी है, जो अफ्रीका और एशिया में लगभग 11,000 किशोरियों की स्कूल में रहने में मदद करने के लिए काम कर रही है। दोनों साझेदार इस बात से सहमत हैं कि ''लड़कियों का स्कूल छोड़ना दुनिया में सबसे बड़ी मानव त्रासदी हैं जो रोकी जा सकती हैं,'' क्योंकि

पर्याप्त शिक्षा के बिना, इनमें से कई लड़कियां बाल विवाह जैसी त्रासदियों की चपेट में आती हैं, या इससे भी बदतर, मानव तस्करी के व्यापार में फंस जाती हैं। रो ई मंडल 5170 में 63 क्लब शामिल हैं और इनमें 3,800 से अधिक सदस्य हैं।

यह साझेदारी विकासशील देशों में किशोरियों को "सेव ए गर्ल" (SaG) नामक किट में धोने योग्य, पुन: प्रयोज्य सैनिटरी पैड प्रदान करती है, जिससे लड़कियों को सुरक्षित और स्वच्छ तरीके से अपने पीरियड्स का प्रबंधन करने में मदद मिलती है ताकि उन्हें अपने मासिक धर्म के दौरान स्कूल जाने में कोई समस्या न हो।

विकासशील दुनिया में यह कितनी बड़ी समस्या है इस बात को समझने के लिए, आइए यूनिसेफ के आंकड़ों को देखें, जो दर्शाते हैं कि 20 मिलियन से अधिक किशोरियां हर साल स्कूल छोड़ देती हैं क्योंकि वे अपने मासिक धर्म का प्रबंधन नहीं कर पाती है। चौंकाने वाली बात यह है कि यह संख्या 50 मिलियन तक हो सकती है! यहां TGUP मदद का हाथ बढ़ाता है; इसने एक धोने योग्य, पुन: प्रयोज्य

*मासिक धर्म पाठ के बाद विद्यार्थियों को सेनेटरी पैड के पैकेट वितरित किये गये। चित्र में वालंटियर डॉक्टर डॉ हिस्टी, क्लब के सदस्य अजय शर्मा और अश्वनी शर्मा मौजूद हैं।*

*रोटरी क्लब धर्मशाला के सदस्य (बाएं से) हरि सिंह, मिलाप नेहरिया, संग्राम गुलेरिया, डॉ हरमीत कौर और वाई के डोगरा छात्रों को पुन: प्रयोज्य सैनिटरी पैड वितरित करने के बाद उनके साथ।*

वह समझाते है, यह परियोजना उनके दिल के बहुत करीब थी क्योंकि किशोरियां हर महीने औसतन चार दिन स्कूल नहीं आ पाती हैं - ''स्कूली समय का लगभग 20 प्रतिशत; इस प्रकार, वे अपने स्कूल के काम में पिछड़ जाती हैं, कई पढ़ाई छोड़ देती हैं और कभी अपनी हाई स्कूल की पढाई पूरी नहीं करती है। शिक्षा का यह अंतर विकासशील देशों में महिलाओं को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाता है, जिससे उनके लिए पुरुषों की कमाई का केवल 40 प्रतिशत कमाना संभव हो पाता है,'' वह कहते है।

यह महिलाओं को आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर बनाता है, और कम शिक्षित लड़कियां कम उम्र में शादी और कम उम्र में माँ बनती है, या फिर कम वेतन वाली नौकरी या दैनिक मजदूरी के लिए खेतों में या घरेलू नौकरों के रूप में काम करती हैं।

सैनिटरी किट 2021 के अंत तक धर्मशाला पहुँचे, जबकि कोविड का खतरा बना हुआ था। जैसे ही कोविड प्रतिबंध हटाये गए, रोटेरियनों ने पैड का अपना पहला वितरण शुरू कर दिया। ''रोटरी क्लब लॉस एल्टोस के साथ हमारे समझौते के अनुसार, हमें सैनिटरी पैड बनाया है जिसे बनाने में 6 डॉलर की लागत आती है और यह तीन साल तक चलता है। इस परियोजना के माध्यम से नौ विकासशील देशों में अब तक 49,000 से अधिक SaG किट वितरित किये गए हैं, जो रोटरी के "बालिका सशक्तिकरण'' कार्यक्रम पहल का हिस्सा है।

भारत में धर्मशाला पर वापस आते हुए, रोटरी क्लब लॉस एल्टोस ने नेपाल के डांग में TGUP के उत्पादन केंद्र से 400 सैनिटरी किट की खरीद के लिए 3,000 डॉलर का नकद अनुदान प्रदान किया। तीन पुन: प्रयोज्य पैड और दो पैंटी वाली किट को काठमांडू के माध्यम से धर्मशाला ले जाया गया। ''हमें इन्हें भेजने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा; ट्रांजिट के दौरान उन्हें कई बार पैक और रीपैक करना पड़ा, लेकिन आखिरकार हम इन सैनिटरी किटों को धर्मशाला लाने में कामयाब रहे,'' नेहरिया कहते हैं।

लड़कियों को मासिक धर्म स्वच्छता और स्कूल में रहने और नियमित रूप से कक्षाओं में आने के महत्व पर भी शिक्षित करना था। हमारे क्लब की सदस्य डॉ. हरमीत कौर, जो एक स्त्री रोग विशेषज्ञ है, ने इस मुद्दे पर लड़कियों से बात करने के लिए इन सभी गांवों का दौरा करने पर सहमति व्यक्त की। वह हमारे साथ इन सभी दूरदराज के गांवों में चलकर लड़कियों को मासिक धर्म स्वच्छता पर शिक्षित करने के लिए गईं।''

वे सबसे पहले धर्मशाला के सालेट गोदाम गांव में सत्य साईं स्कूल गए, जो आसपास के गांवों के गरीब छात्रों का समर्थन करता है। लगभग 45 किशोरियों को मासिक धर्म स्वच्छता पर शिक्षा के साथ पैड दिए गए। इसके बाद करेरी और आसपास के गांव थे; पंचायत की महिला मुखिया ने सभी लड़कियों को एक जगह एकत्रित करने में मदद की। हमें धर्मशाला से करेरी तक ड्राइव करने में दो घंटे लग गए। वहां इंतजार कर रही 150 लड़कियां किट प्राप्त करके बहुत खुश थीं और किट प्राप्त करते समय उनके चेहरे पर मुस्कान देखना वास्तव में एक बहुत ही संतोषजनक अनुभव था, नेहरिया कहते हैं। अगला वितरण खनियारा गांव में बहु-कौशल विकास केंद्र में किया गया, जो रोटरी क्लब धर्मशाला द्वारा समर्थित है, और लड़के और लड़कियां केंद्र द्वारा चलाए जा रहे अल्पकालिक पाठ्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। गांव की लगभग 40 लड़कियां हैं जो केंद्र में पढ़ने के लिए आती हैं, और उन सभी को सैनिटरी किट दिए गए थे।

मानसून की बारिश कम होने का इंतजार करने के बाद, रोटेरियनों ने भिटलू नामक एक दूरदराज के गाँव में एक मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। डॉ हरमीत को सुनने के लिए आसपास के गांवों की लगभग 40 लड़कियां आईं, और उन्हें सैनिटरी किट दी गई। अंतिम वितरण घनियारा सीनियर सेकेंडरी स्कूल में किया गया था, जहां लगभग 90 लड़कियों को किट मिली।

क्लब की सदस्य अरुणा पराशर ने बालिकाओं को हिन्दी में लिखित शिक्षा सामग्री प्रदान की।

नेहरिया कहते है कि रोटरी क्लब लॉस एल्टॉस और TGUP, जिनके अफ्रीका और नेपाल में सिलाई केंद्र हैं, अब हिमालयी क्षेत्र और भारत के अन्य दूरदराज के क्षेत्रों में अधिक महिलाओं की मदद करने के लिए सैनिटरी नैपकिन उत्पादन केंद्र स्थापित करने के अवसरों की तलाश कर रहे हैं। ''हमारी परियोजना को देखते हुए, एक अन्य स्थानीय एनजीओ ने रुचि दिखाई है और वह इसे आगे ले जाना चाहता है।''

## वृक्षारोपण

एक अन्य क्लब परियोजना - ग्रीन हिमालयन प्लांटेशन ड्राइव - का विवरण देते हुए, नेहरिया ने कहा कि कुछ वर्षों से रोटरी क्लब धर्मशाला इस

*रोटरी क्लब धर्मशाला के सदस्यों ने ग्रीन हिमालयन प्लांटेशन ड्राइव के तहत पौधे लगाए।*

हिमालयी क्षेत्र में हरित वन क्षेत्र को संरक्षित करने के लिए वृक्षारोपण अभियान चला रहा है। ''हिमाचल प्रदेश वन क्षेत्र के मामले में सबसे समृद्ध राज्यों में से एक है, जिसके कुल भूक्षेत्र का लगभग 66 प्रतिशत जंगलों से ढका हुआ है। जबकि राज्य के अधिकारियों द्वारा बहुत पुराने या गिरे हुए पेड़ों को काटकर लकड़ी के रूप में उपयोग किया जाता है, हिमाचल प्रदेश का वन विभाग वन आवरण को बनाए रखने और राज्य में हर जगह हजारों नए पेड़ लगाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारे क्लब के रोटेरियन हर साल इस उद्देश्य के लिए योगदान देते हैं।''

इस साल भी, क्लब ने वन विभाग के सहयोग से तीन वृक्षारोपण अभियान चलाए हैं, जहां पौधों को जानवरों और अन्य घुसपैठियों से बचाने के लिए पहले क्षेत्र की चारों ओर से घेराबंदी की गई है। ऊंचे इलाकों में देवदार और बलूत के पेड़ों जैसे देशी पेड़ों और कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में जंगली चेरी, कैंथ आदि जैसे जंगली फल देने वाले पेड़ों के पौधों को लगाने के लिए उचित गड्ढे खोदे जाते हैं। युवा पीढ़ी को हरित पहल की आवश्यकता के बारे में जागरूक करने के लिए एक स्कूल में एक वृक्षारोपण अभियान चलाया गया था।

वह बताते हैं कि देवदार के पेड़ ऊंचाई पर उगने वाले पेड़ हैं और मुख्य रूप से लकड़ी के रूप में उपयोग किए जाते हैं, लेकिन अभी सरकार द्वारा इन पेड़ों की कटाई पर रोक लगा दी गई है। प्रत्येक वृक्षारोपण अभियान में केवल 55-60 पौधे लगाए जाते हैं; ''संख्या से अधिक, हमारा उद्देश्य हमारे पर्यावरण की रक्षा की आवश्यकता पर जागरूकता बढ़ाना है। जैसा कि हम इस खूबसूरत क्षेत्र में रहते हैं, हम में से अधिकांश लोग पर्यावरण के बारे में बहुत भावुक हैं और पहाड़ों की रक्षा करने की आवश्यकता को महसूस करते हैं क्योंकि यहां की पारिस्थितिकी बहुत नाजुक है,'' वह आगे कहते है।

क्लब के सदस्य खुश हैं कि कई साल पहले उन्होंने जो पेड़ लगाए थे, वे अब पूरी तरह से बड़े हो गए हैं ''और हमें गर्व है कि हमने अमरूद, सिल्वर ओक और कुछ अन्य पेड़ों का एक छोटा बगीचा स्थापित किया है।''

क्लब मनाली, मंडी और शिमला में राहत कार्यों के लिए भी धन जुटा रहा है, जहां भारी बारिश के कारण कई बार बाढ़ आ गई थी। धर्मशाला प्रभावित नहीं हुआ था।

*एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा*

# इरुला परिवारों के लिए मॉडल टाउनशिप

**वी मुत्तुकुमारन**

चेंगलपट्टू जिले के थिरुपोरुर तालुक में मौजूद सुंदर ECR राजमार्ग से दूर और चेन्नई से 100 किलोमीटर दक्षिण में स्थित एक घने जंगल में कठोर जीवन बिता रहे 63 इरुला परिवारों के लिए यह बिन मांगी दुआ कबूल होने जैसा था। अनुसूचित जनजातियां जो पारंपरिक रूप से सांप पकड़ने वाले हैं, अब 63 नए 2 बीएचके घरों के मालिक बन गए हैं, जिनमें से प्रत्येक का क्षेत्रफल 650 वर्ग फुट है, और जिनमें उपकरण और अन्य सुविधाएं मौजूद हैं।

अब जब नल्लमाई रामनाथन कुयिलकुप्पम नगर का उद्घाटन हो रहा है, तो यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इरुला लोग इस परियोजना के मुख्य दानकर्ता पीडीजी अबिरामी रामनादन, और उनकी पत्नी नल्लमाई को देवताओं की तरह पूजते हैं। उन्होंने अपना आभार व्यक्त करने के लिए अपनी बैठक में रोटेरियन जोड़े की फ्रेम की हुई तस्वीर लटकाई है।

''बहुत लंबे समय से, मैंने एक नया गांव या टाउनशिप बनाने का एक बड़ा सपना देखा था। मेरी बरसो की तमन्ना अब पूरी हो गई है। हम व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से उनके कौशलों को बढाते हुए एवं उनके बच्चों को शिक्षित करते हुए इरुला के साथ जुड़ना जारी रखेंगे, ताकि उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में पूर्ण परिवर्तन हो सके,'' पीडीजी रामनादन ने कहा, जिन्होंने ₹8.5 करोड़ की परियोजना लागत में से ₹4 करोड़ निर्देशित उपहार के रूप में दिए थे। प्रमुख क्लब, रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल, ने तीन वैश्विक अनुदानों के माध्यम से ₹1.8 करोड़ का निवेश किया है, और शेष राशि रोटरी क्लबों, रो ई मंडल 3232 एवं 3231 के रोटेरियनों, और निजी दानकर्ताओं के योगदान का मिश्रण थी।

प्रत्येक इरुला परिवार को आवंटित 3.5 सेंट गैर-हस्तांतरणीय पट्टा (मालिकाना हक) मिलने के बाद, 2018 के मध्य में घरों का निर्माण शुरू हुआ। लेकिन कोविड महामारी के कारण, ''हमारा काम दो साल तक बाधित रहा। सभी लाभार्थियों को इस नए गांव को बनाने के लिए शामिल किया गया था, जिससे उन्हें चिनाई, बढ़ईगीरी, नलसाजी और घरेलू बिजली फिटिंग में अपने कौशलों को विकसित करने में मदद मिली। जिससे वे अपनी आजीविका सुनिश्चित कर पाएंगे,'' रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल के परियोजना सचिव पी बी रविकुमार ने याद करते हुए कहा। ''हमने 25 दुधारू गायों को दान किया है और इरुला सदस्यों के साथ एक सहकारी समिति बनाई है। चार रोटेरियन सहकारी समितियों को सलाह देंगे।''

## अतिरिक्त सुविधाएं

पेवर ब्लॉक से बनी सभी चार समानांतर सड़कों में सोलर लाइटों की व्यवस्था है और सभी घरों से जुड़ा हुआ एक सीवेज तंत्र स्वच्छ जीवन सुनिश्चित करता है। एमफेनॉल से मिले ₹10 लाख के एक सीएसआर अनुदान के माध्यम से सामान्य क्षेत्र में बना एक विशाल ओवरहेड टैंक (5,000 लीटर) जल प्रवाह सुनिश्चित करता है। प्रत्येक घर में तीन पंखे, लाइटें,

*बाएं से: रो ई मंडल 3231 डीजी पी भरणीधरन, रो ई मंडल 3234 डीजीएन विनोद सरावगी, नल्लाम्मई, पीडीजी अभिरामी रामनादन, वीआईटी के संस्थापक-चांसलर जी विश्वनादन, पीआरआईडी एएस वेंकटेश, तिरुपोरूर विधायक एसएस बालाजी और रो ई मंडल 3232 डीजी रवि रामन, इरुला लाभार्थियों के साथ।*

एक फ्रिज, टीवी, मिक्सी, ग्राइंडर, गैस स्टोव, प्रेशर कुकर, खाना पकाने के बर्तनों का सेट, तकिए के साथ दो बिस्तर और एक स्टील की अलमारी है। दाग-धब्बों से बचाने के लिए दीवारों में 5 फीट उंचाई तक टाइल्स लगी हुई है।

2 वर्ग किमी में फैले घरों और पूरी बस्ती को संभालने के लिए, छह रोटरी क्लबों ने 63 परिवारों को गोद लिया है; रामनादन ने कहा कि एक रोटरी टीम नियमित रूप से कुयिलकुप्पम का दौरा करेगी, वे इरुला बच्चों की शिक्षा में मदद करेगी, और लाभार्थियों के लिए उचित काम ढूंढेगी। कुयिलकुप्पम के नए मकान मालिकों को किराने की किट वितरित करने के बाद, इरुला, पीडीजी और रोटेरियनों की एक सभा को संबोधित करते हुए, मुख्य दानकर्ता ने कहा, ''दान देने के अपने शुरुआती दिनों के दौरान, मैंने जल्द ही यह बात जानी कि केवल निर्बाध दान और सेवा के माध्यम से ही कोई समाज में आगे बढ़ सकता है। तमिल गीतकार कन्नदासन को उद्धृत करते हुए, उन्होंने कहा, जब हम इस दुनिया से जाएंगे तो अपने साथ कुछ भी नहीं ले जायेंगे।''

16वीं सदी के फ्रांसीसी ज्योतिषी नास्त्रेदमस के इन शब्दों का हवाला देते हुए कि 'आने वाले दशकों में केवल तीन तरफ से समुद्र से घिरा देश ही दुनिया पर शासन करेगा' रामनादन ने विश्वास जताया कि ''भारत सभी के लिए आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल जैसी अपनी सभी चुनौतियों को पार करके जल्द ही एक महाशक्ति बन जाएगा।'' उन्होंने पुरुष इरुलाओं से शराब छोड़ने और अपनी आजीविका पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया।

नल्लम्माई ने कहा कि इस रोटरी वर्ष में 'विश्व में आशा जगाना' थीम के साथ, हमने इरुलाओं के जीवन में एक नई आशा पैदा की है, जिन्हें अपने भविष्य को आकार देने के लिए अब बुद्धिमत्ता के साथ कड़ी मेहनत करनी होगी।'' उन्होंने उनसे अपने घरों और आसपास के वातावरण को साफ़, स्वच्छ और दूसरों के लिए अनुकरणीय बनाने के लिए कहा। उन्होंने कहा, ''सबसे अच्छे रखरखाव वाले घर को नियमित निरीक्षण के बाद रोटरी टीम द्वारा 5,000 के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। इस गांव में एक सामुदायिक हॉल बनाया जाएगा ताकि महिलाओं को सिलाई, कंप्यूटर डेटा एंट्री आदि जैसे व्यावसायिक कौशलों में प्रशिक्षित किया जा सके।''

पीआरआईडी ए एस वेंकटेश ने कहा, ''जबकि रामनादन ने सैकड़ों सेवा परियोजनाएं की हैं, यह

**सभी लाभार्थियों को इस नए गांव को बनाने के लिए शामिल किया गया था, जिससे उन्हें चिनाई, बढ़ईगीरी, नलसाजी और घरेलू बिजली फिटिंग में अपने कौशलों को विकसित करने में मदद मिली।**

**पी बी रविकुमार**
परियोजना सचिव
रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल

कुयिलकुप्पम परियोजना उनके लिए विशेष है क्योंकि उन्होंने इसे अन्य रोटेरियनों के साथ संयुक्त प्रयास के माध्यम से सफल बनाया था, क्योंकि वह उनके साथ भी अच्छे काम को साझा करना चाहते थे।'' ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस आदर्श गांव को इरुलाओं के सामुदायिक जीवन को बेहतर बनाने के लिए सुवेज लाइनों और सामाजिक आधारभूत संरचनाओं जैसी सभी बुनियादी सुविधाएं मिली हैं, उन्होंने कहा।

### उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण है

वीआईटी विश्वविद्यालय के संस्थापक-चांसलर जी विश्वनाथन ने कहा कि देश में 3.5 करोड़ बेघर नागरिक हैं, और उनमें से 10 लाख तमिलनाडु में हैं। उन्होंने कहा, ''हर भारतीय अपने घर की इच्छा रखता है। उनके सपनों को साकार करने के लिए, हमें देश की प्रति व्यक्ति आय में सुधार करने की जरूरत है जो वर्तमान में 2,600 डॉलर है और ऐसा करने के लिए, हमारी अर्थव्यवस्था को प्रगति करनी होगी जो केवल उच्च शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।'' लेकिन भारत में केवल 25 प्रतिशत युवा (18-23 वर्ष) उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं और इस संबंध में, तमिलनाडु ने 50 प्रतिशत के आंकड़े को पार कर लिया है, ''लेकिन अभी भी सभी को आवास प्रदान करने के लिए एक लंबा रास्ता तय करना है।''

उन्होंने कहा कि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के छह प्रतिशत के वैश्विक मानक के मुकाबले, भारत

अपनी राष्ट्रीय संपत्ति का महज तीन प्रतिशत शिक्षा के विकास के लिए आवंटित कर रहा है। वेल्लोर में, विश्वनाथन ने यूनिवर्सल हायर एजुकेशन ट्रस्ट का गठन किया है जो पिछले 10 वर्षों से गरीब छात्रों की उच्च शिक्षा को प्रायोजित कर रहा है। ''अब तक, छात्रों को 7,000 शैक्षणिक अनुदान दिए गए थे, जिनमें से 50 प्रतिशत लड़कियां हैं। 1.45 अरब में से केवल 10 प्रतिशत स्नातक हैं, लेकिन गरीबी और अज्ञानता को दूर करने के लिए, उच्च शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए,'' उन्होंने कहा।

पीडीजी रामनादन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए, इरुला महिला लता ने शपथ ली कि ''हम जिम्मेदारी के साथ जीवन जीएंगे, अपने बच्चों को शिक्षित करेंगे और अपने घरों और गांव को साफ रखेंगे।'' उसने चार साल पहले अपने कठोर जीवन को देखा, जब वे छोटे-मोटे काम किया करते थे, ''और अब रोटरी के हस्तक्षेप के बाद हमारे जीवन में भारी बदलाव आया है।''

2017 में, रोटरी क्लब चेंगलपेट के ए जी डी दुरईराज रामनाथन को परियोजना स्थल पर ले गए, उस समय वह बिखरे हुए मिट्टी, ताड़ के पत्तों की छत वाले घरों वाली एक बंजर जमीन थी। उन्होंने शिवगंगा जिले में 950 परिवारों वाले पुलनकुरिची गांव को गोद लिया है, जहां वह हर साल ₹50 लाख खर्च करते हैं। उन्होंने चेंगलपट्टू के सरकारी अस्पताल

विशेष व्यवस्था द्वारा

*तमिलनाडु के खेल मंत्री उदयनिधि स्टालिन ने, (बाएं से) पीडीजी रामनाथन, नल्लाम्मई, वीआईटी चांसलर विश्वनादन, रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल के अध्यक्ष प्रकाश वैद्यनादन, डीजी भरणीधरन, विधायक बालाजी और ग्रामीण उद्योग मंत्री टीएम अन्बरसन की उपस्थिति में इरुला महिला को घर की चाबी सौंपी।*

में एक बाल चिकित्सा वार्ड खोलने के अलावा, तिरुकलुकुंड्रम, मरईमलईनगर, वंदवासी और गुडियातम में चार नल्लमाई रामनादन अस्पताल बनाए हैं।

डीजी रवि रामन (रो ई मंडल 3232) और डीजी पी भरानीधरन (रो ई मंडल 3231), तिरपोरूर के विधायक एस एस बालाजी, ग्रामीण उद्योग मंत्री टी एम अन्बरसन और खेल विकास मंत्री उदयनिधि स्टालिन, चेंगलपट्टू के जिला कलेक्टर राहुल नाथ ने कुयिलकुप्पम परियोजना के लिए रामनाथन और रोटरी कल्ब मद्रास सेंट्रल को सम्मानित किया।

*चित्र: वी मुत्तुकुमारन*

*इरुला परिवार जिन्हें मॉडल टाउनशिप में घर दिए गए हैं।*

ADVT.

# A FEW SEATS AVAILABLE

## ADMISSIONS open 2023-24

# IIS (deemed to be UNIVERSITY) JAIPUR

FORMERLY ICG

## UG / PG / Ph.D. & Professional Programmes

**3-Level certificate/Diploma/Advanced Diploma alongwith Degree Programmes**

### Undergraduate Programmes

- B.A. ▪ B.Sc. ▪ B.Com.
- B.A. / B.Sc. / B.Com. Hons.
- B.A. / B.Sc. / B.Com. - Research
- B.A. / B.Sc. / B.Com. Hons. - Research

### Specialized Programmes

- **B.Com. Hons.** (Proficiency in Chartered Accounting/Proficiency in Company Secretaryship) Specialized programmes and separate academic calendars for aspirants of CA & CS.
- **B.Com. Hons.** (Applied Accounting and Finance) Accredited by ACCA UK

### UG - Professional Programmes

- B.A. (J.M.C.) ▪ B.F.A. ▪ B.C.A.
- **B.Sc. Hons.** (Forensic Science)
- **B.Sc. Hons.** (Data Analytics & Artificial Intelligence)
- **B.Sc. Hons.** (Home Science)
- **B.Sc.** (Fashion Design)
- **B.Sc. Hons.** (Multimedia & Animation)
- **B.Sc.** (Jewellery Design & Technology)
- **B.B.A.**
- **B.B.A.** (Aviation & Tourism Management)
- **B.Voc.** (UGC Approved)

### Integrated Programmes

- B.A. B.Ed.* ▪ B.Sc. B.Ed.* *NCTE Approved
- **B.Sc. M.Sc.** (Nano Science & Technology)

### Post Graduate Programmes

- **M.A. -** Economics, English, French, Sociology, Geography, History, Political Science, Mathematics, International Relations, Public Administration Psychology, Statistics
- **M.Sc. -** Biotechnology, Botany, Chemistry, Economics, Environmental Sc., Geography, Information Technology, Mathematics, Microbiology, Physics, Psychology, Statistics, Zoology
- M.Com. ▪ M.F.A. ▪ M.S.W. ▪ M.Sc. Home Sc.
- M.A. / M.Sc. / M.Com Fashion Design, Jewellery Design
- MA Journalism & Mass Communication
- M.B.A. (Semester Based) ▪ M.A/M.Sc in Yogic Sciences

### Co-Educational Programmes

@ IISU Block, ISIM Campus, Mahaveer Marg, Mansarovar

- B.C.A. ▪ B.B.A. ▪ B.Lib.Sc.
- M.A. (Digital Media & Communication) ▪ M.C.A.
- M.B.A. (Dual Specialization, Trimester based) MBA/MCA AICTE Approved

### Research Programmes

- Ph.D. : Admission through Research Entrance Test.

### Short Term Courses

- Cyber Security and Cyber Law (Online)
- Certificate Course in Textile Design

### Preparatory classes along with UG / PG Programmes

- Civil Services ▪ NET ▪ USCMA

### College of Physiotherapy & Allied Health Sc.

(Co-Educational)
@ Sitapura Campus

- B.P.T. ▪ M.P.T. ▪ Ph.D.

### Distinguishing Features

- Extra & Co-Curricular Activities
- Placement Support
- Wi-Fi enabled campus
- Conveyance Facility
- NCC, NSS, Sports
- Hostel Facility

## SOME OF OUR DISTINGUISHED ALUMNAE

Padmini Solanki
IAS

Aruna Rajoria
IAS

Yasha Mudgal
IAS

Darshika Rathore Ajinkya
Endpoint, Middle East, UAE

Laxmi Tatiwala
Chartered Accountant

Shweta Sirohi Gupta
Careflight, Sydney, Australia

Beenu Dewal
8th Rank, RAS 2018

Manvi Soni
International Shooter

Navodita Mathur
Standard Chartered Bank Dubai

Priyanka Raghuvanshi
RPS

Fg. Lieutenant Swati Rathore
Indian Air Force

Vasundhara Singh
Dietician, AIIMS, New Delhi

Fg. Off. Shivanshi Pathak
Indian Air Force

Bhawana Garg
RAS

Maj. Komal Rathore
Indian Army

Lt Karnika Singh
Indian Army

Sqn. Ldr. Unnati Sahera
Flying Officer

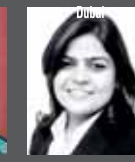
Shalu Mathur
Royal Bank of Scotland

FOR COUNSELLING AND ANY QUERIES, CONTACT AT:

ARTS & SOCIAL SCIENCES 93588 19994
SCIENCE 93588 19995
COMMERCE & MANAGEMENT 93588 19996
PHYSIOTHERAPY 89493 22320

Gurukul Marg, SFS, Mansarovar, Jaipur-302 020 Rajasthan (India)
+91 141 2400160, 2397906/07
Toll Free No.: 1800 180 7750
admissions@iisuniv.ac.in
www.iisuniv.ac.in

# मुंबई रोटरेक्टर्स का महिला तस्करी के विरुद्ध अभियान

**रशीदा भगत**

एक परंपरा बन चुकी है रोटरेक्ट क्लब जय हिंद कॉलेज, रो इ मंडल 3141 के लिए, जो हर मार्च में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के आसपास पूरे एक सप्ताह तक जागरूकता अभियान चलाकर महिलाओं का उत्सव मनाते हैं और लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों को कुचलने पर सवाल उठाते हैं। इस वर्ष भी खुशी शेट्टी की अध्यक्षता में महिला सप्ताह (1-8 मार्च) के दौरान *चीख* परियोजना का आयोजन किया गया। ''*चीख* का मूल उद्देश्य है, पूरे मुंबई में विभिन्न स्थलों पर फ्लैश मॉब, प्रदर्शनों के माध्यम से महिला तस्करी जैसे

*महिलाओं की तस्करी के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए रोटरेक्टरों ने बैनर के साथ नारे लगाया।*

गंभीर मुद्दे उजागर कर उसे लोगों की नज़र में लाना हैं। परन्तु इस वर्ष अनुमति नहीं मिलने की वजह से यह संभव नहीं हो सका। इसलिए सप्ताह मनाने में आ रही इस बाधा से हतोत्साहित होने की बजाय हमारी टीम ने लोगों तक सन्देश पहुंचाने के लिए नए तरीके से कई प्रभावशाली और सशक्त गतिविधियों की एक श्रृंखला बनाई,'' खुशी कहती हैं।

इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं की तस्करी और मासूम युवा लड़कियों को मुंबई के देह व्यापार में घसीटने की विकराल होती समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करना था। इस समस्या के प्रति जागरूकता बढ़ाने और नागरिकों से इस घृणित प्रथा के विरुद्ध खड़े होने का आग्रह करने के लिए, रोटरेक्टर्स ने रेलवे स्टेशन के पास ग्रांट रोड क्षेत्र में दीवार पर पेंटिंग बनाने का फैसला किया। ग्रांट रोड में मुंबई का एक काफी बड़ा रेडलाइट एरिया है। ''हमने इस क्षेत्र में दीवार पर पेंटिंग बनाने के लिए बीएमसी से अनुमति मांगी और शुक्र है कि हमें अनुमति मिल गई।फ्फ़ सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, उत्पीड़न और दुर्व्यवहार को रेखांकित करने के लिए एक दीवार का उपयोग कैनवास के रूप में किया गया।'' चार बड़े बड़े प्रभावशाली चित्र बनाए गए

**चार बड़े प्रभावशाली चित्र बनाए गए थे, जिसमें तस्करी से प्रभावित महिला और उनकी दबा दी गई आवाज़ों के चित्र बनाये गए थे।**

*रोटरेक्टर महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय को दर्शाने के लिए दीवारों पर चित्र बनाते हुए।*

**ये बैनर लेकर हमने महिला तस्करी के खिलाफ नारे लगा कर मार्च करते हुए अपना रोष प्रकट किया और जहां जहां भीड़ नज़र आई, वहां रुक कर हमने कविता पढ़ी।**

**खुशी शेट्टी**
IPP, रोटरेक्ट क्लब जय हिन्द कॉलेज,
रो ई मंडल 3141

थे, जिसमें तस्करी से प्रभावित महिला और उनकी दबा दी गई आवाज़ों के चित्र बनाये गए थे। इस प्रदर्शनी का प्रायोजन महिला तस्करी जैसे अभिशाप के विरुद्ध समाज की भावनाओं को उकसा कर इस के विरोध में आवाज़ उठाने के लिए प्रोत्साहित करना था।इस विशेष सप्ताह की शुरुआत क्लब के रोटरेक्टर्स द्वारा मरीन ड्राइव में संडे स्ट्रीट्स स्थलों में से एक पर परेड आयोजित करने के साथ हुई। संडे स्ट्रीट्स मुंबई पुलिस की पहल है, जिसमें मुंबई के मुख्य भागों जैसे मरीन ड्राइव, मुलुंड, विक्रोली आदि में सड़क के कुछ हिस्सों को योग, जॉगिंग, स्केटिंग, गायन, नृत्य आदि मनोरंजक गतिविधियों के लिए हर रविवार को कुछ घंटों के लिए जनता के लिए सुरक्षित रखा जाता है। ''इसके पीछे मंशा ये है कि मुंबई के लोग आराम करने के साथ मनोरंजक गतिविधियों का आनंद लें, साथ ही संगीतकार और अन्य प्रतिभाशाली लोग इन स्थानों पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। यहां बड़ी संख्या में दर्शक जुटते

हैं, इसलिए हमने सोचा कि क्यों न इसी जगह पर परेड निकाली जाए,'' उन्होंने बताया।

इसलिए रोटरेक्टर्स ने महिला तस्करी के खिलाफ सन्देश और नारे वाले बड़े पोस्टर, बैनर बनाये थे, जैसे 'महिलाएं बेचने की वस्तु नहीं हैं,' या 'असल पुरुष महिलाओं को नहीं खरीदते हैं' इत्यादि।'' ये बैनर लेकर हमने महिला तस्करी के खिलाफ नारे लगा कर मार्च करते हुए अपना रोष प्रकट किया और जहां जहां भीड़ नज़र आई, वहां रुक कर हमने कविता पढ़ी। इस परेड का उद्देश्य इस मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करना, राहगीरों द्वारा स्थिति की गंभीरता पर विचार करने और कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करना था।''

युवाओं ने सोशल मीडिया पर भी समानांतर अभियान चलाया। क्लब ने इंस्टाग्राम पर एक लघु फिल्म जारी की, जिसमें लड़कियों और गुड़िया के साथ व्यवहार के बीच समानता दिखाई गई, ''हमारे समाज में महिलाओं को इस्तेमाल की चीज समझने और उनके साथ हो रहे वहशीपन और उत्पीड़न दिखाए जाने पर जोर दिया गया था। ये विचारोत्तेजक कहानी दर्शकों को पसंद आई, जिसे जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली। थोड़े ही समय में, फिल्म 12,000 से अधिक लोगों तक पहुंच गई, जिससे महिलाओं की तस्करी के खिलाफ संदेश फैल गया और आगे चर्चा शुरू हो गई।''

हालांकि, रोटरेक्टर्स इस विषय पर जागरूकता बढ़ाने से कहीं आगे निकल गए हैं। ''एक ठोस परिवर्तन लाने के लिए, हमारे क्लब ने रेस्क्यू फाउंडेशन के साथ हाथ मिलाये हैं, ये संगठन तस्करी के जाल

*रोटरेक्ट क्लब जय हिंद कॉलेज की पूर्व अध्यक्ष खुशी शेट्टी (बाएं से तीसरी), पूर्व सचिव ज़ैनब जेतपुरवाला (बाएं), टीम* **चीख**, *रेस्क्यू फाउंडेशन की संस्थापक त्रिवेणी आचार्य के साथ।*

में फंसी लड़कियों को बचाने और उन्हें वापस घर लौटने में मदद करने के लिए समर्पित है। फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे कार्य का महत्व पहचानते हुए, टीम ने धन संग्रहण का मुहीम चलाया और इस उद्देश्य के लिए सफलतापूर्वक ₹10,100 एकत्र किए।''

ख़ुशी ने आगे बताया कि एकत्रित धनराशि ने पाँच लड़कियों के बचाव और पुनर्वास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उन्हें अपने जीवन को फिर से जीने का मौका मिला। वह बताती हैं कि कांदीवली में एक एनजीओ है, जिसका नाम है विशाल एनजीओ, इसे एक क्राइम पत्रकार द्वारा शुरू किया गया था, जो रेड लाइट एरिया से लड़कियों को निजात दिलाना चाहते थे। स्वयंसेवक स्टिंग ऑपरेशन करते हैं और उस दलदल में फंस चुकी जो महिलाऐं और लडकियां बाहर निकलना चाहती हैं, उन की शिनाख्त करते हैं। इन लड़कियों को छुड़ाने के लिए एनजीओ को अक्सर कुछ रूपये भी देने पड़ते हैं और इसके पश्चात वे उन्हें पुनर्वास केंद्र में लाते हैं।

इसके पश्चात इनके परिवारों से संपर्क कर उन्हें लड़कियों की स्थिति के बारे में बताया जाता है; अगर परिवार समझता है और लड़कियों को वापस रखने के लिए सहमत हो जाता है, तो यह एक सुखद अंत होता है। लेकिन दुर्भाग्य से कई परिवार उन्हें अस्वीकार कर देते हैं तब इन लड़कियों को पुनर्वास केंद्र में रखा जाता है, उन्हें सिलाई या छोटा व्यवसाय शुरू करने जैसे कौशल के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इसका उद्देश्य उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है।''

**एकत्रित धनराशि ने पाँच लड़कियों के बचाव और पुनर्वास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उन्हें अपने जीवन को फिर से जीने का मौका मिला।**

क्लब के निवर्तमान पूर्व अध्यक्ष इस बात से प्रसन्न हैं कि ''*चीख* के माध्यम से, हमारे क्लब ने, जिसमें 70 प्रतिशत सदस्य महिलाएं हैं, महिला तस्करी से निपटने में सामूहिक कार्रवाई और रचनात्मक अभिव्यक्ति की ताकत का वर्चस्व बताया है। अपनी गतिविधियों में विविधता लाकर, टीम विभिन्न स्तरों पर दर्शकों से जुड़ी और मुद्दे की व्यापक समझ और जागरूकता को बढ़ावा दिया। समाज में जागरूकता बढ़ा कर इस मुद्दे पर चर्चा को ज़ोर देने और पीड़ितों के बचाव में सक्रिय योगदान करने के उनके प्रयास सामाजिक परिवर्तन के लिए क्लब की प्रतिबद्धता का उदाहरण हैं।''

(समाप्त)

# एनेट्स 100 खण्होष्ठ सर्जरी का समर्थन करता है

**टीम रोटरी न्यूज़**

*एम ओ यू पर हस्ताक्षर करने के बाद डीजी रवि रमन (बाएं से पांचवें) और डीजीई एनएस सरवनन (दाएं से चौथे) मंडल एनेटस प्रतिनिधि आथिरा नायर (दाएं से दूसरे) और विनोद नायर (दाएं से तीसरे) के साथ।*

1 अगस्त को रोटरी डिस्ट्रिक्ट एनेटस काउंसिल के बीच एक समझौता पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका प्रतिनिधित्व डिस्ट्रिक्ट एनेटस प्रतिनिधि आतिरा नायर और प्रोजेक्ट चेयरमैन डॉ लोकेश ने किया। रोटरी क्लब चेन्नई रॉयल्स, रो ई मंडल 3232 ,और किंग्स विद्या ट्रस्ट, चेन्नई के रामचंद्र मेडिकल कॉलेज अस्पताल में बच्चों के लिए 100 कटे होंठ की सर्जरी करेगा। आरसीसीआर परियोजना की निगरानी और व्यवस्था करेगा। किंग्स विद्या ट्रस्ट सर्जरी को प्रायोजित करेगा, इसके प्रबंध ट्रस्टी विनोद नायर, जो आरसीसीआर के सदस्य हैं, ने कहा।

इस समझौता पर हस्ताक्षर के दौरान डीजी रवि रमन और डीजीई एन एस सरवनन उपस्थित थे।

अगस्त के अंत तक 10 सुधारात्मक सर्जरी पूरी होने के साथ, परियोजना इस रोटरी वर्ष के अंत तक अपना जादुई आंकड़ा छू लेगी। ■

# रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय डेस्क से

### प्रत्येक रोटेरियन प्रत्येक वर्ष

रोटरी फाउंडेशन के वार्षिक कोष में आपका दान रोटरी सदस्यों को वार्षिक फंड-शेयर अनुदानों के माध्यम से स्थानीय और वैश्विक परियोजनाओं, छात्रवृत्तियों और अन्य को वित्त पोषित करके दुनिया भर में सार्थक प्रभाव डालने हेतु प्रेरित करता है।

आज दान करें: rotary.org/donate

अधिक जानकारी के लिए: my.rotary.org/annual-fund

### रिकॉर्ड संख्या में क्लबों ने रोटरेक्ट गिविंग सर्टिफिकेट अर्जित किया

2022-23 में, 640 से अधिक रोटरेक्ट क्लबों ने रोटरेक्ट गिविंग सर्टिफिकेट हासिल किया जो पिछले वर्ष की तुलना में महत्वपूर्ण वृद्धि दर्शाता है। यह प्रमाण पत्र उन क्लबों को दिया जाता है जिनके सदस्यों ने सामूहिक रूप से एक वर्ष के दौरान टीआरएफ को कम से कम 100 यूएस डॉलर का दान दिया हो और उसके परिणामस्वरूप 242,000 यूएस डॉलर से अधिक का कुल योगदान हुआ हो। यह राशि 2021-22 में जुटाए गए लगभग 87,000 यूएस डॉलर के तीन गुने के आसपास है। प्रत्येक क्लब को उनके योगदान के लिए न्यासी अध्यक्ष इयान रिसले द्वारा व्यक्तिगत रूप से हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र प्राप्त होगा।

2019-20 के बाद से रोटरेक्टरों ने संस्थान की वैश्विक पहल का समर्थन करने के लिए इस कार्यक्रम के माध्यम से 438,500 यूएस डॉलर से अधिक का दान दिया है।

### प्रमुख दानकर्ता मान्यता दिशानिर्देश

- यह केवल व्यक्तिगत योगदान के लिए उपलब्ध है। प्रमुख दानकर्ता मान्यता के लिए केवल पति या पत्नी के योगदान को जोड़ा जा सकता है।
- परिवार-नियंत्रित कंपनी या परिवार-न्यास द्वारा किए गए योगदान के मामले में यह आधिकारिक तौर पर लिखित में प्रदान किया जा सकता है कि वास्तविक श्रेय इसके मालिक/न्यासी को दिया जाए।
- प्रमुख दानकर्ता मान्यता स्वयं से संसाधित नहीं होती। दानकर्ता को इसके लिए रो ई स्टाफ सहित उत्कीर्णन निर्देशों के साथ अनुरोध करना होगा।
- एपीएफ, पोलियो प्लस और वैश्विक अनुदान में योगदान के लिए फाउंडेशन मान्यता बिन्दु प्रदान किए जाते हैं। अक्षय निधि, निर्देशित उपहार और सीएसआर उपहार के लिए कोई मान्यता बिंदु नहीं होते।

प्रमुख दाता मान्यता के बारे में अधिक जानकारी के लिए Madhu.Mamgain@rotary.org पर संपर्क करें। ■

# रो ई मंडल 3090 में इंटरेक्ट क्लब का विस्तार

किरण ज़ेहरा

रोई मंडल 3090 में विद्यार्थियों के पास एक इंटरेक्ट क्लब से जुड़ने के अनेक कारण हैं। ''क्लबों द्वारा उनके स्कूलों में सकारात्मक प्रभाव डालने के अलावा, विद्यार्थी पंजीकरण शुल्क का बोझ लिए बिना अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर पाकर रोमांचित थे,'' डिस्ट्रिक्ट इंटरेक्ट प्रमुख माणिक राज सिंगला कहते है ''जो सावधानीपूर्वक योजना और विद्यार्थियों को समझने में मंडल की प्रतिबद्धता को इसका श्रेय'' देते है।

केवल चार वर्षों में मंडल के इंटरेक्ट क्लबों ने अविश्वसनीय वृद्धि देखी जो 2019 में सिर्फ पांच क्लबों से बढ़कर 2023 में 200 हो गए। सिंगला जिन रणनीतियों को 'गेम चेंजर' कहते हैं, उनमें से एक है स्कूल स्तर के कार्यक्रमों का आयोजन। ये कार्यक्रम केवल रुचि ही पैदा नहीं करते बल्कि इंटरेक्ट क्लबों से जुड़े सभी लोगों को इसके फायदे प्रदर्शित करते हुए मूल्यवान सामुदायिक संपर्क भी स्थापित करते हैं। ''इंटरेक्ट क्लब हमारे मंडल के विद्यार्थियों के विकास हेतु एक मंच बन गया हैं,'' वह कहते हैं।

मंडल इंटरेक्ट समिति ने *''इनवॉल्व एंड इवॉल्व इंटरेक्टर्स''* नामक एक कार्यक्रम शुरू किया जिसने विभिन्न रोटरी कार्यक्रमों में इंटरेक्टरों को सक्रिय रूप से शामिल करते हुए उन्हें रोटरी ब्रांड एंबेसडर में बदल दिया। हाल ही में 300 इंटरेक्टरों ने एक अंग दान अभियान में भाग लिया।

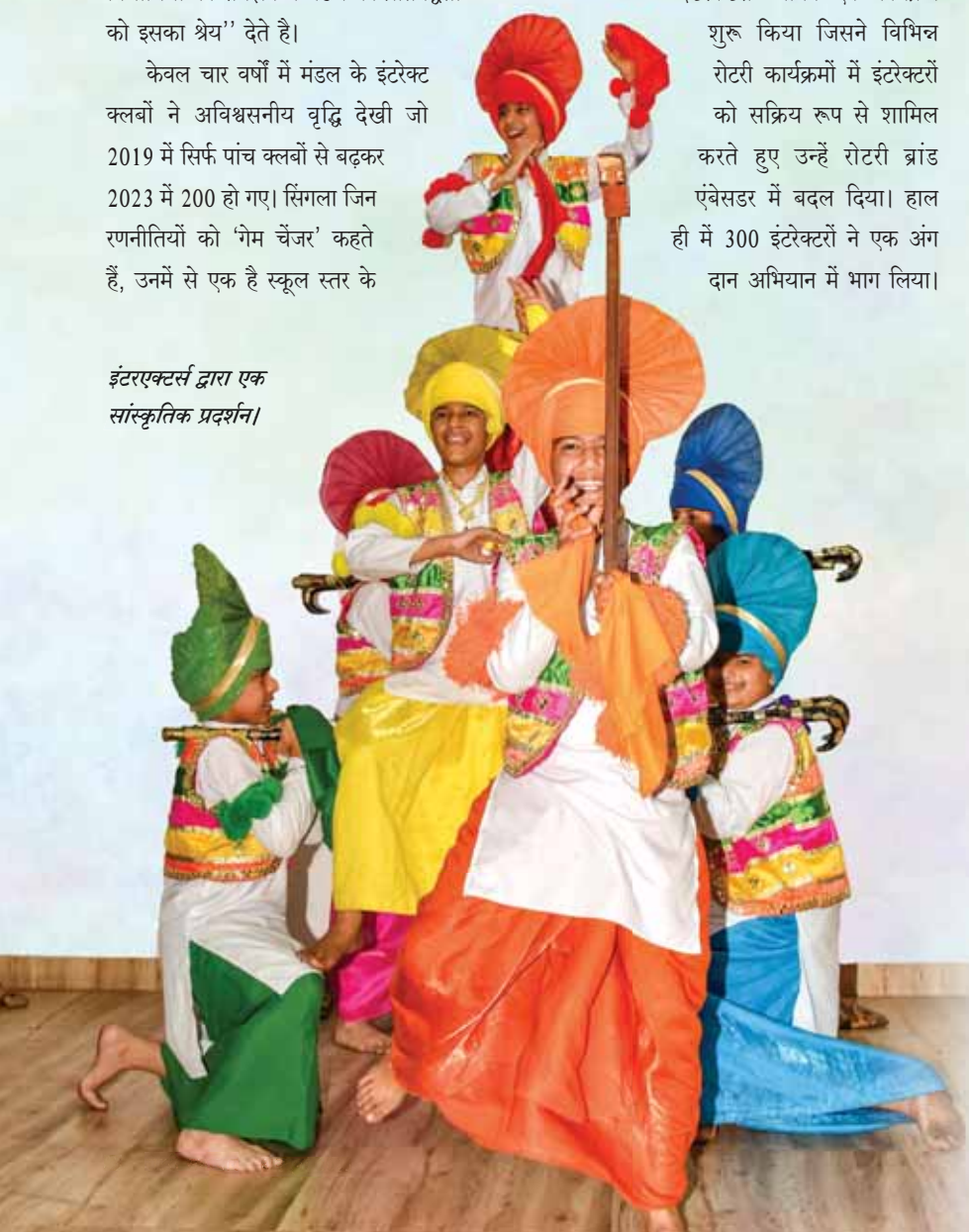

*इंटरएक्टर्स द्वारा एक सांस्कृतिक प्रदर्शन।*

सिंगला मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''उन्होंने इस कार्यक्रम का आयोजन करने वाले रोटेरियनों को भी पीछे छोड़ दिया।'' दृश्यता को बढ़ावा देने और अधिक छात्रों को आकर्षित करने के लिए मंडल ने इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में इंटरेक्ट ब्रांडिंग हेतु काफी निवेश किया। इससे इंटरेक्ट क्लबों के बारे में जागरूकता बढ़ी जिससे अधिक छात्र इसमें शामिल होने हेतु प्रोत्साहित हुए, वह कहते हैं।

इंटरेक्ट क्लबों का विस्तार करते हुए मंडल को एक चुनौती का सामना करना पड़ा। ''नए क्लब अध्यक्षों ने अक्सर मौजूदा इंटरेक्ट क्लबों का समर्थन करने के बजाय नए इंटरेक्ट क्लबों के गठन को प्राथमिकता दी।'' इसे संबोधित करने के लिए सिंगला ने उन्हें अपने क्षेत्रों के इंटरेक्ट क्लबों को जीवंत बनाने हेतु मार्गदर्शन करने के लिए एक अनुकूलन बैठक आयोजित की और उनके विकास के लिए विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए, प्रायोजित किए गए नए क्लबों और अधिकतम इंटरेक्टर साझेदारी के साथ आयोजित कार्यक्रमों की संख्या से प्रगति को मापा। रोटरी क्लब स्तर पर इंटरेक्ट क्लब समितियों के साथ मिलकर काम करना एक और महत्वपूर्ण कदम था। उनका कहना है कि इससे रोटरी क्लबों को अपने प्रायोजित इंटरेक्ट क्लब के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण प्रशिक्षण और जानकारी प्राप्त हुई।

नए सदस्यों और क्लबों को आकर्षित करने के लिए मंडल ने सोशल मीडिया मंचों का उपयोग किया, मंडल शिक्षा अधिकारियों को शामिल किया और विशेष रोटरी-इंटरेक्ट कार्यक्रमों की मेजबानी की। इन कार्यक्रमों में करियर काउंसलिंग सेमिनार से लेकर सार्वजनिक बोलने की प्रतियोगिताओं, पेंटिंग और खेल प्रतियोगिताएं, RYLA और एक इंटरेक्ट स्पेलिंग बी प्रतियोगिता शामिल थी जिसमें 1,000 छात्रों की भागीदारी देखी गई। ''हमने सरकारी स्कूलों पर ध्यान केंद्रित करते हुए विद्यार्थियों को भाग लेने

*डिस्ट्रिक्ट इंटरेक्ट चेयर माणिक राज सिंगला (दाएं से तीसरे) और पीडीजी गुलबहार सिंह रेटोले इंटरेक्टर्स के साथ।*

के लिए प्रोत्साहित किया। चीजों को आसान और सरल रखने के लिए हमने कोई पंजीकरण शुल्क नहीं लिया। 50 से अधिक सरकारी स्कूलों में अब इंटरेक्ट क्लब मौजूद हैं,'' सिंगला मुस्कराते है।

मंडल इंटरेक्ट समिति ने स्कूल के प्रिंसिपलों और शिक्षकों को परामर्श दिया जो स्थानीय स्तर पर छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे। हालांकि कोई वित्तीय प्रोत्साहन नहीं दिया गया था मगर मंडल ने प्रतियोगिता विजेताओं को भागीदारी प्रमाण पत्र एवं ट्राफियां देकर इंटरेक्टरों का मनोबल बढ़ाया और साथ ही समन्वय करने वाले शिक्षकों को भी प्रमाण पत्र प्रदान किए। ■

# लोनावाला में हुई DGNओं की बैठक

**टीम रोटरी न्यूज़**

*लोनावाला में रिट्रीट में डीजीएन अपने जीवनसाथी के साथ।*

महाराष्ट्र के लोनावाला की सुरम्य पहाड़ियों पर जोन 4,5,6 और 7 के 31 निर्वाचित डिस्ट्रिक्ट गवर्नरों ने तीन दिनों तक एक अनौपचारिक बैठक की। इस कार्यक्रम का नेतृत्व रो ई मंडल 3141 के डीजीएन मनीष मोटवानी और रो ई मंडल 3142 के डीजीएन हर्ष मकोल ने किया। रो ई निदेशक राजू सुब्रमण्यन, रो ई मंडल 3141,पीडीजी सुनील मेहरा,रो ई मंडल 3142 पीडीजी कैलाश जेठानी भी उपस्थित थे।

भावी डिस्ट्रिक्ट गवर्नरों के बीच इस प्रवास से मैत्री संबंध बढ़ा और ज्ञान साझा करने और सार्थक बातचीत के लिए एक मंच मिला। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

# "स्वस्थ भारत" के लिए कुट्टनाड से लद्दाख तक

वी मुत्तुकुमारन

पुणे के तेज धावक आशीष कासोडेकर (51), जो सोशल मीडिया पर एक वेलनेस इन्फ्लुएंसर भी हैं, लोगों को स्वस्थ और चुस्त रहने के लिए प्रेरित करना चाहते थे; पिछले साल लगातार 61 दिनों तक हर रोज पूर्ण मैराथन (42 किमी) दौड़ने की उनकी उपलब्धि उनके अंदर 'यूरेका मोमेंट' लेकर आई।

उन्होंने महसूस किया कि उन्होंने गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में नाम दर्ज कराने के लिए दो महीने तक पूर्ण मैराथन दौड़ते हुए पुणे से लद्दाख तक लगभग 2,560 किमी की दूरी तय की थी, जो पहले एक यूरोपीय व्यक्ति के नाम थी जिसने 58 दिनों तक दौड़ लगाई थी।

आशीष कासोडेकर ने कुट्टानाड, भारत की मुख्य भूमि के सबसे निचले स्थान (समुद्र तल से 4-10 फीट नीचे) से 19,300 फीट तक की ऊंचाई पर उमलिंग ला, लद्दाख तक दौड़ लगाई। उन्होंने भारत के 76वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 4,000 किलोमीटर तक 76 दिनों की यह दौड़ लगाई। रोटरी क्लब पुणे प्राइड, रो ई मंडल 3131, के संयुक्त सचिव और सार्वजनिक छवि समिति के निदेशक शैलेश सिरसिकर कहते हैं, ''आशीष ने फिटनेस को बढ़ावा देने के लिए 10 अलग-अलग राज्यों की यात्रा की। कुट्टानाड से निकलते वक़्त वहाँ के स्थानीय लोगों ने उनको गर्मजोशी के साथ विदा किया और जब वह पुणे पहुंचे तो उनका जोरदार स्वागत किया गया।''

कासोडेकर के 'लो2हाई' अभियान को उनकी देशव्यापी दौड़ के दौरान सैनिकों, सेना के कमांडरों, रोटेरियनों, गैर सरकारी संगठनों और फिटनेस प्रेमियों का समर्थन मिला। क्लब के सदस्यों ने एक फिटनेस ऐप, पेसर, के माध्यम से उनके 76-दिवसीय मिशन के दौरान प्रत्येक दिन के उनके कदमों (चलना, दौड़ना, यात्रा) को भी रिकॉर्ड किया।

वह बताते हैं, ''वास्तव में, इस दौरान देश भर में रोटेरियनों, बच्चों और सभी आयु वर्ग के लोगों सहित 50,000 से अधिक लोगों ने इस ऐप का उपयोग किया, ताकि कासोडेकर नागरिकों द्वारा उठाए गए संचयी कदमों को देख सकें।'' इस एकल मैराथन अभियान ने पुणे और अन्य रोटरी क्लबों के बीच

*उमलिंग ला में फिनिश लाइन पर आशीष कासोडेकर।*

*स्वतंत्रता दिवस पर उमलिंग ला, लद्दाख में क्लब के सदस्यों के साथ।*

फिटनेस जागरूकता की एक नई भावना पैदा की है, वह मुस्कुराते है।

फिट इंडिया आंदोलन के ब्रांड एंबेसडरों में से एक के रूप में, कासोडेकर ने लोगों को एक सरल टैगलाइन, *हम फिट, तो भारत फिट,* दी जो फिटनेस के बारे में जागरूकता फैलाने और उन्हें स्वास्थ्य और कल्याण के रास्ते पर चलने के लिए प्रोत्साहित करती है। जब वह अपनी समापन रेखा, उमलिंग ला, पहुंचे, तो रोटरी क्लब पुणे प्राइड के पांच सदस्यों ने उनका स्वागत किया और स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए राष्ट्रीय ध्वज फ़हराया।

## दुष्कर कार्यक्रम

अपनी उपलब्धि को याद करते हुए, कासोडेकर कहते हैं, ''मैं सुबह 6 बजे से शाम 4.30 बजे तक दौड़ता था, जिसके बाद मेरी तीन सदस्यीय फिजियोथेरेपी टीम मेरी देखभाल करती थी। मेरी बातचीत स्थानीय लोगों तक ही सीमित थी और मैंने लोगों को राजमार्गों पर मेरे साथ दौड़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया।'' उन्होंने छात्रों के मध्य फिटनेस नियमों को विकसित करने के लिए 76 जिला परिषद स्कूलों को खेल किटें दान की।

जबकि *लो2हाई* अभियान से फिटनेस आंदोलन में बहुत सकारात्मकता उत्पन्न हुई थी, वह कहते हैं, मैं रोटरी क्लबों की मदद से आने वाले दिनों में कुछ ऐसा ही करने की उम्मीद कर रहा हूं। हाल ही में, उनके संगठन, सिंपल स्टेप्स फिटनेस, ने 600 से अधिक वरिष्ठ नागरिकों के लिए मिनी-मैराथन (3/5किमी) आयोजित करने के लिए रोटरी क्लब पुणे प्राइड के साथ हाथ मिलाया जिसमें वह मानद सदस्य हैं। उन सभी को मेडल और प्रमाण पत्र दिए गए। उनके मिशन की अधिक जानकारी के लिए, *www.low2high.in* पर लॉग ऑन करें।■

# कूड़ा- रहित साहसिक सफर

प्रीति मेहरा

**यह ट्रैकिंग का मौसम है, और यह अपना सर्वश्रेष्ठ हरित यात्रा को आगे बढ़ाने का समय है।**

मेरे पड़ोसी इस महीने कश्मीर की अपनी आगामी ट्रैकिंग यात्रा के लिए जोरदार तैयारी कर रहे हैं। वे दैनिक तंदुरुस्ती, योजना और पर्यावरण-अनुकूल मुद्दों, आवश्यक चीजों की पैकिंग, ट्रेल के नियम, और अपने पर्वतीय साहसिक यात्रा के दौरान पर्यावरण की सुरक्षा करते हुए अपनी सेहत बनाए रखने जैसे महत्वपूर्ण विषयों की चर्चा में व्यस्त हैं।

उनकी मदद करने के लिए, मैंने इस विषय पर कुछ शोध करने का फैसला किया और मुझे भारत और विदेशों से कई वेबसाइटें मिलीं जहाँ संभावित महरितफ ट्रैकर्स के लिए सुझाव और सलाह मौजूद थे। उनमें से, मुझे *indiahikes.com* अचूक लगा। वेबसाइट और इसे चलाने वाली कंपनी (इंडियाहाइक्स) न केवल देश में चुने जा सकने वाले कई ट्रेकों की सूची बनाती है, बल्कि यह उत्साही लोगों के लिए पर्यटन का भी आयोजन करती है। और सोने पर सुहागा यह है कि इसमें पर्यावरण प्रेमियों के लिए मग्रीन ट्रेल्स पहलफ है।

मुझे उनका प्रेरक वाक्य बहुत पसंद आया- पहाड़ों को वैसा ही साफ-सुथरा छोड़ें जैसा वह है। और एक के बाद एक वीडियो में, इंडियाहाइस्को के संस्थापक अर्जुन मजूमदार लोगों से ट्रेक पर जाने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं कि जाएँ और प्रकृति

को उसके वास्तविक स्वरूप में देखें। साथ ही, लक्ष्मी सेल्वाकुमारन, ग्रीन ट्रेल्स इनिशिएटिव की प्रमुख के कुछ व्यावहारिक ब्लॉग हैं कि वास्तव में ट्रैक पर जाने पर क्या किया जाना चाहिए और क्या नहीं किया जाना चाहिए।

लेकिन इससे पहले कि मैं विस्तार से बताऊं कि वह क्या सुझाव देती है, मुझे यह बताना होगा कि ङ्घग्रीन ट्रेल इनिशिएटिवफ केवल सलाह देने के बारे में नहीं है। यह टीम, ट्रेकर्स के साथ, अन्य पैदल चलने वाले यात्रियों द्वारा फेंके गए कचरों को उठाकर उन रास्तों को भी साफ करती है, जहाँ से वे गुजरते हैं। वे अपने साथ इको बैग रखते हैं जिसमें वे कचरे को संग्रहित करते हैं ताकि बाद में कचरों को अलग करने में आसानी हो सके। इंडियाहाइक्स वेबसाइट का दावा है कि वह देश भर में ट्रैकिंग ट्रेल्स से 100 टन से अधिक कूड़ा हटाने में कामयाब रही है। यह सराहनीय कार्य है। सफाई के अलावा, टीम कहती है कि वे अपने सारे कामों में प्राकृतिक संरक्षण का ध्यान रखती है। इसमें वे उपकरण की आपूर्ति कैसे करते हैं, कैसे खरीदते हैं या ऊंचाई पर मानव अपशिष्ट का प्रबंधन कैसे करते हैं।

तो, वे कौन सी खूबसूरत नियम हैं जिनकी सुझाव लक्ष्मी अपने ब्लॉग में देती हैं। यहां कुछ क्या करें और क्या न करें के बारे में बताया गया है:

अपना खुद का बैकपैक साथ रखें क्योंकि यह पहाड़ी ट्रैकिंग का हिस्सा है। इसे कुलियों या खच्चरों पर न लादें, जिससे ट्रैक पर भीड़ हो जाती है। सावधानी से पैक करके यह सुनिश्चित कर लें कि आप प्रति व्यक्ति 9 किलोग्राम की आदर्श वजन सीमा का पालन करें।

केवल पुन: प्रयोग में आने वाले बोतलों, गिलासों और प्लेटों का ही उपयोग करें। एकल उपयोग वाली पानी की बोतलें या स्टायरोफोम प्लेटें बहुत बड़ी संख्या में मिलते हैं। यदि उन्हें रास्ते में ही फेंक दिया जाए तो उन्हें नष्ट होने में दशकों लग जाते हैं।

केवल रसायन-मुक्त सामग्री ही साथ ले जाएं। लक्ष्मी कहती हैं: शौचालय और सौंदर्य प्रसाधन अक्सर हानिकारक रसायनों से बने होते हैं। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार सनस्क्रीन में ऑक्सीबेनजोन को खतरनाक और कोरल रीव्स के लुप्त होने का जिम्मेदार ठहराया गया है और टूथपेस्ट में सोडियम लॉरथसल्फेट हानिकारक बताया गया है। जो लोग इनका उपयोग करते हैं, उनके शरीर के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी यह हानिकारक हैं।

कचरे को इकट्ठा करने और अलग करने में हिस्सा लें ताकि आप पर्यावरण को प्राकृतिक स्थिति में छोड़ सकें।

अपना कचरा अपने साथ वापस ले जाएं और उसका सही तरीके से समाधान करें। लक्ष्मी इस्तेमाल किए गए सैनिटरी नैपकिन का उदाहरण देती हैं और बताती हैं कि कैसे वे ऊंचाई पर विघटित नहीं होते हैं। वह सुझाव देती हैं कि एक ज़िप -लॉक बैग ले जाना सबसे अच्छा है जिसमें आप इस्तेमाल किए गए नैपकिन रख सकते हैं और जब आप वापस शहर लौटें तो उनको फेंक सकते हैं।

अब क्या न करें :

ट्रेक पर डिब्बाबंद भोजन न ले जाएँ। और आप भोजन को पुन: प्रयोग किए जाने वाले बॉक्स, पेपर बैग या ज़िप-लॉक बैग में रखें ताकि आप बिस्किट या मीठे रैपर जैसे पैकेट का कचरा उत्पन्न न कर पाएँ।

लापरवाही से न खाएँ। हालाँकि मैगी और इंस्टेंट खाना पहाड़ों के ढाबों में उपलब्ध रहता है, और खाने में अच्छा भी लगता है, लेकिन यह मैदे का बना होता है और अपच का कारण बन सकता है। ट्रेक में आपको पर्याप्त पोषण की आवश्यकता होती है जो स्थानीय व्यंजनों में मिल जाता है। इसलिए, स्थानीय भोजन चुनें जो आपको स्थानीय संस्कृति के करीब लाता है, किसान समुदाय की मदद करता है और स्थायी आजीविका प्रदान करता है।

जब आप जलधाराओं और नदियों को पार कर रहे हों तो पानी को प्रदूषित न करें क्योंकि यह स्थानीय आबादी के लिए पीने के पानी का स्रोत है। इसलिए, कभी भी पानी के स्रोत में न धोएं और न ही शौच करें। साथ ही, आपके सामने आए संसाधनों को बर्बाद न करें, किसी और को भी उनकी ज़रूरत होती है।

पहाड़ी रास्तों पर रहने वाले अन्य प्राणियों की शांति में खलल डालने से बचें। तेज आवाज में न बोलें और किसी तरह का दखल न दें। वास्तव में, यदि आप पक्षियों और अन्य जानवरों को डरा देंगे तो आपकी ही हानि होगी। वन्य जीवन को शांति से बैठकर देखना, प्राकृतिक सौंदर्य को निकट से अनुभव करने का हिस्सा है।

सभी ट्रेकर्स को कुछ करने और कुछ ना करने के नियमों का पालन करने में परेशानियों का सामना करना चाहिए। माउंट एवरेस्ट पर जाने वाले रास्ते को पेशेवर और नौसिखिया पर्वतारोहियों द्वारा किया गया नुकसान, प्रकृति के संरक्षण और प्रकृति के प्रति आदर और सम्मान के जरूरत को दर्शाता है। जलवायु परिवर्तन के कारण बर्फ पिघल रहे हैं, और दशकों से जमा कचरा अचानक सामने आ रहा है। आज, एवरेस्ट को अक्सर ''दुनिया का सबसे ऊंचा कचरों का ढेर'' कहा जाता है।

लेखिका अलियाह एनियाथ के शब्द उन सभी लोगों के लिए अच्छी सलाह हैं जो ट्रैकिंग पर जाते हैं: तस्वीरों के अलावा कुछ न लें, पैरों के निशानों के अलावा कुछ न छोड़ें, सिर्फ अपना समय दें और कुछ नहीं।

*लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।*

# मैसूरु में बहु-मंडल नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम

टीम रोटरी न्यूज़

*रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी (दाएं) और राजू सुब्रमण्यन ने (बाएं से) पीडीजी राजेंद्र राय, मंडल सचिव (प्रशिक्षण) एच एम हरीश, पीडीजी नागेंद्र प्रसाद, रो ई मंडल 3181 के डीजी एच आर केसव, रो ई मंडल 3170 के डीजी नासिर बोरसदवाला, क्लब के अध्यक्ष एम एस हरीश, महेश एस और क्लब सचिव एम आर राघवेंद्र की उपस्थिति में आरएलआई कार्यक्रम का उद्घाटन किया।*

रोटरी क्लब विजयनगर मैसूर, रो ई मंडल 3181, ने एक बहु-जिला रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट (आरएलआई) की मेजबानी की। रो ई के निदेशक राजू सुब्रमण्यन और अनिरुद्धा रॉयचौधरी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और देश भर से आए 50 प्रतिनिधियों को संबोधित किया।

रो ई निदेशक सुब्रमण्यन ने नेतृत्व संस्थानों में भाग लेने वाले रोटेरियनों के महत्व पर जोर दिया और रेखांकित किया कि उनमें से कई कईयों को रोटरी और इसकी वैश्विक गतिविधियों के बारे में अच्छी जानकारी नहीं थी। उन्होंने रो ई बोर्ड और सीओएल की सराहना की, जिन्होंने कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित किया, और कहा कि ''उत्कृष्ट क्लब नेतृत्व लगातार बदलती दुनिया में रोटरी के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है।''

रो ई निदेशक रॉयचौधरी ने आरएलआई की मूल स्रोत पर प्रकाश डाला और इसे एक क्लब के भीतर संभावित नेताओं को विकसित करने के लिए एक समर्पित कार्यक्रम बताया। 1992 में स्थापित, आरएलआई हर महाद्वीप में उपस्थिति के साथ एक विश्वव्यापी कार्यक्रम बन गया है। उन्होंने कहा, ''आरएलआई अन्य रो ई प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अलग है क्योंकि यह पद-विशिष्ट प्रशिक्षण के बजाय रोटरी और नेतृत्व कौशल के बारे में बताता है।''

मंडल सचिव प्रशिक्षण और कार्यक्रम के आयोजक एचएम हरीश ने इस बात पर प्रकाश डाला कि यह तीन दिवसीय व्यापक पाठ्यक्रम ''एक बुनियादी पाठ्यक्रम से परे है और महत्वपूर्ण रोटरी विषयों पर गहन सेमिनार प्रदान करता है। कोई भी रोटेरियन इन पाठ्यक्रमों में भाग ले सकता है, या यदि कोई क्लब अपने सदस्यों की पहचान करता है संभावित नेताओं के रूप में, यह उन्हें कार्यक्रम के लिए प्रायोजित कर सकता है।'' आरएलआई का मिशन रोटरी की वैश्विक पहुंच की गहन समझ के साथ रोटेरियनों को सशक्त बनाना और रोटरी के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक नेतृत्व कौशल का प्रोत्साहित करना है।

इस कार्यक्रम में रो ई मंडल 3181 के डीजी एच आर केशव, डीजीएन पी के रामकृष्ण, पीडीजी नागेंद्र प्रसाद; रो ई मंडल 3170 के डीजी नासिर बोरसदवाला, रो ई मंडल 3191 के डीजी उदयकुमार भास्कर, रो ई मंडल 3192 के डीजी श्रीनिवास मूर्ति, पीडीजी राजेंद्र राय और रो ई मंडल 3203 के डीजी सुंदर राजन शामिल हुए। प्रशिक्षण का नेतृत्व रोटेरियन्स मोहन कुमार, गुरु नागेश प्रसाद और आरएलआई आयोजक प्रकाश बेलवाडी ने किया। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

# एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

## रोटरी नेताओं की राजश्री बिड़ला से मुलाकात

*बाएं से: टीआरएफ ट्रस्टी भरत पांड्या, पीआरआईडी अशोक महाजन, आदित्य बिड़ला फाउंडेशन की अध्यक्ष राजश्री बिड़ला और टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष बेरी रसिन।*

टीआरएफ के ट्रस्टी अध्यक्ष बेरी रसिन, ट्रस्टी भरत पंड्या और पीआरआईडी अशोक महाजन ने मुंबई में उनके कार्यालय में आदित्य बिड़ला फाउंडेशन फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव्स एंड रूरल डेवलपमेंट की चेयरपर्सन राजश्री बिड़ला से मुलाकात की। रोटरी नेताओं ने उनके फाउंडेशन द्वारा रोटरी को दिए गए उदार दान के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और उन्होंने उन्हें निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया।■

## दिल्ली रोटेरियन-शिक्षक का सम्मान

*रितिका आनंद, रोटरी क्लब दिल्ली सिटी, रो ई मंडल 3012, भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से पुरस्कार प्राप्त करते हुए।*

रोटरी क्लब दिल्ली सिटी, रो ई मंडल 3012 की संयुक्त सचिव और सेंट मार्क्स सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल, मीरा बाग, दिल्ली की उप-प्रिंसिपल रितिका आनंद को भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें पिछले दो वर्षों में शिक्षण में उत्कृष्टता के लिए सीबीएसई पुरस्कार और दिल्ली राज्य शिक्षक पुरस्कार भी मिला है।■

## अंगदान अभियान

*डी जी अशोक गुप्ता (दाएं) मुजफ्फरनगर से रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।*

मुजफ्फरनगर और खतौली (रो ई मंडल 3100) के पंद्रह रोटरी क्लबों ने रोटरी क्लब दिल्ली मंथन, रो ई मंडल 3011 के नेतृत्व में एक अंगदान रैली में भाग लिया। इस रैली में विभिन्न शहरों के प्रतिभागी शामिल थे, रैली मुजफ्फरनगर के बेगराजपुर मेडिकल कॉलेज से शुरू हुआ और दिल्ली में समाप्त हुआ। रो ई मंडल 3100 के डीजी अशोक गुप्ता ने अंगदान के महत्व को बताया।■

## बच्चों के लिए स्कूल किट

*छात्र अपने नए बैग के साथ।*

रोटरी क्लब राजकोट, रो ई मंडल 3060, राजकोट के 93 से अधिक नगरपालिका स्कूलों के वंचित छात्रों की मदद के लिए एक 'स्कूल किट वितरण' परियोजना चला रहा है। 1 जुलाई, 2023 को शुरू हुई इस परियोजना का लक्ष्य अनुमानित लागत पर 4,000 से अधिक छात्रों को आवश्यक स्कूल सामग्री प्रदान करना है जिसकी लागत ₹20 लाख आँकी गई है।■

# आपके गवर्नर्स

**निहिर दवे**

सिविल इंजीनियर

रोटरी क्लब आनंद राउंड टाउन, रो ई मंडल 3060

## कैंसर जांच की प्राथमिकता

अपने चाचा रमेश दवे से प्रेरित होकर, वे 1996 में रोटरी में शामिल हुए। उनकी पत्नी वैशाली, एक रोटेरियन, उनकी शक्ति स्तंभ हैं। उन्हें विश्वास है कि वे अगले वर्ष जुलाई तक 10 नए क्लब और 500 नए सदस्यों को रोटरी में शामिल कर पाएंगे।

उनकी प्राथमिकता जागरूकता, स्क्रीनिंग और टीकाकरण अभियान के माध्यम से स्तन और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर का उन्मूलन है जो 10 लाख से अधिक महिलाओं तक पहुंचेगा। हमने ₹5 लाख के सीएसआर अनुदान के माध्यम से कैंसर का पता लगाने के लिए सात कोल्पोस्कोपी मशीनें खरीदी हैं। क्लबों द्वारा अपनाए गए 3,000 टीबी रोगियों के बीच प्रोटीन युक्त भोजन वितरित किया जाएगा।

एक अन्य पसंदीदा परियोजना, व्यवसायिक केंद्रों में प्रशिक्षित महिलाओं को 700 सिलाई मशीनों (जिला अनुदान: ₹70 लाख) का वितरण है। ग्रामीण महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण देने के लिए सरकारी संस्था आरएसईटीआई के साथ वे समझौता करेंगे। सौराष्ट्र में एक आधुनिक श्मशान (50,000 डॉलर) सहित लगभग पाँच जीजी परियोजनाएँ प्रक्रिया में हैं जिसमें वडोदरा के एक सरकारी अस्पताल में नए आईसीयू (75,000 डॉलर); और मुनि सेवा आश्रम, वडोदरा में एक व्यावसायिक केंद्र(₹1.5 करोड़) भी शामिल हैं। उनका टीआरएफ देने का लक्ष्य 1.5 मिलियन डॉलर है।

उनके मंडल के क्लब 20,000 से अधिक ग्रामीण और शहरी रोगियों की जांच के लिए लगभग 100 चिकित्सा शिविर आयोजित करेंगे।

**सुनील बंसल**

स्टॉक ब्रोकर/विश्लेषक

रोटरी क्लब वाराणसी ग्रेटर, रो ई मंडल 3120

## यूपी में रोटरी की ब्रांडिंग की कमी है

सुनील बंसल का कहना है कि रोटरी को 40 साल से कम उम्र के युवा पेशेवरों और अन्य लोगों को आकर्षित करने के लिए पूर्वी उत्तर प्रदेश में सार्वजनिक छवि बढ़ाने वाली परियोजनाओं के साथ अच्छी ब्रांडिंग की जरूरत है। ''अब, रोटेरियन बनना यहाँ एक महंगा मामला है। जबकि वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹15,000 है, जिसमें से ₹8,000 रो ई में चला जाता है, परियोजनाओं को शुरू करने के लिए बहुत कम पैसा बचता है। युवा लोग रोटरी में शामिल नहीं होना चाहते क्योंकि उन्हें यह आकर्षक नहीं लगता है।''

उनका लक्ष्य छह नए क्लब शुरू करने का है - जिसमें एक पहले से ही शुरू हो चुका है और इसे 10 प्रतिशत से अधिक बढ़ाने का लक्ष्य है। जीजी परियोजनाओं में वाराणसी में एक नया ब्लड बैंक (₹1 करोड़) खोला जाएगा; लखनऊ में पांच मशीनों वाला एक रोटरी डायलिसिस सेंटर (₹45 लाख); और 20 मुर्दाघर फ्रीजर बॉक्स (₹25 लाख) दान किए जायेंगे। पांच मौजूदा हैप्पी स्कूलों को ₹10 लाख की लागत से और बेहतर किया जाएगा।

एक लाख मरीजों की जांच के लिए 500 से अधिक चिकित्सा शिविर आयोजित किए जाएंगे। उनका लक्ष्य टीआरएफ के लिए 200,000 इकट्ठा करना है। बंसल 1978 में कॉलेज में शामिल हुए और उनके रोटरेक्ट गाइड निशिकांत भटनागर ने उनका मार्गदर्शन किया और 2003 में 41 वर्ष की उम्र में वे रोटरी से जुड़े।

# से मिलिए

**वी मुत्तुकुमारन**

**मानिक एस पवार**

सिविल इंजीनियर

रोटरी क्लब गुलबार्ग नॉर्थ, रो ई मंडल 3160

## 10 मेगा GG परियोजनाएं

माणिक पवार, अगले साल जुलाई तक 10 नए क्लब शुरू करना चाहते हैं और उनका लक्ष्य 10 प्रतिशत सदस्यता वृद्धि की है। उन्होंने 10 GG परियोजनाएं तैयार की हैं - एक मैमोग्राफी बस (60,000 डॉलर, स्वीकृत); एक मोबाइल डेंटल क्लिनिक (20,000 डॉलर); एक कार्डियक केयर वैन (40,000 डॉलर); और गाँवों में 10 वृहद आर ओ (वॉटर फिल्टर) लगाने की है (40,000 डॉलर) जहाँ जल प्रदूषण से जल-जनित बीमारियाँ होती हैं।

पवार कहते हैं, सीएसआर अनुदान और क्लब योगदान के माध्यम से, हम कर्नाटक के सरकारी कॉलेजों में छात्रों को 1,000 कंप्यूटर (₹10 लाख) वितरित कर रहे हैं। एक बड़े पैमाने पर वनीकरण परियोजना (₹34 करोड़) के तहत चित्रदुर्ग मंडल के चल्लाकेरे में 1,500 एकड़ बंजर भूमि में हमने रो ई मंडल 3191 और रो ई मंडल 3192 के सहयोग से 220 एकड़ में पौधे लगाए हैं। उनका लक्ष्य टीआरएफ के लिए 300,000 डॉलर इकट्ठा करना है।

पवार ग्रामीण स्कूली लड़कियों को 2,000 साइकिलें वितरित करेंगे। मंडल निधि के माध्यम से वे प्रत्येक क्लब को 10 सिलाई मशीन प्रदान करेंगे और मानसिक रूप से बीमार लोगों के लिए 100 नशा मुक्ति शिविर आयोजित करें। वह 2004 में एक वास्तुकार बसवराज खंडेराव से प्रभावित होकर रोटरी में शामिल हुए थे।

**हीरा लाल यादव**

प्लाइवुड निर्माता

रोटरी क्लब हुगली, रो ई मंडल 3291

## रोटरी अनोखी है

रोटरी नेत्र अस्पतालों की स्थापना के विशेषज्ञ, हीरा लाल यादव, भारत में 18 और बांग्लादेश में दो नेत्र अस्पतालों के निर्माण के प्रमुख व्यक्ति हैं। वह मुस्कुराते हुए कहते हैं, जल्दी ही रो ई मंडल 3291 में 12वां रोटरी नेत्र अस्पताल (GG: ₹1.2 करोड़) उत्तर 24 परगना जिले में बनेगा।

इस साल, ''हम 55,000 मोतियाबिंद सर्जरी करेंगे; और सात लाख मरीजों की आँखों की जाँच की जाएगी।'' उनका लक्ष्य 12 नए क्लब बनाना है, और 500 नए सदस्यों को रोटरी में शामिल करना है; जिसमें 200 पहले ही शामिल हो चुके हैं। वे हावड़ा में एक ब्लड बैंक की स्थापना के लिए (₹55 लाख) जीजी को आवेदन कर रहे हैं, और पांच डायलिसिस केंद्रों की स्थापना (प्रत्येक ₹35 लाख) के लिए एक GG प्रक्रियाधीन है। वह 2000 से रोटरी हुगली आई हॉस्पिटल चला रहे हैं।

सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए चल रहे टीकाकरण अभियान का विस्तार किया जाएगा। टीआरएफ देने का उनका लक्ष्य 500,000 है।1982 से 1993 तक रोटरेक्टर के रूप में बिताए गए समय ने उन्हें 1995 में रोटरी में शामिल होने के लिए मजबूर किया। वे कहते हैं, ''रोटरी एक अनोखा वैश्विक परिवार है जहाँ रोटेरियन्स दुनिया में उम्मीद जगाने लिए हाथ मिलाते हैं।''

*एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा*

संगीत और माधुर्य

# लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
## संगीतकार सपनों के

**एस आर मधु**

उनका संगीत एक सुपरमार्केट है, एक मजेदार यात्रा।'' कहना है श्रेया घोषाल का लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के बारे। वह आगे कहती हैं, ''जब मैं एल पी के गाने गाती हूं, तो अक्सर खुद पर काबू नहीं रख पाती और रो पड़ती हूं। एक बार जब टीवी शो इंडियन आइडल में ऐसा हुआ तो सब पूछने लगे कि मैं क्यों रो रही हूं। मैंने कहा, मुझे भी नहीं पता, क्यों रो रही हूं।''

एक समय था जब थिएटर में दर्शक स्क्रीन पर सिक्के उछाल कर गानों के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त करते थे। 1979 एल पी की फिल्म *सरगम* का गाना - विशेष रूप से *ढपली वाले ढपली बजा* - इतना लोकप्रिय हुआ कि सिनेमाघरों से एक करोड़ रुपये के सिक्के इकट्ठे हुए थे।

फिल्म स्टार जितेंद्र ने एक बार कहा था कि उनके पास जुहू में एक चार मंजिला घर था, उनमें से कम से कम दो मंजिलें एल पी की वजह से थीं, क्योंकि उनके करियर को ऊंचाई देने में एल पी का काफी योगदान रहा था।

एल पी को ऐसे कई प्रशस्ति पत्र दिए गए हैं। तीन दशक से अधिक समय तक वे बॉलीवुड में सक्रिय रहे (1963-1963), अविश्वसनीय रूप से उन्होंने 500 फिल्मों के लिए 2,900 से अधिक गाने संगीतबद्ध किये हैं। फ़िल्मी हलकों में उनके उपनाम एल पी का मतलब था 'लॉन्ग प्लेईंग।' आप बिना कोई गाना दोहराए 24x7 एल पी के गाने बजा सकते हैं। उनका करियर दीर्घायु रहा था और उसमें गुणवत्ता और व्यापक अपील थी। उनकी पहचान सबसे अलग थी और वे सर्वश्रेष्ठ हुआ करते थे, उनके क्लासी गानों में व्यापक अपील होती थी।

**फिल्मफेयर और बिनाका गीतमाला**

एल पी ने फिल्मफेयर का सर्वश्रेष्ठ संगीतकार पुरस्कार सात बार जीता - *दोस्ती,* 1964 के लिए; मिलन, 1967; *जीने की राह,* 1969; *अमर अकबर एंथनी,* 1977; *सत्यम शिवम सुन्दरम,* 1978; *सरगम,* 1979; *कर्ज़,* 1980।

अमीन सयानी द्वारा संचालित रेडियो सीलोन का प्रसिद्ध हिट परेड कार्यक्रम बिनाका गीतमाला (1953 -1994) में यह जोड़ी प्रमुख रहती थी,

*लक्ष्मीकांत (दाएं) और प्यारेलाल।*

जिसमें हिंदी फिल्मी गीतों को संगीत रिकॉर्ड की बिक्री और साथ में श्रोताओं के अनुरोधों के आधार पर हर हफ्ते लोकप्रियता का स्थान दिया जाता था।

इस में एल पी को पहली बार 1963 की फंतासी फिल्म *पारसमणि* के *हँसता हुआ नूरानी चेहरा* के साथ कार्यक्रम में शामिल किया गया था। एल पी के करियर के चरम पर, 60 के दशक से 80 के दशक के मध्य तक, प्रत्येक साप्ताहिक कार्यक्रम में आधे से ज्यादा गाने एल पी के होते थे।

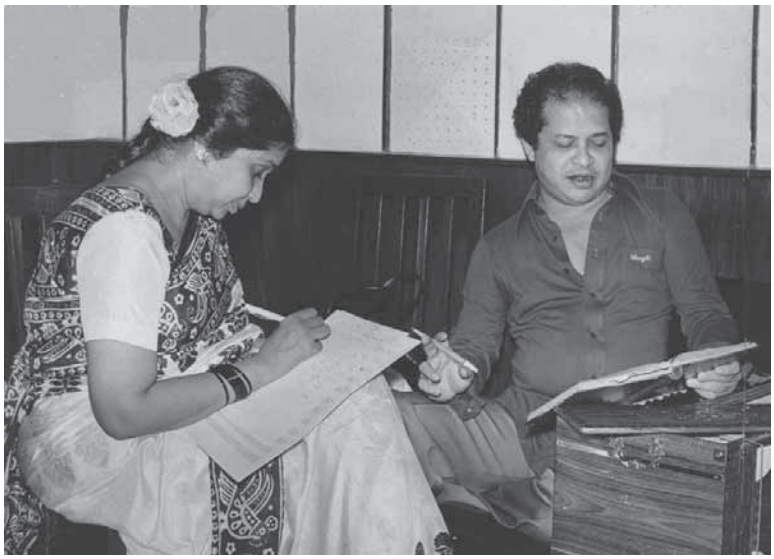

*आशा भोसले के साथ लक्ष्मीकांत।*

## एल पी के करियर का उत्थान

एल पी ने गरीब से अमीर बनने की कहानी का उदाहरण स्थापित किया है । एक मिल मजदूर और एक नर्स के बेटे लक्ष्मीकांत का जन्म 3 नवंबर, 1937 को हुआ था। उन्होंने अपना बचपन बंबई के विले पार्ले की मलिन बस्तियों में अत्यंत गरीबी में बिताया। बचपन से ही संगीत में गहरी रुचि थी, उन्होंने हुसैन अली से मैंडोलिन बजाना सीखा और बाद में हुस्नलाल (हुस्नलाल-भगतराम जोड़ी में से) से वायलिन बजाना सीखा।

प्यारेलाल का जन्म 3 सितंबर 1940 को हुआ था। उनके पिता पंडित रामप्रसाद शर्मा, एक बेहतरीन वॉयलिन कलाकार थे और उन्हीं के संस्कारों और प्रभाव के चलते प्यारेलाल में एक बेहतरीन कम्पोजर और ऑर्केस्ट्रा अरेंजर के गुण विकसित हो सके। उन्होंने ही संगीत की मूल बातें सिखाई थीं। उन्होंने 8 साल की उम्र में वायलिन सीखना शुरू कर दिया था और रोज 8-10 घंटे इसका अभ्यास करते थे। वायलिन उन्होंने गोवा के संगीतकार एंथोनी गोंसाल्वेस से बजाना भी सीखा - प्यारेलाल ने फिल्म अमर अकबर एंथोनी के गीत माई नेम इज एंथोनी गोंसाल्वेस से उन्हें अमर बना दिया।

> **लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल की मुलाकात एक क्रिकेट पिच पर हुई जब वे क्रमशः 15 और 12 वर्ष के थे। कालांतर में वे बहुत अच्छे दोस्त बने, एक साथ संघर्ष किया और 35 वर्षों तक एक साथ अद्भुत संगीत दिया।**

लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल की मुलाकात एक क्रिकेट पिच पर हुई जब वे क्रमशः 15 और 12 वर्ष के थे। कालांतर में वे बहुत अच्छे दोस्त बने, एक साथ संघर्ष किया और 35 वर्षों तक एक साथ अद्भुत संगीत दिया।

## लता का प्रभाव

अंततः एल पी की जबरदस्त सफलता के पीछे सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर का भी हाथ रहा। उन्होंने इन दोनों के लिए 712 गाने गाए हैं। लता ने *सती सावित्री* (1967) में एल पी के गीत *जीवन जीवन डोर तुम्ही संग बाँधी* को अपने पसंदीदा गीतों में एक बताया था।

लता ने एल पी के लिए कैबरे गाने भी गाए, किसी और संगीतकार ने ये करिश्मा करने की हिमाकत नहीं की थी। 1969 के *इंतकाम* में हेलेन पर फिल्माया गया उनका प्रसिद्ध गाना - *आ जाने जां* - सुपर-हिट था। एल पी की वजह से ही लता ने राज कपूर की *बॉबी* (1973)के लिए आवाज़ दी थी। (1964 में आई *संगम* के लिए रॉयल्टी के भुगतान को लेकर उपजे

मतभेद के कारण पहले लता और राज कपूर के बीच बातचीत बंद थी।) जब एक आलोचक ने कहा था कि लता की आवाज़ एल पी के साधारण गीतों को भी असाधारण बना देती हैं, तो एल पी ने जवाब दिया था, ''जिस तरह रसोइया अपने भोजन को स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें नारियल बुरकते हैं, उसी तरह हम अपने गीतों को बेहतर बनाने के लिए लता की आवाज़ का इस्तेमाल करते रहते हैं।''

बॉम्बे में एक संगीत कार्यक्रम में लता ने 12 वर्षीय लक्ष्मीकांत को पहली बार मैंडोलिन बजाते हुए सुना था। वह मंत्रमुग्ध हो गई और उसे बाहर बुलाया। बाद में वह और प्यारेलाल दोनों बच्चों के लिए मंगेशकर परिवार द्वारा संचालित अकादमी, सुरील बाल कला केंद्र में शामिल हो गए। सुरील के लड़के लता के घर में दिन-रात, लय और धुन को आत्मसात करते रहते थे। लता ने दोनों बच्चों को, शीर्ष संगीतकारों से अपने ऑर्केस्ट्रा में शामिल करने का आग्रह किया और उन्होंने मान लिया। लेकिन एल एंड पी कम वेतन से संतुष्ट नहीं थे। प्यारेलाल ने वियना में प्रवास कर अपने दोस्त जुबिन मेहता का अनुकरण करने के बारे में सोचा जो पश्चिम में एक सेलिब्रिटी बन चुके थे। लेकिन लक्ष्मीकांत ने उन्हें यह कहकर मना कर दिया कि वे दोनों मिलकर बॉलीवुड में नाम कमा सकते हैं।

स्वतंत्र संगीतकार के रूप में एल पी को पहला ब्रेक 1963 की फिल्म *पारसमणि* में मिला। फिल्म का संगीत सुपर हिट हुआ था। आज भी इसके कई

**प्यारेलाल ने वायलिन गोवा के संगीतकार एंथोनी गोंसाल्वेस से बजाना सीखा – उन्होंने फिल्म *अमर अकबर एंथोनी* के गीत *माई नेम इज एंथोनी गोंसाल्वेस* से उन्हें अमर बना दिया।**

गाने गुनगुनाए जाते हैं - जैसे जोशपूर्ण, जोश से भरा मदहोश कर देने वाला, तीव्र गति *हंसता हुआ नूरानि चेहरा* (लता और कमल बारोट) और मंत्रमुग्ध कर देने वाला रोमांटिक *वो जब याद आए* (रफी और लता)। लता और रफी ने निःशुल्क गाया था, लेकिन लता ने ₹1,001 का चेक स्वीकार किया था - शुल्क के बजाय यह गुरु दक्षिणा थी। बाद में छोटे बजट की कुछ फिल्मों में एल पी ने लता की फीस का कम से कम कुछ हिस्सा अवश्य अपनी जेब से चुकाया था।

*पारसमणि* के बाद अगले ही वर्ष *दोस्ती* प्रदर्शित हुई जो और भी अधिक सफल हुई। उसी वर्ष शंकर-जयकिशन की हाई-प्रोफाइल *संगम* और मदन मोहन की *वो कौन थी* के बावजूद, एल पी ने सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का फिल्मफेयर पुरस्कार जीता।

अब बॉलीवुड में एल पी युग शुरु हो चुका था, उनकी प्रतिष्ठा और सफलता धूम मचाती रही। *आए दिन बहार के* (1966) बड़ी स्टार कास्ट के साथ एल पी की पहली म्यूजिकल हिट थी। 1967 पूरी तरह से लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल का था, जिसमें कई हिट फ़िल्में थीं - *फ़र्ज़* जिसने स्वर्ण जयंती मनाई, *अनीता, शागिर्द, पत्थर के सनम, नाइट इन लंदन, जाल* - और *मिलन* जिसने एल पी को दूसरा फिल्मफेयर पुरस्कार दिलवाया।

1969 से,शंकर-जयकिशन को विस्थापित करते हुए एल पी को बॉलीवुड के नंबर 1 संगीतकार के रूप में स्थापित हो गए। प्रमुख फिल्म घरानों में अनुसूचित संगीत निर्देशकों को एल पी को लेने के लिए के लिए एक-दूसरे में होड़ लग गई।

एल पी पर कीमत में कटौती करने का आरोप लगा, इस आरोप से उन्होंने इनकार नहीं किया। लक्ष्मीकांत ने कहा, ''जो चीज कोई अन्य ₹10 में करता है, अगर हम दो रुपये में पेश कर सकते हैं तो इसमें गलत क्या है? हम सिर्फ लागत कम

*प्यारेलाल वायलिन बजाते हुए।*

*लक्ष्मीकांत।*

करते हैं, गुणवत्ता नहीं।'' हर हिट फिल्म के साथ अपनी दरें बढ़ाने की एसजे की आदत से कई फिल्म निर्माता परेशान थे और एल पी में उन्हें एक आकर्षक विकल्प दिखा था।

1970 और 80 के दशक के दौरान एल पी का रथ तेज़ रफ़्तार से दौड़ता रहा, लेकिन 1990 के दशक में रफ़्तार धीमी पड़ गई। दर्जनों प्रमुख फिल्मों में से कुछ फ़िल्में जिनके लिए एल पी ने संगीत दिया: *दो रास्ते, जीवन मृत्यु, हाथी मेरे साथी, हमजोली, मेरा गांव मेरा देश, जिगरी दोस्त, शोर, रोटी कपड़ा और मकान, आन मिलो सजना, दाग, बॉबी, लोफ़र, खिलोना, रोटी, सत्यम शिवम सुंदरम, अमर अकबर एंथोनी, सुहाग, कर्ज़, क्रांति, प्रेम रोग, एक दूजे के लिए, उत्सव, आखिरी रास्ता, नगीना, तेज़ाब, राम लखन, चालबाज़, मिस्टर इंडिया, सौदागर, खलनायक।*

आम आदमी की पसंद क्या है, एल पी को इसकी जबरदस्त पकड़ थी। वे विभिन्न प्रकार के भारतीय और पश्चिमी वाद्ययंत्रों - ढोलक और तबला, साथ ही वायलिन, गिटार, बोंगो, पियानो, संतूर, सितार और मैंडोलिन बजाने में सिद्धहस्त थे। वे लोक संगीत में और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में पारंगत थे। संगीतकार बनने से पहले, कई शीर्ष संगीतकारों के लिए वादक, अरेंजर और सहायक के रूप में उनका 10 वर्षों का अनुभव अद्वितीय था। फिर उन्हें अद्वितीय गायिका लता का शक्तिशाली समर्थन और सहयोग भी मिला। कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने शास्त्रीय, लोक, कव्वाली, मुजरा, लोरी, भजन, ग़ज़ल, पश्चिमी संगीत सहित - हर शैली में सैकड़ों मधुर गीत अपने संगीत से सजाये हैं।

## एल पी के कुछ प्रसिद्ध नगमे

- *चाहूँगा मैं तुझे सांझ सवेरे* - रफ़ी, *दोस्ती,* 1964। संगीतकार रोशन ने इस फ़िल्म के लिए मना कर दिया था, एल पी ने तुरंत हामी भर दी थी। इसके संगीत ने खूब वाहवाही लूटी, खासकर एक अंधे युवक पर फिल्माया गया यह मर्मस्पर्शी गाना।
- *मेरे मेहबूब क़यामत होगी* - किशोर, *मिस्टर एक्स इन बॉम्बे,* 1964। ग्लानि और अवसाद से भरा यह उत्कृष्ट गीत दिखाता है कि नया नौ दिन और पुराना सौ दिन क्यों है।
- *दिल विल प्यार व्यार* - लता, *शागिर्द,* 1967। एल पी अक्सर लता को शरारती रोमांटिक गाने देते थे, जिन्हें वह बड़े उत्साह के साथ गाती थीं! सायरा बानो-जॉय मुखर्जी की यह शरारत इसका उदाहरण है।
- *अच्छा तो हम चलते हैं* - लता और किशोर, *आन मिलो सजना,* 1970। एक संपूर्ण गीत जो नायक और नायिका के बीच एक रोमांटिक संवाद है - एल पी के नवाचारों में से एक।
- *हम तुम एक कमरे में बंद हो* - लता और शैलेन्द्र सिंह, *बॉबी,* 1973। बंद दरवाजों के पीछे आगोश और आलिंगन, एक शानदार एल पी धुन, और किशोर युवा प्रेमी ऋषि कपूर और डिंपल कपाड़िया सब मिल कर इसे एक यादगार प्रेम गीत गीत बना दिया।
- *माय नेम इज़ अन्थोनी गोंसाल्वेस है* - *अमर अकबर एन्थनी,* 1977। मनमोहन देसाई के अमिताभ बच्चन ने कहा, ''वह दुनिया की सबसे अजीब चीज़ के बारे में सोच सकते थे

*राज कपूर के साथ लक्ष्मीकांत (बाएं) और प्यारेलाल (दाएं)।*

*मजरूह सुल्तानपुरी के साथ।*

और उसे कर के दिखा सकते थे।'' यकीनन इस दिलचस्प पार्टी गीत से सच साबित हुआ, जिसमें अमिताभ प्राचीन गोअन पोशाक पहने एक विशाल ईस्टर अंडे से बाहर निकलते हैं और किशोर की आवाज़ में गाते हैं।

- *काटे नहीं कटते* -किशोर और अलीशा चेनॉय, *मिस्टर इंडिया,* 1987। इसे बॉलीवुड का सबसे सेक्सी गाना बताया गया है। निर्देशक शेखर कपूर ने पूछा, ''एक लड़की के भूत के साथ रोमांस करने से ज्यादा कामुक और क्या हो सकता है।'' कहा गया, इस गाने ने न सिर्फ मिस्टर इंडिया बल्कि इंडिया के हर मिस्टर को पसंद किया था। आवाज, दृश्य और श्रीदेवी ने इसके करिश्मे में इज़ाफ़ा किया था!
- *मन क्यूँ बहका* - लता और आशा, *उत्सव,* 1984। उत्कृष्ट कोटि का फिल्मांकन और गीत, इस शानदार रचना श्रृंगार किये हुए आभूषणों से सुसज्जित दो सुंदरियां, रेखा और अनुराधा पटेल दिखाई देती हैं, जो स्पष्ट रूप से एक-दूसरे की संगति में आनंदित होती हैं। लता और आशा आवाज की पराकाष्ठा हैं। पारखी लोगों का मानना है कि एल पी के कुछ बेहतरीन नगमों में युगल गीत शामिल हैं।
- *मैं तेरी दुश्मन* - लता, नगीना, 1986। *नागिन* स्त्री श्रीदेवी अमरीश पुरी और उसके गुंडों के गिरोह को मात देने के लिए एक सम्मोहक सर्प नृत्य करती है। संगीतकार के रूप में एल पी आकर्षक हैं तो गायिका के रूप में लता मंत्रमुग्ध करती हैं। इस गाने को हमेशा श्रीदेवी से जोड़ा जाता है.
- *चोली के पीछे क्या है* - अलका याग्निक और इला अरुण, *खलनायक,* 1993। माधुरी दीक्षित और नीना गुप्ता पर फिल्माए गए इस हाई-वोल्टेज एल पी गाने ने राष्ट्रीय विवाद को जन्म दिया। कारण: इसकी पहली पंक्ति की कथित कामुकता! लेकिन इसने अलका याग्निक और इला अरुण को मशहूर कर दिया था। गाने के लाखों कैसेट बिके थे।

ए आर रहमान ने *चोली के पीछे क्या है* को "1990 के दशक का सबसे महत्वपूर्ण गान" बताया। इसने उनकी ऑस्कर विजेता फिल्म *स्लमडॉग मिल्यनेर* के लिए एक गीत के चयन को प्रभावित किया। "मैंने अपने गाने के लिए उन्हीं गायकों अलका याग्निक और इला अरुण को लिया। यह गाना लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल को समर्पित मेरा गीत था।"

## एल पी के किस्से

एल पी के बारे में बॉलीवुड और संगीत उद्योग में ढेर सारी कहानियां हैं - लक्ष्मीकांत की भलमनसाहत और एक धुन बनाने वाले के रूप में उनकी उत्कृष्ट प्रतिभा; और संगीत के वाद्ययंत्रों और पश्चिमी संगीत के साथ प्यारेलाल का करिश्मा।

नितिन मुकेश ने कहा कि जब उनके पिता की मृत्यु हो गई, तो लक्ष्मीकांत उनसे मिलने आए और हाथ में ₹20,000 रख दिए। ''मैंने कहा नहीं, मुझे गाने चाहिऐं, पैसे नहीं।'' लेकिन लक्ष्मीकांत ने जोर देकर कहा: ''मैं अपने बेटे

*प्यारेलाल, लक्ष्मीकांत, लता मंगेशकर, मोहम्मद रफ़ी और जे ओमप्रकाश।*

**लता ने खुद कहा था कि 100 वाद्यों के ऑर्केस्ट्रा में भी, कोई वाद्य यंत्र या वादक बेसुरा होता, प्यारेलाल तुरंत पकड़ लेते थे।**



*आर डी बर्मन, आनंदजी के साथ लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल।*

टिक्कू की कसम खाता हूं कि जो पैसा मैं तुम्हें दे रहा हूं, वह मुझ पर तुम्हारे पिता का कर्ज है।'' नितिन ने प्यारेलाल के बारे में कहा, ''वह किसी कंप्यूटर से कम नहीं हैं, जीवित बीथोवेन।''

पार्श्व गायिका कविता सुब्रमण्यम ने खुलासा किया कि उनके पति, कुशल वायलिन वादक डॉ एल सुब्रमण्यम ने एक बार प्यारेलाल के साथ पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की जटिलताओं पर घंटों चर्चा की थी। डॉ सुब्रमण्यम ने कविता से कहा, ''यह प्रतिभा यहाँ क्या कर रही है? उसे पश्चिम में होना चाहिए। वहां कोई भी ऐसी सिम्फनी नहीं बना सकता।''

उन्होंने खुलासा किया कि लक्ष्मी-प्यारेलाल का रिश्ता अविश्वसनीय था - कभी-कभी उनके विचार तक एक जैसे होते थे। जब *ख़ुदा गवाह* के लिए वो गाना रिकॉर्ड कर रही थीं, तो लक्ष्मीकांत ने उनसे कहा, 'इस अन्तरे के बाद, तुम्हें एक आलाप गाना चाहिए, मैं प्यारे से कहूंगा।' उसी क्षण, प्यारेलाल अंदर आए और बोले, 'मैंने एक आलाप के बारे में सोचा है जो कविता निभा सकती है।' और मैं देखती रह गई।

लता ने खुद कहा था कि 100 वाद्यों के ऑर्केस्ट्रा में भी, कोई वाद्य यंत्र या वादक बेसुरा होता, प्यारेलाल तुरंत पकड़ लेते थे।

मन्ना डे ने कहा था, ''प्यारेलाल बेटे के बराबर है, लेकिन मैं उससे बहुत कुछ सीख सकता हूं। वह हर एक उपकरण को अंदर और बाहर, अच्छी तरह से जानता है। संगीत के बारे में वह बहुत कुछ जानता है। मुझे लगता है कि वह आज के संगीतकारों के लिए संगीत का एक स्कूल खोल सकते हैं।''

1998 में किडनी की बीमारी के कारण लक्ष्मीकांत का निधन हो गया। प्यारेलाल, जो अब 82 वर्ष के हो चुके हैं, समय-समय पर एकाध टीवी शो में दिखाई दे जाते हैं, जो दर्शकों को बॉलीवुड की सबसे शानदार और सफलतम संगीत जोड़ी की याद ताज़ा कर देते हैं।

Z॥Q: लेखक लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल की जीवनी के लेखक राजीव विजयकर को धन्यवाद देना चाहेंगे।

*लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं*

शब्दों की दुनिया

# अनोखा बंधन

संध्या राव

**काश! सभी शिक्षक सिडनी पोइटर द्वारा निभाए चरित्र की तरह होते: रोशनी की तरह, मार्ग प्रशस्त करते।**

एक फिल्म बनी थी 1967 में, *टू सर विथ लव* जिसमें सिडनी पोइटर ने एक शिक्षक का जबरदस्त किरदार निभाया था जिसका सामना ईस्ट एन्ड ऑफ़ लंदन स्कूल के उद्दंड और उपद्रवी छात्रों से होता है। यह फिल्म ई आर ब्रेथवेट की आत्मकथा पर आधारित उपन्यास पर बनी थी जो 1959 में प्रकाशित हुआ था। वह एक आदर्श शिक्षक था और हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहता था। एक आदर्श शिक्षक अपने बच्चों के लिए दुनिया की खिड़की की तरह होता है, छात्र भले किसी भी उम्र का, कभी भी, कोई भी हो। आमतौर पर लोग अतीत की झरोखों में शिक्षकों की यादें ताज़ा करते हैं, हालाँकि सब लोगों के पास ऐसी सुखद यादें नहीं होती हैं। फिर भी, पूर्व राष्ट्रपति और प्रख्यात विद्वान सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में, 5 सितंबर नियमित रूप से भारत मे शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

शिक्षक दिवस से मात्र दस दिन पहले, यूपी के मुजफ्फर नगर स्थित एक स्कूल में सात साल के एक मुस्लिम बच्चे को, जिसे अभी ढंग से पहाड़ा याद नहीं हुआ था, उसकी शिक्षिका तृप्ता त्यागी ने एक विचित्र सजा दी। उसने उसी की कक्षा के 6-8 साल के सभी बच्चों को लाइन में खड़ा किया और हरेक से उसे जोर से थप्पड़ लगवाए। शिक्षकों द्वारा किये गए दुर्व्यवहार की यह पहली या आखिरी घटना नहीं है, बात सिर्फ इतनी है कि ऐसी कुछ घटनाएं मीडिया में आ जाती हैं। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि शारीरिक दंड अवैध है। हम जानते हैं कि भेदभाव अस्वीकार्य है। फिर भी, ये चीजें होती रहती हैं, ये हमारे लिए शर्म की बात है। इससे भी ज्यादा शर्मनाक है इस टीचर का व्यवहार। छोटे बच्चों को अपनी ही कक्षा के एक साथी के खिलाफ हिंसा में शामिल होने का आदेश दे रही है? शिक्षक उदाहरण से नेतृत्व करते हैं। ये शिक्षिका सिर्फ नफरत महसूस करती है और सिखाती भी यही है। मुझे लगता है कि शिक्षण में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है। शिक्षा का मुख्य संबंध किताबों और पढ़ने से है, बिल्कुल वही जो वर्ल्डवर्ल्ड अपने पाठकों तक पहुंचाने की कोशिश करता है। इसके अलावा, वंचित एवं कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को शिक्षित करने की उनकी प्रतिबद्धता को देखते हुए रोटेरियनों को ये रुचिकर लगेगा।

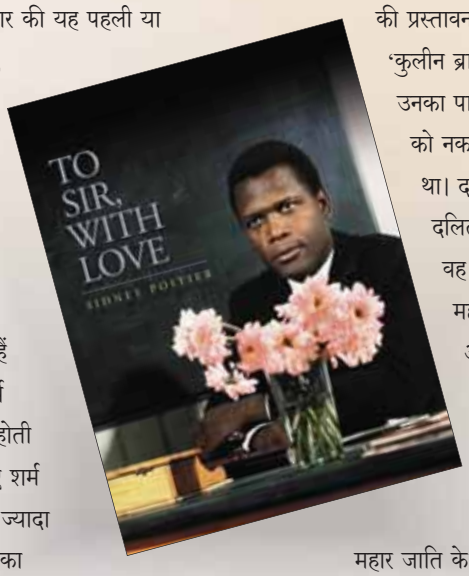


पर इसका किताबों से क्या लेना-देना है? है, बिलकुल है। अलग-अलग लोगों के बारे में पढ़ना हमें दुनिया और यहां के लोगों के बारे में सही जानकारी देने में काफी मददगार होता है। ऐसी ही एक किताब है *बलुता,* जो मूल रूप से मराठी में दया पवार द्वारा लिखी गई है। जेरी पिंटो द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित, 1978 में पहली बार प्रकाशित होने पर इसने सनसनी फैला दी 'न केवल जाति व्यवस्था की व्यापक क्रूरता का सटीक और बेदाग चित्रण है बल्कि दया पवार ने अपने और अपने परिवार, अपने समाज और उनके समय की दलित राजनीति के बारे में भी साफगोई से लिखा था,' ये पुस्तक के पिछले कवर से उद्धृत है।

लेखिका शांता गोखले ने अपनी किताब की प्रस्तावना में लिखा है कि 'कुलीन ब्राह्मण' के रूप में, उनका पालन-पोषण जाति को नकारने के लिए हुआ था। दया पवार महार दलित परिवार से थे. वह कहते है: लमुझे महार होने की सभी अपमानजनक विशिष्टताओं के बारे में मालूम नहीं था। मुझे नहीं पता था कि महार जाति के लोग मृत मवेशियों की खाल उतारते हैं और उनका मांस खाते हैं। मुझे नहीं पता था कि गाँव के स्कूलों की कक्षाओं में महार बच्चों को उच्च जाति के बच्चों से अलग बिठाया जाता था। मुझे नहीं पता था कि उनके छूने से पानी प्रदूषित हो जाएगा और फिर यह ऊंची जातियों के पीने योग्य नहीं रह जाएगा। *बलुता* ने शब्दों के जाल में उलझाए बिना, सीधी, सरल भाषा में मेरे लिए यह दूसरी दुनिया उघाड़ कर रख दी, जिससे बचना नामुमकिन हो गया। (भारतीय होने की वास्तविकता) भारतीय होने के नाते मुझे दया पवार की दुनिया की हकीकत का पता चला और मैं शर्मसार हो गई।'

'...भारतीय होने की वास्तविकता...': यह वह वाक्यांश है जिसे हमारे विवेक और चेतना को झिंझोड़ कर जागृत कर देना चाहिए। इंडिया-दैट-इज़-भारत के उभरने और चमकने की सभी कहानियों में और जी20 बैठक के दौरान राजधानी की साफ़ सफाई में, हमें 'भारतीय होने की वास्तविकता' को याद

रखने की जरूरत है। बलुता शब्द उस प्रथा से निकला है जो महारों को गांव में बंधुआ बनाए रखती थी। उन्हें गाँव की सेवाओं के बदले में उपज का एक हिस्सा मिलता था, जैसे कि गाँवों में अंतिम संस्कार की घोषणा करना, जानवरों के शवों को खींचना, जानवरों की देखभाल करना, त्योहारों और शादियों में सुबह-शाम संगीत बजाना, इत्यादि।

यहां *बलुता* पुस्तक से एक संक्षिप्त प्रकरण,स्कूल से सम्बंधित : 'हमें गांव के मराठा बच्चों के साथ बैठने की अनुमति नहीं थी। वो शिक्षक के सामने मुंह करके बैठते और हम शिक्षक के समकोण, दीवार की ओर मुंह कर के बैठते थे। अगर हमें प्यास लगती तो स्कूल में हमारे लिए पानी नहीं होता था; हमें पानी पीने के लिए वापस महारवाड़ा जाना पड़ता था।' और शिक्षक के बारे में: 'जब वह स्कूल में होते थे, तो हमें यह महसूस नहीं होता था कि वो जाति के आधार पर भेदभाव करते हैं। लेकिन जब हम उनके घर जाते तो सब बदल जाता था। वह ''शुद्ध'' हो जाते थे, शाब्दिक अर्थ में। ... हम उनकी दहलीज पार नहीं कर सकते थे; हमें सीढ़ियों पर ही खड़ा रहना पड़ता था। सामान ऐसे दिया जाता कि एक उंगली भी हमें छू ना जाए। जिस मास्टर को हम स्कूल में जानते थे, वह अपने घर में उस मास्टर जैसा बिलकुल नहीं दिखता था। यह ऐसा था मानो उसकी जाति संबंधी चेतना दरवाजे के पास एक खूंटी पर लटकी हुई हो और वह अपनी इच्छानुसार उसके भीतर या बाहर निकल सकता है।' यह लेखन स्पष्ट है और अत्यंत सरल है, यहां तक कि कभी-कभी मनोरंजक रूप से व्यंग्यात्मक भी है। फिर भी, जब आप पढ़ते हैं, तो आप देखते हैं कि समय बीत जाने के बावजूद कुछ नहीं बदला है, अभी भी वैसा ही है।

ऐसा कभी-कभार होता है और भी किताबें हाथ लगीं, एक संयोग से और दूसरी, मेरे बुक क्लब की पसंद, इस महीने की। पहला बंगलोर शहर के परिवेश में हरिनी नागेंद्र द्वारा लिखा गया एक हल्का फुल्का जासूसी उपन्यास है *द बंगलौर डिटेक्टिव क्लब,* जो अंत तक बांधे रखता है। स्वतंत्रता-पूर्व काल पर आधारित जिसमें एक पारंपरिक युवा महिला जिसकी विशेषता है कि उसे नए नए विचार आते हैं, लीक से हटकर, यह पढ़ने में सहज है, अपनी यात्रा पर साथ ले जाने लायक या मीटिंग से राहत पाने का अच्छा विकल्प है। हाँ, जिस तरह से अध्यायों के शीर्षक दिए हैं, ये एक अतिरिक्त आकर्षण है: साड़ी में तैरना, पुरुष कॉफी बना सकते हैं, गायब होती लाठियाँ, बातचीत पूल के इर्द गिर्द!

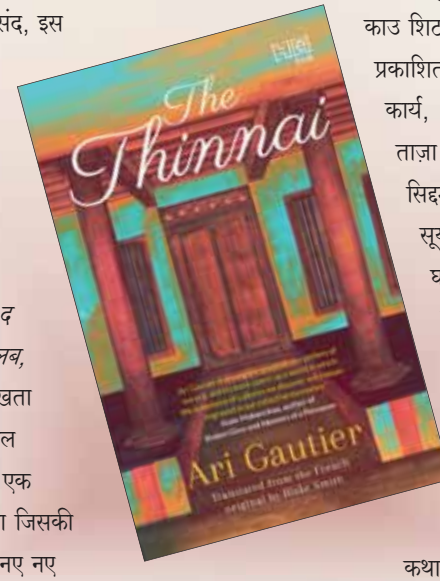


दूसरा पांडिचेरी की याद ताज़ा कर देता है जिसका फ्रान्सीसीकरण हो चुका है। अरी गौटियर लिखित, *द थिन्नई* और जिसका अंग्रेजी अनुवाद ब्लेक स्मिथ ने किया है। तमिल में थिन्नई या बरामदा, वो जगह है जहां, घर के लोग फुर्सत में एक साथ बैठते हैं और आराम करते हैं, दोस्तों और परिवार के लोगों के साथ बातचीत करते हैं। उपन्यास में, एक बूढ़ा फ्रांसीसी व्यक्ति कथावाचक के बरामदे में आता है और एक किस्सा सुनाता है जिसमें कई अजीबोगरीब पात्र हैं और भारत और फ्रांस के औपनिवेशिक संबंधों का इतिहास शामिल है। विभिन्न पात्रों को दिए गए उपनाम - जोसेफ वन-एंड-ए-हाफ-आइज़, एमिल कोझुकट्टई-हेड, जीन-क्लाउड काउ शिट - आपको 1938 में प्रकाशित राजा राव के मौलिक कार्य, *कंथापुरा* की याद ताज़ा करते हैं - पॉकमार्क्ड सिद्दम्मा, पोस्ट-ऑफिस- घर सूर्यनारायण, चार-बीम वाला घर चन्द्रशेखरैया। *कंथापुरा* में प्रचलित जाति व्यवस्था पर अपना ध्यान केंद्रित करते हुए एक छोटे से दक्षिण भारतीय गांव पर गांधीजी के प्रभाव को दर्शाता है। कथावाचक की आवाज में सुनाया गया पतले उपन्यास द *थिन्नई* का छोटा सा अंश भी वहां के परिवेश को जीवंत कर देगा: 'कुरुसुकुप्प' में हमारे घर के आस पास ही बस्ती थी। रास्ते में पट्टक्का की इडली की दुकान थी, कुछ मीटर की दूरी पर ही फव्वारा बना हुआ था और पड़ोस में खेल के मैदान के पास मुख्य सड़क पर केवल एक दुकान थी। दुकान चलाने वाले कारिका भाई पड़ोस में अकेले विदेशी थे। उनका असली नाम अमानुल्लाह था और वह 'लेशियाई-भारतीय थे। लेकिन पड़ोस में हर व्यक्ति की तरह वो भी उपनाम लगाने से ज्यादा देर तक नहीं बच पाए थे।'

मैं ये सोचने पर मजबूर हो जाती हूँ कि यह मात्र संयोग नहीं है कि मुजफ्फरनगर की घटना और ये अजीबोगरीब शीर्षक, ये सभी किसी ना किसी प्रकार से सामाजिक स्थिति, जाति, अतीत, वर्तमान और इतिहास में हमारे स्थान के मुद्दों से जुड़े हुए हैं । यहां तक कि *द बैंगलोर डिटेक्टिव क्लब* भी, आप ढूंढ निकालेंगे।

*स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।*

# तंदुरुस्ती की तलाश

**भरत और शालन सवुर**

पिछले महीने, हमने अच्छे स्वास्थ्य की अवधारणा की चर्चा मौलिक अधिकार के रूप में की। हमारा संविधान हमें विकल्प चुनने की आज़ादी देता है। हालाँकि, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि हमारे शरीर और प्रकृति की अपनी सीमाएँ हैं, हमें इन सीमाओं का उल्लंघन नहीं करनी चाहिए, इसलिए हमें अपनी शारीरिक सीमाओं के प्रति सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अच्छा स्वास्थ्य संयम बरतने और ऐसे विकल्प चुनने के साथ आता है जिससे न केवल हमें बल्कि हमारे परिवारों, कर्मचारियों और अन्य लोगों को भी फायदा हो। इसमें आत्म-अनुशासन और व्यायाम दोनों शामिल हैं, क्योंकि आपकी शारीरिक भलाई, जिसमें प्रतिरक्षा, सहनशक्ति और ताकत शामिल है, आपके जीवन यात्रा और परिस्थितियों के लिए आवश्यक आधार बनाती है।

## सही खाओ, कम खाओ

भोजन बुद्धिमानी से और संयमित करें। संतुलित आहार से शुरुआत करें। आपका पेट आप जैसा सोचते हैं, उससे छोटा है, आवश्यकता से अधिक खाना आपके शरीर को हानि पहुंचाता है, जल्दबाजी न करें, आपके दिमाग को 20 मिनट लगते हैं यह जानने के लिए कि आपका पेट भर चुका है। अपनी क्षुधा और भूख के अंतर को समझें। एक आपकी जरूरत है और दूसरा विलासिता।

प्रतिदिन कम से कम दो लीटर पानी या तरल पदार्थ पीकर हाइड्रेटेड रहें। ये तरल पदार्थ आपके शरीर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और यह हमेशा भरा होना चाहिए। व्यायाम के अलावा शारीरिक गतिविधि में तरल पदार्थों का उपयोग होता है, वसा का नहीं। हमारी खान-पान की आदतें विकसित हो गई हैं, लेकिन हमारे शरीर की प्राकृतिक प्रक्रियाएँ वैसी ही हैं। यहां तक कि डाइटिंग के बावजूद, हम अभी भी अपने पारंपरिक व्यंजनों का सेवन करते हैं, एक उल्लेखनीय बदलाव के साथ - हम अपना भोजन बिना तेल के तैयार करते हैं। भोजन जीवन के सभी पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए स्वस्थ विकल्प चुनना आवश्यक है।

## लचीली तंदुरुस्ती

ध्यान रखें कि 30 साल की उम्र के बाद, हर 10 साल में कोई व्यक्ति अपनी मांसपेशियों का लगभग तीन से आठ प्रतिशत खो देता है। और 60 वर्ष की आयु के बाद मांसपेशियों का क्षय और तेजी से होता है। यह फ्रैक्चर और ऑस्टियोपोरोसिस के लिए आधार तैयार कर सकता है। साथ ही, फेफड़ों और मस्तिष्क की ऑक्सीजन लेने और उसे ऊर्जा में बदलने की क्षमता कम हो जाती है। तो आपके लिए कुछ एरोबिक गतिविधि (पैदल चलना, जॉगिंग, साइकिल चलाना,

## भारतीय पुरुषों के लिए वज़न चार्ट

| Wrist | | Below 13.5 cm | 16.6-17.7 cm | 17.8+ cm |
|---|---|---|---|---|
| Circumference | | (6.5 inches) | (6.5 – 7 inches) | (7+ inches) |
| Height | | Small frame | Medium frame | Large frame |
| Ft. | in. | Kg. | Kg. | Kg. |
| 5 | 5 | 51 | 57 | 63 |
| 5 | 6 | 52 | 59 | 65 |
| 5 | 7 | 54 | 61 | 67 |
| 5 | 8 | 56 | 62 | 69 |
| 5 | 9 | 57 | 64 | 71 |
| 5 | 10 | 59 | 66 | 73 |
| 5 | 11 | 61 | 68 | 75 |
| 6 | 0 | 63 | 70 | 77 |

तैराकी) और कुछ वैज्ञानिक चुनिंदा वजन-प्रशिक्षण करने चाहिए।

मांसपेशियों और कार्डियो-संवहनी प्रणाली से जुड़े व्यायाम कुछ आगामी खतरों से बचाव करते हैं। इसी तरह, यदि आपकी संतुलन सही नहीं है, तो एक पैर खड़े होना, जैसे संतुलन-बढ़ाने वाले व्यायामों को अपनाएं (याद रखें लंगड़ी दौड़ जो आपने बचपन में की थी!?) यदि आप लचीलापन चाहते हैं, तो योग या ताई ची (किसी विशेषज्ञ के साथ) आजमाए। ठीक इसी सन्दर्भ के लिए हम वैज्ञानिक शब्द का प्रयोग करते हैं। उचित मार्गदर्शन के बिना किसी व्यायाम का अनुकरण करना फायदे की बजाय नुकसान अधिक पहुंचाता है। हमें याद है कि बहुत सारे चीनियों को एक साथ पीठ दर्द का सामना करना पड़ा क्योंकि वे बिना किसी विशेषज्ञ के योग करने लगे थे।

### सच्चाई

सच कहूँ तो, वजन ही स्वास्थ्य का सब कुछ नहीं है। इस विषय में हमारी गहरी समझ हमें भारतीय खेल संस्थान, पटियाला की ओर ले गई। यह हमारे शारीरिक स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के लिए हमारा स्वर्णिम आदर्श था और रहेगा। और यह हमारी पुस्तक और कार्यक्रम, 'फिटनेस फॉर लाइफ,' दोनों का मूल आधार है। महत्वपूर्ण आँकड़े साथ में प्रकाशित किए गए हैं।

## भारतीय महिलाओं के लिए वज़न चार्ट

| Wrist | | Below 13.9 cm | 14 -16.4 cm | 16.5+ cm |
|---|---|---|---|---|
| Circumference | | (5.5 inches) | (5.5 – 6.5 inches) | (6.5+inches) |
| Height | | Small frame | Medium frame | Large frame |
| Ft. | in. | Kg. | Kg. | Kg. |
| 5 | | 43 | 48 | 53 |
| 5 | 1 | 44 | 49 | 54 |
| 5 | 2 | 45 | 50 | 56 |
| 5 | 3 | 47 | 52 | 58 |
| 5 | 4 | 48 | 54 | 60 |
| 5 | 5 | 50 | 56 | 62 |
| 5 | 6 | 51 | 58 | 63 |
| 5 | 7 | 53 | 60 | 65 |
| 5 | 8 | 55 | 62 | 67 |

हम पेशेवर एथलीट नहीं हैं और हम अनुमान करते हैं कि आप में से अधिकांश भी नहीं हैं। आपकी सहमति से, आइए तंदुरुस्ती की लक्ष्य रेखा कुछ ऊंचा तय करें, और फिर समझदारीपूर्ण रियायतें और समझौता करें। हमारे लिए, गैर-एथलीटों और 30 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों के लिए अतिरिक्त पांच किलो या उससे अधिक की अनुमति दी जा सकती है। इससे अधिक कुछ भी आपके अच्छे स्वास्थ्य रेखा के नीचे होगा।

एक सर्वेक्षण से पता चला है कि 42 प्रतिशत अमेरिकी मोटापे के शिकार हैं और उनमें से 30.7 प्रतिशत अधिक वजन वाले हैं। हमारे यहाँ, एक अध्ययन से पता चलता है कि हममें से 135 मिलियन भारतीय, का वजन अधिक है। यह एक डरावना विचार है, एक राष्ट्र के लिए, जो पहले से ही दुनिया की पाँच प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है और गिन रहा है... हालांकि दुर्भाग्य से कैलोरी नहीं गिन रहा है।

इसलिए, आकांक्षाओं के साथ स्वस्थ पसीना भी आना चाहिए। जैसे आप ऊपर देखते हैं, वैसे ही नीचे भी देखें। आपकी वजन मापने की मशीन पर, उसे तय करने दें। सचमुच, आपका जीवन संतुलित है। इसे करें।

*लेखक* फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और* फिटनेस फॉर लाइफ *कार्यक्रम के शिक्षक है।*

# मंडल गतिविधियाँ

## रोटरी क्लब मनोरा पट्टुकोट्टई - रो ई मंडल 2981

पट्टुकोट्टई के सरकारी अस्पताल में 40 टीबी रोगियों को ₹25,000 की लागत से पौष्टिक किराने का सामान वितरित किया गया।

## रोटरी क्लब थलाइवासल - रो ई मंडल 2982

थलाइवासल के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में ₹96,000 की लागत से आरओ जल शोधक संयंत्र लगाया गया।

## रोटरी क्लब पिलखुवा सिटी - रो ई मंडल 3012

प्रसव के दौरान एनीमिया से बचाने के लिए गर्भवती महिलाओं को आयरन की खुराक वितरित की गई।

## रोटरी क्लब नागपुर विजन - रो ई मंडल 3030

आर सी प्लास्टो के सी एस आर कोष की मदद से वाटेघाट गांव में दस शौचालय स्थापित किए गए थे। विधायक समीर मेघे ने एक सबमर्सिबल पंप दान किया।

## रोटरी क्लब बड़वानी सिटी - रो ई मंडल 3040

रक्तदान शिविर में 30 से अधिक महिलाओं ने रक्तदान किया। ब्लड बैंक के अधिकारियों को जिला अस्पताल में सम्मानित किया गया।

## रोटरी क्लब कॉस्मोपॉलिटन अहमदाबाद - रो ई मंडल 3055

आंगनवाड़ियों को 75 स्मार्ट टीवीयां दान किए गए। 150 बच्चों को स्कूल बैग और पानी की बोतलें वितरित की गईं।

# मंडल गतिविधियाँ

## रोटरी क्लब सूरत हजीरा बे - रो ई मंडल 3060

अभय प्राथमिक शाला में 100 से अधिक बच्चों को कापियां और स्टेशनरी वितरित की गई।

## रोटरी क्लब बाघापुराना - रो ई मंडल 3090

मवेशियों को इलाज के लिए ले जाने के लिए गौ सेवा अस्पताल को एक एम्बुलेंस (₹4.05 लाख) दान की गई।

## रोटरी क्लब होशियारपुर मिड टाउन - रो ई मंडल 3070

चौन्नी कलां के सरकारी मिडिल स्कूल में 100 से अधिक पौधे लगाए गए और छात्रों को कापियां और पेन वितरित किए गए।

## रोटरी क्लब मुरादाबाद - रो ई मंडल 3100

एक स्वास्थ्य शिविर में 200 से अधिक लड़कियों एवं महिलाओं की कैंसर और अन्य संबंधित बीमारियों के लिए जांच की गई।

## रोटरी क्लब सहारनपुर - रो ई मंडल 3080

एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय को पच्चीस दोहरी डेस्क-बेंच दान की गई।

## रोटरी क्लब बिसौली - रो ई मंडल 3110

रोटरी क्लब दिनेश मधु अस्पताल में वृक्षारोपण अभियान चलाया गया।

# मंडल गतिविधियाँ

## रोटरी क्लब जौनपुर - रो ई मंडल 3120

इब्राहिमबाद के गवर्नमेंट कम्पोजिट स्कूल में पौधे लगाए गए।

## रोटरी क्लब गुलबर्ग सनसिटी - रो ई मंडल 3160

शांतिनिकेतन स्कूल के 53 छात्रों को सर्कस देखने के लिए ले जाया गया और उन्हें स्टेशनरी किट और जलपान दिया गया।

## रोटरी क्लब अहमदनगर प्रियदर्शिनी - रो ई मंडल 3132

60 अनाथ लड़कों और पूर्व यौनकर्मियों के बच्चों के एक छात्रावास, स्नेह स्पर्श, में किताबें दान की गईं।

## रोटरी क्लब कारवार - रो ई मंडल 3170

पीआरआईडी अशोक महाजन ने इंफोसिस के साथ एक संयुक्त परियोजना में 20 सरकारी प्राथमिक स्कूलों को कंप्यूटर वितरित किए।

## रोटरी क्लब कल्याण - रो ई मंडल 3142

कल्याण स्थित न्यू हाई स्कूल के 90 छात्रों को स्टेशनरी, स्कूल बैग और पानी की बोतलें वितरित की गईं; बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 35 लोगों को सम्मानित किया गया।

## रोटरी क्लब मैसूर साउथ ईस्ट - रो ई मंडल 3181

डीजी एचआर केशव ने सड़क सुरक्षा पर जागरूकता पैदा करने के लिए मैसूरु से कन्नूर तक तीन दिवसीय मोटरसाइकिल रैली को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया।

# मंडल गतिविधियाँ

## रोटरी क्लब शोरानूर - रो ई मंडल 3201

पलक्काडु जिला कलेक्टर एस चित्रा ने सेंट थेरेसा कन्या हायर सेकेंडरी स्कूल में महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया।

## रोटरी क्लब मूनसिटी तिरुवन्नामलई - रो ई मंडल 3231

मुख्यमंत्री चिकित्सा बीमा योजना की मदद से 11 मशीनों वाले एक डायलिसिस केंद्र (₹1 करोड़ की लगत वाली एक वैश्विक अनुदान परियोजना) में रोजाना 20 मरीजों को मुफ्त इलाज दिया जाता है।

## रोटरी क्लब त्रिकारपुर - मंडल 3204

आईपीडीजी प्रमोद नयनर ने एक क्लिनिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र के लिए जगह के साथ दो मंजिला रोटरी सामुदायिक केंद्र का उद्घाटन किया।

## रोटरी क्लब बर्दवान साउथ - रो ई मंडल 3240

अध्यक्ष सबोर्न कुमार डे के नेतृत्व में सदस्यों ने एक स्कूल में छात्रों की मदद से पौधे लगाए।

## रोटरी क्लब कोल्लम रॉयल सिटी - रो ई मंडल 3211

पीडीजी जॉन डैनियल की उपस्थिति में क्लब अध्यक्ष अलेक्जेंडर सेबेस्टियन की नियुक्ति पर दो महिलाओं को सिलाई मशीनें दान की गईं।

## रोटरी क्लब पटना सिटी सम्राट - रो ई मंडल 3250

तीन महीने के डेंगू विरोधी अभियान के हिस्से के रूप में, पूरे पटना में 12 कीटनाशक स्प्रेयरों को सेवा में लगाया गया।

*वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित*

टीसीए श्रीनिवासा
राघवन

# अधूरी कहानियाँ

दिवाली करीब आने के साथ, मुझे अपनी चीजों की सफाई शुरू करने का आदेश मिल गया। मेरे पास बहुत कम कपड़े, जूते या ऐसी अन्य चीजें हैं। लेकिन मेरे पास किताबें बहुत सारी हैं और वे समतल स्थानों को अव्यवस्थित कर देती हैं। इसलिए जो कुछ भी मुझे लगा कि मैं त्याग सकता हूं, मैंने पड़ोसियों को आमंत्रित किया कि वे आएं और किताबे ले जाएं । सिर्फ दो आये। एक तो पुस्तकों का असली शौक़ीन था और दूसरा 12 साल का बच्चा। हमारी हाउसिंग सोसायटी में लगभग 500 लोग रहते हैं। यह आपको किसी विशेष चीज की तरफ इंगित करता है।

दरअसल, सफाई की शुरुआत तो पांच-छह साल पहले ही हो चुकी थी जब मुझे लगा था कि मेरे पास किताबों के लिए शेल्फ में जगह ख़त्म हो रही थी। इसलिए मैंने उन्हें बांटना शुरू कर दिया। मैंने एक सीधा सा तरीका अपनाया : क्या मैं इन पुस्तकों को दोबारा पढ़ूंगा ? जिनके बारे में लगा कि हाँ मैं पढ़ूंगा, उन्हें अपने पास रख लिया और बाकी दोस्तों में बांट दीं । इस तरह से मुझे लगभग 150 पुस्तकों से, जिनमें ज़्यादातर काल्पनिक कहानियाँ थीं, छुटकारा मिल गया। लेकिन वह भी नाकाफी साबित हुआ क्योंकि मैं नई-नई लाता रहता था। आख़िरकार, मैंने पूरी तरह से निष्ठुर होने का निर्णय किया और लगभग 300 गैर-काल्पनिक और संदर्भ पुस्तकें निकालीं और उन्हें अपने पुराने कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित हिंदू कॉलेज को दान कर दिया। इस साल यह अपनी 125वीं सालगिरह मना रहा है। लेकिन इसके बारे में और अधिक अगले महीने।

इस बीच, एक और सवाल उठता है कि अपनी किताबें देने से ज्यादा तकलीफदेह क्या है? दूसरे शब्दों में कहें तो, जीवन के किस पड़ाव पर कोई व्यक्ति किताबें खरीदना बंद कर देता है? मेरी तरह, अगर आप भी बहुत पढ़ते हैं, तो आप पाएंगे कि यह समस्या कितनी नीरस, थकाउ हो सकती है। मेरी पत्नी और बेटे मुझसे इलेक्ट्रॉनिक स्क्रीन पर पढ़ने के लिए बाध्य करते रहे हैं। मेरी पत्नी ने मेरे लिए एक किंडल भी खरीदा था । लेकिन काफ़ी कोशिशों के बावजूद, मैं स्विच नहीं कर पाया। और तकलीफें यहां खत्म नहीं होतीं।

जब मैं किताबों की छंटाई कर रहा था तो मुझे ऐसी कई किताबें हाथ लगीं जो मैंने आधी या उससे भी कम पढ़ी थीं। जब मैंने अपने मित्रों से इसकी चर्चा की तो उन्होंने कहा कि वे लोग भी शायद ही कभी कोई गैर-काल्पनिक किताब पूरी कर पाते हैं। लेकिन बाद में, जब मैंने इस सन्दर्भ में विचार किया तो मुझे यह एक मजेदार आर्थिक समस्या नज़र आई, यानी, अगर सिर्फ आधी किताब पढ़ने की ही संभावना थी, तो क्या अपनी पूरी ज़िंदगी मैं दोगुना भुगतान करता रहा था? जब मैंने एक अर्थशास्त्री मित्र से इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि इसे अविभाज्यता की समस्या के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए, आप केवल आधे कंटेनर के लिए भुगतान नहीं कर सकते। आप पूर्ण वस्तु के लिए भुगतान करते हैं इसीलिए आयात करने वाले कंटेनर को कई लोगों के साथ साझा करते हैं। यही बात भोजन के बारे में भी सही है। आप पूरी प्लेट का भुगतान करते हैं अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप कितना खाते हैं। सिर्फ इसलिए कि आपके लिए उसकी मात्रा बहुत अधिक है, विक्रेता आपको छूट नहीं देगा। किताबों की भी यही स्थिति है। आप उनका एक भाग नहीं खरीद सकते।

एक समस्या आकार से संबंधित है। यदि मोटी किताबों की अधिक कीमत के वजह ऊंची लागत है, तो मोटी किताबें प्रकाशित ही क्यों करते हैं जिन्हें लोग खरीद ही नहीं सकते या नहीं खरीदेंगे? जब मैंने अपने एक प्रकाशक मित्र से पूछा तो वो बोला कि ऊंची कीमत रखने का सीधा मतलब है थोक और खुदरा विक्रेताओं के लिए अधिक कमीशन।

फिर रद्दी का मसला भी है। लोग रद्दी या बर्बादी की शिकायत तो बहुत करते हैं लेकिन जहां तक बिना पढ़ी किताबों का सवाल है तो कोई शिकायत नहीं करता सिर्फ आधा पिज़्ज़ा खाइये और बाकी छोड़ कर देखें तुरंत कोई ना कोई आपको डांट देगा। लेकिन आधी-अधूरी किताबें? कुछ नहीं होगा। क्यों, किसी को पता ही नहीं चलेगा। यहां इसी से जुड़ा एक विरोधाभास यह है कि लोग बड़ी ख़ुशी से वो किताबें दे देंगे जिन्हें पढ़ने में उन्हें आनंद आया लेकिन वो आधी-अधूरी या पूरी तरह से अपठित किताबें नहीं देंगे, जिन से कोई ज़्यादा आनंद नहीं मिला।

जब मैंने अपनी पत्नी से इस बारे में चर्चा की तो बोली कि कुछ नादानियाँ ऐसी होती हैं, जिनसे इंसान मुहब्बत करने लगता है, जैसे पति। जितना भी चाहें, पर आप उन्हें छोड़ नहीं सकते या किसी और को नहीं दे सकते। खैर यह एक शातिर जवाब था, लेकिन मैंने भी उसे जता दिया कि पुरानी किताबें, पुरानी पत्नियों के विपरीत, हर समय बड़बड़ाती नहीं रहतीं। और अपनी नई किताब पढ़ना शुरू कर दिया। ■

ADVT.

Rotary

CREATE HOPE in the WORLD

# Family First

## " Family comes first – everything else is secondary"

Family First is a bimonthly event that focuses on all the aspects of a healthy life. Rtn. Sivakumar and Rtn. Savithri, the exemplary couple who are the facilitators of these sessions to educate Rotarians on how to sustain a healthy life style, the nuances of parenting, effective time management and maintaining fulfilling interpersonal relationships.

The Family First initiative, with its two fold approach, has not only helped 2000 plus Rotarians to lead a healthy life but also helped bring about familial harmony.

**IDHAYAM**
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

As on
August, 2023
No. of Occurrences
35
No. of Beneficiaries
4500

Lead Speakers

Rotarian Couple
Rtn. Sivakumar
Rtn. Savithri

A Project by
Rotary Club of Virudhunagar
RI Dist-3212

Do you wish to Organize
FAMILY FIRST
for your club members?
We are waiting to
partner with you.

WHATSAPP: 99447 66667

LEKHA ads/Oct 2023/Rotary/2

Registered No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹40
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23
Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month. Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month.

ADVT.